राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-६ नवी मुंबई मार्च २०१७ विक्रमी सं. २०७३/७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३० निःशुल्क

अंतरिक्ष में १०४ सेटेलाइट एक साथ छोड़कर भारत ने रचा इतिहास

श्रीहरिकोटा। अंतरिक्ष में भारत ने नया रिकॉर्ड बना दिया है. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण केंद्र से १५ फरवरी को पीएसएलवी-सी३७ का प्रक्षेपण किया. भारत दुनिया का पहला देश बन गया है जिसने एक साथ १०४ सेटेलाइट लांच किये हैं.

अभी तक रूस के पास सबसे अधिक उपग्रह छोड़ने का रिकॉर्ड था. रूस ने ३७ उपग्रहों को एक साथ प्रक्षेपित किया था. इसरो का अपना रिकॉर्ड २३ सेटेलाइट एक साथ लांच करने का है जो जून २०१५ में किया गया था.

इसरो का विशेष रॉकेट पीएसएलवी १०४ सेटेलाइट लेकर उड़ा. इसमें १०१ विदेशी सेटेलाइट थे. इनमें भारत और अमेरिका के अलावा इजरायल, हॉलैंड, यूएई, स्विट्जरलैंड और कजाकिस्तान के छोटे आकार के सेटेलाइट शामिल हैं. इस मिशन में मुख्य उपग्रह ७१४ किलोग्राम का रहा. कार्टोसैट-२ सीरीज उपग्रह है जो इसी सीरीज के पहले प्रक्षेपित अन्य उपग्रहों की तरह ही है. इसके अलावा इसरो के दो और १०१ विदेशी अति सूक्ष्म (नैनो) उपग्रहों का भी प्रक्षेपण किया गया. ये कुल मिलाकर ६६४ किलोग्राम के हैं.

विदेशी उपग्रहों में ९६ अमेरिका के तथा इजरायल, कजाखिस्तान, नीदरलैंड, स्विटजरलैंड और संयुक्त अरब अमीरात के एक-एक हैं. इसरो के इस मिशन में सैन फ्रांसिस्को की एक कंपनी के ८८ छोटे सैटेलाइट लांच किये गये.

भारत की ओर से विकसित ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान इसरो का सबसे विश्वस्त रॉकेट है. पीएसएलवी-सी ३७ इस श्रेणी के रॉकेट का ३९वां मिशन है. इसरो के चेयरमैन एएस किरण कुमार ने बताया कि एक उपग्रह का वजन ७३० किलो का है, जबकि बाकी के दो का वजन १९-१९ किलो है.

कार्टोसेट-२ सीरीज का उपग्रह धरती की निगरानी के काम में आएगा. इसके अलावा दो नैनो उपग्रह आईएनएस-१ए और आईएनएस-१बी को भी कक्षा में स्थापित किया. मिशन पर भेजे गए ८८ छोटे सैटेलाइटों का उपयोग धरती की तस्वीरों के लिए किया जाएगा.

इसरो ने इस मिशन में सबसे भारी पीएसएलवी का उपयोग किया है. पीएसएलवी-३७ का वजन ३२० टन, ऊंचाई ४४.४ मीटर है. इसरो का यह रॉकेट १५ मंजिला इमारत जितना ऊंचा है. ■

प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात - आंदोलन बनेगा डिजिटल भुगतान

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल लेनदेन में तेजी से हो रही बढ़ोतरी पर संतोष जताते हुए कहा कि इससे भ्रष्टाचार पर नकेल कसने में मदद मिलेगी। आकाशवाणी पर प्रसारित 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने रिकार्ड तोड़ अन्न उत्पादन के लिए भी किसानों को बधाई दी। बेटियों के प्रति सोच बदलने पर खुशी जाहिर की। स्वच्छता और शौचालय को लेकर अवरोध तोड़ने का आह्वान करते हुए एक आईएएस अधिकारी द्वारा टायलेट साफ करने की प्रशंसा की।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने बैलिस्टिक इंटरसेप्टर मिसाइल के सफल परीक्षण और इसरो की ओर से मेगा मिशन के तहत एक साथ विभिन्न देशों के १०४ सैटेलाइट अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किए जाने की भी चर्चा की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि डिजिटल ट्रांजेक्शन से भ्रष्टाचार को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। उन्हें खुशी है कि देश में डिजिटल ट्रांजेक्शन का चलन बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने १४ अप्रैल को भीमराव अंबेडकर के जन्म दिवस पर सौ लोगों को भीम एप का उपयोग सिखाने का आह्वान किया।

मोदी जी ने किसानों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अन्नदाताओं ने देश की अपील को स्वीकार करते हुए रिकार्ड तोड़ अन्न का उत्पादन किया। इस साल २७०० लाख टन से ज्यादा खाद्यान्न पैदा हुए। उन्होंने किसानों को दालों की खेती करने की भी सलाह दी।

कार्यक्रम में उन्होंने बेटियों के प्रति सोच बदलने पर गहरा संतोष जताया। उन्होंने कहा कि बेटी के जन्म पर उत्सव का समाचार मिलना उन्हें खुशी देता है। महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। बेटी बचाओ अभियान ने जनांदोलन का रूप ले लिया है। तमिलनाडु में बाल विवाह में कमी आई है।

उन्होंने कहा कि इस दौरान रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में देश को दुनिया में गौरव हासिल हुआ है। भारत ने रक्षा के क्षेत्र में बैलिस्टिक इंटरसेप्टर मिसाइल का सफल परीक्षण किया है। इस मिसाइल से सैकड़ों किमी दूर से भी दुश्मन के मिसाइल को नष्ट किया जा सकेगा। इसी प्रकार इसरो ने एक साथ १०४ सैटेलाइट का सफल प्रक्षेपण कर नया इतिहास रच दिया है। ■

दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-कोलकाता के बीच चलेगी हाईस्पीड ट्रेन

नई दिल्ली। दिल्ली मुंबई और दिल्ली से कोलकाता हेतु रेलवे ओवरनाईट रेल सेवा प्रारंभ करने के लिए जुट गया है। दरअसल इस मार्ग पर रेल सेवा को १६० किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चलाना होगा। यह पूरा प्रोजेक्ट २०१९ तक पूर्ण किया जाएगा। ऐसे में रेल भवन, नईदिल्ली में रेलवे बोर्ड के अधिकारियों ने उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की। इस बैठक में ट्रेक के सुधार को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया। ■

(शेष पृष्ठ २८ पर)

तीन तलाक पर ५ जजों की संविधान पीठ करेगी सुनवाई

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि तीन तलाक के मुद्दे को लेकर दायर की गई याचिकाओं पर सुनवाई पांच जजों की संविधान पीठ मई के महीने में करेगी। कोर्ट ने कहा कि अदालत तीन तलाक के सभी पहलुओं पर विचार करेगी। अदालत ने जोर देकर कहा कि यह मसला बहुत गंभीर है और इसे टाला नहीं जा सकता। सुनवाई के दौरान तीन तलाक को लेकर केंद्र सरकार ने कोर्ट के सामने कुछ सवाल रखे। केंद्र के अलावा कुछ और पक्षों के भी सवाल आए, जिस पर कोर्ट ने सभी संबधित पक्षों से कहा है कि वे ३० मार्च तक लिखित में अपनी बात अटॉर्नी जनरल के पास जमा करा दें।सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस जगदीश सिंह खेहर ने कहा इस मामले में सिर्फ कानूनी पहलुओं पर ही सुनवाई होगी। सभी पक्षों के एक-एक शब्द पर अदालत गौर करेगी। उन्होंने कहा कि अदालत कानून से अलग नहीं जा सकती। ११ मई से गर्मियों की छुट्टियों में मामले पर सुनवाई शुरू होगी। उसके पहले अदालत ३० मार्च को तीन तलाक, हलाला और बहुविवाह प्रथा के संबंध में विचार के लिए मुद्दे तय करेगी। गुरुवार को केंद्र सरकार की ओर से इस मसले पर ये ४ सवाल रखे गए रू

१. धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के अन्तर्गत तीन तलाक, हलाला और बहु-विवाह की अनुमति संविधान के अनुसार दी जा सकती है या नहीं ?

२. समानता का अधिकार और गरिमा के साथ जीने का अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में प्राथमिकता किसको दी जाए?

३. पर्सनल लॉ को संविधान के अनुच्छेद १३ के अन्तर्गत कानून माना जाएगा या नहीं?

४. क्या तीन तलाक, निकाह, हलाला और बहु-विवाह उन अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अनुसार सही है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं?

केंद्र सरकार के अलावा भी मामले से संबंधित कुछ पक्षों ने अपने सवाल रखे, लेकिन ये सभी सवाल फिर से फ्रेम किए जाएंगे क्योंकि कोर्ट ने कहा है कि सभी पक्ष अपने-अपने सवाल ३० मार्च तक अटॉर्नी जनरल को दे दें। उसके बाद अदालत तय करेगी कि किन मुद्दों पर विचार किया जाए।

पीठ ने कहा कि ये सभी संवैधानिक मुद्दों से संबंधित हैं और संविधान पीठ को ही इनकी सुनवाई करनी चाहिए। पीठ ने संबंधित पक्षों को अगली सुनवाई की तारीख पर अपना पक्ष पेश करने का निर्देश दिया। जब एक महिला वकील ने शाहबानो प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जिक्र किया तब पीठ ने कहा, 'किसी भी मामले के हमेशा दो पक्ष होते हैं। हम ४० सालों से मामलों में फैसला करते रहे हैं। हमें कानून के अनुसार जाना होगा, हम कानून से परे नहीं जायेंगे।'

सुनवाई के बाद कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने इस पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, 'यह संविधान से जुड़ा मामला है। हम आस्था का आदर करते हैं, पर ऐसी प्रथाएं आस्था नहीं हो सकतीं। इसे २० मुस्लिम देशों में पहले ही प्रतिबंधित किया जा चुका है।' ■

घाटी में सेना ने छोड़ी लाठी, बंदूक से मिलेगा जवाब

नई दिल्ली। घाटी में आतंकवादियों के खिलाफ सेना के अभियान के दौरान पत्थरबाजी करने वालों से सेना ने सख्ती से निबटने का फैसला किया है। सेना अब पत्थरबाजों से निबटने के लिए सेना ने लाठी छोड़ बंदूक अपना लिया है। पिछले दिनों आर्मीचीफ ने कहा था कि सेना के अभियान के दौरान पत्थरबाजी करने वालों को देशद्रोही समझ कार्रवाई की जाएगी। पिछले दिनों कुलगाम और बांदीपोरा में सेना की कार्रवाई के दौरान स्थानीय लोगों ने पत्थरबाजी की थी जिससे कई आतंकवादी भागने में कामयाब हो गए थे।

इन अभियानों में सेना के कई बड़े अधिकारी भी शहीद हो गए थे। इसके बाद ही आर्मी चीफ बिपिन रावत का बयान आया था और सेना ने पत्थरबाजों से सख्ती से निबटने का फैसला किया।

कुलगाम, बांदीपुरा आदि में आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन के समय स्थानीय लोगों ने सेना पर पत्थरबाजी करते हुए बाधा डाली थी। इसके चलते कई आतंकी फरार होने में सफल हो गए थे। जवानों की मौत पर सेना प्रमुख रावत ने कहा था कि अब आतंकियों के समर्थन में पत्थरबाजी करने वालों को भी देशद्रोही माना जाएगा और उनसे सख्ती से निपटा जाएगा।

बीजेपी के वरिष्ठ नेता यशवंत सिन्हा के नेतृत्व में 'कंसर्न्ड सिटिजन' समूह ने घाटी में खूनखराबा खत्म करने के लिए जम्मू-कश्मीर के सभी पक्षों से जल्द बातचीत का आह्वान किया। ■

कार्टून

चुनावी गठबंधन -- मनोज कुरील

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. हमारा राष्ट्रीय चिह्न कहाँ से लिया गया है?
२. ग्राण्ड ट्रंक सड़क की योजना किसने बनाई थी?
३. होली कब मनाई जाती है?
४. कर्क रेखा को दो बार पार करने वाली नदी कौनसी है?
५ 'अग्नि की उड़ान' पुस्तक के लेखक कौन है?
६. पोलियो की रोकथाम के लिए पहली प्रभावी वैक्सीन किसने बनाई थी?
७. पुरातत्व के लिए महत्वपूर्ण 'धूलकोट' नामक स्थान कहाँ स्थित है?
८. वनडे क्रिकेट में एक पारी में सर्वाधिक रन बनाने वाले क्रिकेटर हैं?
९. माउंट आबू किस पर्वत श्रृंखला में है?
१०. ब्रह्माजी का मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर-

१. सारनाथ स्थित अशोक स्तम्भ से; २. शेरशाह सूरी; ३. फाल्गुन पूर्णिमा; ४. माही नदी; ५. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम; ६. जोनस ई. शाल्क; ७. उदयपुर; ८. रोहित शर्मा; ९. अरावली; १०. पुष्कर।

सुभाषित

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते।
जन्म जन्मानि मर्त्येषु मरणं तस्य केवलम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये मनुष्य जीवन के चार फल हैं। यदि इनमें से एक भी प्राप्त नहीं हुआ, तो सारा जीवन व्यर्थ ही गया। ऐसे व्यक्ति जीवित रहें या मर जायें दोनों अवस्थाओं को समान समझिए।

पद्यार्थ- धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष ये मानव जीवन के फल हैं।
जिनको इनमें न मिला कुछ भी मनुज नहीं मानव मल हैं।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और देशद्रोह

इसमें कोई संदेह नहीं कि किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बहुत महत्वपूर्ण होती है और यह सभी नागरिकों के मौलिक अधिकारों में सम्मिलित है। परन्तु जब इस अधिकार का दुरुपयोग आतंकवादियों के समर्थन और देशद्रोहितापूर्ण कार्यवाहियों को सही ठहराने में किया जाता है, तो सोचने को बाध्य होना ही पड़ता है। दुर्भाग्य से आजकल हमारे देश में यही हो रहा है।

इस समय देशविरोधी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है नई दिल्ली का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जो जेएनयू के नाम से विख्यात है। यह एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसका सारा खर्च, जो अरबों रुपये प्रतिवर्ष होता है, केन्द्र सरकार उठाती है। यों तो यह विवि प्रारम्भ से ही वामपंथियों का गढ़ रहा है और यहाँ के छात्रों ही नहीं अध्यापकों में भी वामपंथी विचारधारा वालों की बड़ी संख्या है। वे प्रतिवर्ष अधिक से अधिक वामपंथी छात्रों को प्रवेश देते हैं जिससे उनकी राजनीति चलती रहती है।

इस विवि में प्रवेश पाने वाले छात्रों में जम्मू-कश्मीर के छात्रों की भी बड़ी संख्या होती है, जो विभिन्न कोर्सों में पढ़ते हैं या पढ़ने का दिखावा करते हैं। यहाँ पर छात्रावासों में रहना लगभग निःशुल्क होता है और खाने-पीने का खर्च भी बहुत कम है, जिसके लिए अधिकतर छात्रों को शोधवृत्ति और अध्येतावृत्ति के नाम पर भारी आर्थिक सहायता दी जाती है। यही कारण है कि आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त रहकर यहाँ के छात्र लम्बे समय तक छात्र ही बने रहते हैं और अनेक प्रकार की राजनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहते हैं।

स्वाभाविक है कि ऐसे विवि के छात्रसंघ में भी वामपंथियों का दबदबा रहता है। वर्तमान छात्रसंघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार भी एक वामपंथी संगठन आईसा से जुड़ा हुआ है। छात्रसंघ समय-समय पर देश के प्रमुख विचारकों को अपने विचार प्रकट करने के लिए आमंत्रित करता है, जो उचित भी है। लेकिन आपत्तिजनक यह है कि कई बार इस विवि में देश के घोषित शत्रुओं जैसे आतंकवादी सरगनाओं के समर्थकों को भी आमंत्रित कर लिया जाता है। इसी का फायदा उठाकर इस विवि में आतंकवादी अफज़ल की फाँसी का विरोध करते हुए देशविरोधी नारे लगाये गये और देश के टुकड़े-टुकड़े करने की कसमें खायी गयीं।

कोई भी लोकतांत्रिक सरकार ऐसी गतिविधियों को सहन नहीं कर सकती। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देशद्रोहितापूर्ण कार्यवाहियों के लिए नहीं होती। देशविरोधी कोई भी कार्य करने वालों के लिए संविधान में उचित दंड का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त विरोधी विचारधारा के छात्रों को भी पूरा अधिकार है कि वे देशद्रोही गतिविधियों का विरोध करें और देशद्रोहितापूर्ण कार्यवाही करने वालों को उचित दंड दिलवायें। हालांकि लोकतांत्रिक विरोध में हिंसा का कोई स्थान नहीं है, लेकिन जब सीधी उँगली से घी न निकल रहा हो, तो उँगली को टेढ़ी करना ही पड़ता है।

अब समय आ गया है कि देशविरोधी तत्व अपनी गतिविधियों पर लगाम लगायें, अन्यथा उनका दंड भुगतने को तैयार रहें।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

अत्यंत सुन्दर और सारगर्भित अंक है सर। गजल प्रकाशित करने हेतु सादर आभार। **- नवीन मणि त्रिपाठी**

बेहद खूबसूरत अंक, मेरी कविता और क्षणिका को स्थान देने हेतु हार्दिक आभार। **- अमित कुमार अम्बष्ट**

सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। **- प्रदीप कुमार तिवारी**

पत्रिका का फरवरी अंक उच्चस्तरीय व मनभावन लगा। सभी विधाओं की श्रेष्ठ रचनाओं के चयन में किया गया अथक परिश्रम साफ झलकता है। **- लीला तिवानी**

धन्यवाद विजय जी। आपकी मेहनत और साहित्य के प्रति समर्पण को नमन। **- पूनम माटिया**

सभी लेखकों और साथ ही 'जय विजय' परिवार का भी अभिनन्दन, जिन्होंने लिखने की चाह रखने वालों को एक अच्छा मंच दिया। **- प्रतिभा देशमुख**

हमेशा की तरह शानदार मनभावन सामग्री से भरपूर 'जय विजय' का फरवरी का अंक प्राप्त हुआ. मेरी रचनाएँ और पुस्तक परिचय शामिल करने के लिए दिली आभार। **- कल्पना रामानी**

फरवरी माह का अंक बेहद रोचक और लाजवाब है। आपके सराहनीय प्रयास के लिए साधुवाद! **- के एम् भाई**

आदरणीय! बहुत ही सुंदर संस्करण है। हार्दिक बधाई! **- नीरज अवस्थी**

बहुत अच्छा लगा आपकी पत्रिका पढ़कर। काफी अच्छा मैटेरियल दिया है आपने। धन्यवाद! **- नीरू श्रीवास्तव**

सबसे पहले मैं आपको और आपकी टीम को हर माह इतनी सुन्दर पत्रिका निकालने के लिए साधुवाद देता हूँ, जो बहुत सूचनाप्रद, प्रेरक और जीवन के सभी क्षेत्रों को कवर करती है। प्रभु से मैं आपके लिए स्वास्थ्य, समृद्धि और समाज की सेवा करने के लिए विजन की प्रार्थना करता हूँ। **- प्रणब कुमार गोस्वामी**

सुंदर व उपयोगी सामग्री प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद। **- डॉ स्वामी नाथ मिश्रा**

बहुत-बहुत धन्यवाद सर! हम विद्यार्थियों को मंच उपलब्ध कराने के लिए दिल की गहराइयों से धन्यवाद! **- शिवम् शर्मा**

इस अंक के लिए धन्यवाद। **- अरुण निषाद, शशांक मिश्र भारती, रविन्द्र मिश्र, मनोज ओम कृष्ण, उपानन्द ब्रह्मचारी**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

धर्म पालन की वस्तु है

भरत मल्होत्रा

वर्तमान में धर्म की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हमने चर्या के विषय को चर्चा के विषय में रूपांतरित कर दिया है। आज धर्म की बातें इतनी हो रही हैं जितनी शायद सतयुग में भी नहीं होती होंगी। प्रतिदिन असंख्य प्रवचन, असंख्य कथाएँ, भजन- कीर्तन हो रहे हैं। धर्मस्थलों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही रही है परंतु किसी के जीवन में शांति नहीं है।

इसका एकमात्र कारण है कि धर्म की केवल चर्चा हो रही है, मनुष्य की चर्या से धर्म विलुप्त होता जा रहा है। हमारे शास्त्रों ने धर्म को नितांत निजी बताया है। धर्मकार्य जितना एकांत में हो, प्रचाररहित हो उतना ही फलदायी होता है। इसके विपरीत हमने आज धर्म को भी प्रदर्शन की वस्तु बना दिया है। जैसे कोई व्यक्ति अपने ऐश्वर्य का प्रदर्शन करता है ऐसे ही कोई अन्य व्यक्ति अपने धार्मिक कार्यों का यदि प्रदर्शन करने लग जाए तो दोनों में कोई अंतर नहीं रह जाता। ऐसे कृत्यों का कोई लाभ नहीं होता।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

राम चुनावी मुद्दा नहीं हमारे आराध्य हैं

पंकज 'प्रखर'

राम चुनावी मुद्दा नहीं, बल्कि हमारे आराध्य होने के साथ-साथ हमारे गौरव का प्रतीक भी हैं। यह देश जो राम के आदर्शों का साक्षी रहा है, यह अयोध्या जहां राम ने अपने जीवन आदर्शों के लिए न केवल कष्ट सहे बल्कि मनुष्यत्व के श्रेष्ठ गुणों को उसके चरम तक पहुँचाया, वह राम आज केवल एक चुनावी मुद्दा है जिसे नेता अपनी इच्छानुसार तोडते-मरोड़ते हुए अपने मतलब सिद्ध करने में लगे हुए हैं। राम की मर्यादाओं और आदर्शों का दम भरने वाले सारे नेता सिर्फ ये सोच रहे हैं कि कैसे राम की कसम खा-खाकर राम मंदिर का लोभ दिखाकर लोगों को बरगलाया जाए और राम को मुद्दा बनाकर कैसे अपना उल्लू सीधा किया जाए।

राम मंदिर निर्माण के मूल प्रश्न को छोड़कर लोगों को राम के म्यूजियम से बहलाने की चेष्टा की जा रही है। हमारे रावणरूपी नेता राम की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर लोगों की श्रद्धारूपी सीता का हरण करने में लगे हुए हैं। लेकिन ये लोग भूल गये हैं कि सीता का हरण तो रावण ने कर लिया था लेकिन कभी उसका वरण नहीं कर पाया था। इसी प्रकार ये नेता कितना भी राम के नाम पर चीख लें, नारेबाजी कर लें, भारत का हिन्दू तब तक संतुष्ट नहीं होगा, जब तक कि राम मंदिर का निर्माण शुरू नहीं हो जाता।

भारत का एक बड़ा कवि जब भी उसे अवसर मिलता है दो लाईन कहता है कि 'राम लला है टाट में, और पट्ठे सारे ठाट में'। वर्तमान में राजनीतिक दल ये पंक्तियाँ चरितार्थ करते नजर आ रहे हैं सरकार अन्य समुदायों के लिए कितनी भी तुष्टिकरण की राजनीति कर ले लेकिन हिन्दू वोट के अभाव में सरकार बन ही नहीं सकती। कहा जाता था कि जब कोर्ट का फैसला आएगा, तब राम मंदिर का निर्माण होगा। कोर्ट का फैसला आये एक अरसा हो गया, लेकिन मंदिर निर्माण अभी तक खटाई में है। यही फैसला अगर मुस्लिम समुदाय के पक्ष में आता तो तथाकथित सेक्युलर मुँह धोकर समर्थन में आ जाते। हमारे देश के साधु संत जब भी इस मुद्दे को उठाने या लोगों को जगाने के लिए प्रयत्न करते हैं तो उनका विरोध होता है, चैनलों पर बड़ी बहस होती है। जब यह मुद्दा नेताओं की कुर्सियां हिलाने की तैयारी में होता है तो हिन्दू संतों पर आक्षेप लगाकर जनमानस को दूसरी दिशा की और मोड़ दिया जाता है। कब तक हिन्दू धर्म यह अन्याय सहन करेगा?

बड़े दुःख का विषय है कि जिन लोगों पर भरोसा करके उन्हें देश की सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठाया उन्होंने भी हमारे साथ न्याय नहीं किया। हम धोखे खाये हुए प्राणी हैं। तब तक किसी भी सरकार पर विश्वास नहीं कर सकते, जब तक कि वह व्यक्ति या सरकार राम मंदिर का निर्माण शुरू नहीं करवा दे। इस बार तो इस मुद्दे को रखा ही नहीं गया है सिर्फ म्यूजियम की लोली पॉप पकड़ा दी है। ऐसा क्यों जब कोर्ट द्वारा ने यह मान लिया गया है कि वहां बाबरी मसजिद नहीं, बल्कि राम मंदिर था तो उसका निर्माण शुरू क्यों नहीं हो रहा है? अब किस विवाद का इंतजार कर रही है सरकार।

सरकार इस बात को निश्चित रूप से मान ले कि ये देश उन ८० प्रतिशत हिन्दुओं का है जिनके आदर्श श्री राम हैं। जब तक हिन्दुओं में सहनशक्ति है तब तक ही राम मंदिर नहीं बन रहा है, जिस दिन इस देश के हिन्दुओं ने मुट्ठी कस ली उस दिन अपनी वर्षों पुरानी बड़ी-बड़ी पार्टियों का दावा करने वालों को भागने के लिए कोई भी मार्ग नहीं बचेगा क्योंकि यह निश्चित है कि राम मंदिर का निर्माण तो होगा ही। सरकार या कोई व्यक्ति विशेष चाहे राम को राजनैतिक मुद्दा बनाने की धृष्टता कर ले लेकिन ये ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। अभी तक हिन्दू धर्म पर हो रहे अत्याचारों को हिन्दू ने सहन करके अपनी सहनशीलता का प्रदर्शन किया है यह हिन्दुओं की नपुंसकता नहीं बल्कि उनका क्षमाशील स्वभाव है, लेकिन यह जान लेना भी बहुत आवश्यक है की जब क्रांति होने वाली होती है तो उससे पहले शांति का वातावरण कुछ क्षणों के लिए निर्मित होता है उसे ही सत्य मान लेना मूर्खता है।

हिंदुत्व की ये शांति क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने की ओर बढ़ रही है। आये दिन हमारे हिन्दू धर्म के ऊपर आक्षेप करना, हमारे धर्म गुरुओं का निरादर करना, कहानियाँ बनाकर धर्म को नीचा दिखाने वाली फूहड़ बहस का प्रसारण करना, एके ४७ रखने वाले को १४५ दिन पहले रिहा कर देना, हिरन मारने वाले और सोते हुए लोगों को मौत के घाट उतारने वाले को बाइज्जत छोड़ देना और एक ८० साल के वृद्ध पुरुष को बेल तक नहीं मिलना, ये न्यायपालिका का कैसा दोगला पन है? जिसका समर्थन सुब्रमण्यम स्वामी जैसे बेरिस्टर कर चुके हों, अटल बिहारी वाजपयी और नरेंद्र मोदी जैसे लोगों ने जिसके सम्मान में कसीदे पढ़े हों, ऐसे हिन्दू धर्म के संतों के साथ अन्याय करना अब बंद कर देने में ही बुद्धिमानी है। ऐसा ही जैनेन्द्र सरस्वती और अन्य कई हिन्दू धर्म गुरुओं के साथ हो चुका है।

इतिहास में एक ब्राह्मण हुआ था जिसने ब्राह्मणों का निरादर करने वालों को अनेक बार समूल नष्ट कर दिया था। आज की परिस्थितियाँ भी ऐसी ही बनी हुई हैं जहां हमें ऐसे ही विकराल काल रूप धारण करने वाले हिन्दू युवा संगठनों के मनोभावों का सम्मान करते हुए उनके हिंसक स्वरूप को प्रकट होने से रोकना है। सरकार को हिन्दू युवाओं के रोष को समझने और होश में आने की आवश्यकता है। यदि अभी भी सरकार होश में नहीं आई तो वो दिन दूर नहीं जब देश में हिंसक गतिविधियाँ मुंह फाड़कर उसके समक्ष खड़ी हो जायेंगी। तब ये सरकार क्या अपने ही लोकतंत्र को जेलों में बंद करेगी? यह एक संवेदनशील और गंभीर विषय है जिस पर निर्णायक विचार करके सरकार को कुछ सार्थक कदम उठाने चाहिए। ■

कम खाइए, स्वस्थ रहिए

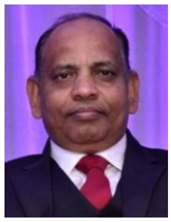

विजय कुमार सिंघल

कहावत है कि भोजन के अभाव में उतने लोग नहीं मरते, जितने भोजन की अधिकता के कारण मर जाते हैं। यह कहावत पूरी तरह सत्य है। भोजन के अभाव में अर्थात् भुखमरी से होने वाली मौतों की संख्या बहुत कम, लगभग शून्य, है। पौष्टिक भोजन के अभाव में अर्थात् कुपोषण से होने वाली बीमारियों से मरने वालों की संख्या भी कम है, लेकिन अधिक खाकर बीमार पड़कर मरने वालों की संख्या सबसे अधिक है। आप किसी भी क्लीनिक या अस्पताल में जाकर देख सकते हैं कि वहाँ दो-तिहाई से अधिक रोगी पेट सम्बंधी बीमारियों से पीड़ित होते हैं, जो भोजन के अभाव में नहीं बल्कि भोजन की अधिकता के कारण बीमार पड़े होते हैं।

इसलिए स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है कि हम जो भी खायें कम मात्रा में ही खायें। इस सम्बंध में गधों में पाये जाने वाले दो गुण बहुत उपयोगी हैं- 'कम खाना और गम खाना'। इन दोनों नियमों का पालन करने वाला सदा सुखी रहता है। लेकिन अधिकतर होता यह है कि स्वाद के वशीभूत होकर हम आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ खा जाते हैं, जिन्हें हमारी पाचन प्रणाली अच्छी तरह पचा नहीं पाती। विभिन्न कारणों से होने वाली दावतों में प्रायः ऐसा देखा जाता है। एक तो वहाँ पचने में भारी-भारी वस्तुओं की भरमार होती है, दूसरे उन्हें भी लोग ठूँस-ठूँसकर खा लेते हैं। इससे पेट में विकार उत्पन्न होते हैं, जो अनेक घातक रोगों के कारण बनते हैं। बहुत से लोग चूरन-चटनी के सहारे उस भोजन को पचाने का प्रयास करते हैं, परन्तु प्रायः असफल रहते हैं।

कई विद्वानों ने सही कहा है कि हम जो खाते हैं, उसके एक तिहाई से हमारा पेट भरता है और दो तिहाई से डाक्टरों का। इसका तात्पर्य यही है कि हमारे जीवन के लिए अल्प मात्रा में भोजन ही पर्याप्त है और उससे अधिक खाने पर विकार ही उत्पन्न होते हैं। उनके इलाज में धन व्यय होता है, जिससे डाक्टरों को अच्छी आय होती है। इसलिए यह बात गाँठ बाँध लीजिए कि कोई वस्तु चाहे कितनी भी स्वादिष्ट क्यों न हो और भले ही मुफ्त क्यों न हो, उतनी ही मात्रा में खानी चाहिए,

(शेष पृष्ठ २६ पर)

ये हैं असली नायिकाएँ

डॉ. नीलम महेन्द्र

फिल्मकार संजय लीला भंसाली का कहना है कि पद्मावती एक काल्पनिक पात्र है। इतिहास की अगर बात की जाए तो राजपूताना इतिहास में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का नाम बहुत ही आदर और मान सम्मान के साथ लिया जाता है। भारतीय इतिहास में कुछ औरतें आज भी वीरता और सतीत्व की मिसाल हैं जैसे सीता द्रौपदी संयोगिता और पद्मिनी। ये चारों नाम केवल हमारी जुबान पर नहीं आते, बल्कि इनका नाम लेते ही जहन में इनके चरित्र जीवंत हो उठते हैं।

रानी पद्मिनी का नाम सुनते ही एक ऐसी खूबसूरत वीर राजपूतानी की तस्वीर दिल में उतर आती है जो चित्तौड़ की आन बान और शान के लिए सोलह हजार राजपूत स्त्रियों के साथ जौहर की ज्वाला में कूद गई थीं। आज भी रानी पद्मिनी और जौहर दोनों एक दूसरे के पर्याय से लगते हैं। इतिहास गवाह है कि जब अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ के महल में प्रवेश किया था तो वो जीतकर भी हार चुका था क्योंकि रानी पद्मिनी को जीवित तो क्या मरने के बाद भी वह हाथ न लगा सका।

लेकिन भंसाली तो रानी पद्मिनी नहीं पद्मावती पर फिल्म बना रहे हैं। बेशक उनके कहे अनुसार वो एक काल्पनिक पात्र हो सकता है लेकिन जिस काल खण्ड को वे अपनी फिल्म में दिखा रहे हैं वह कोई कल्पना नहीं है। जिस चित्तौड़ की वे बात कर रहे हैं वह आज भी इसी नाम से जाना जाता है। जिस राजा रतनसिंह की पत्नी के रूप में रानी पद्मावती की 'काल्पनिक कहानी' वे दिखा रहे हैं वे राजा रतन सिंह कोई कल्पना नहीं, हमारे इतिहास के वीर योद्धा हैं। और अन्तिम बात यह कि जो अलाउद्दीन खिलजी आपकी इस फिल्म में पद्मावती पर फिदा है, उसका नाम भारतीय इतिहास का सबसे काले पन्ने में सबसे क्रूर मुस्लिम शासक के नाम से दर्ज है।

तो सोचने वाली बात यह है कि यह कैसी काल्पनिक कहानी है जिसका केवल 'एक' ही पात्र काल्पनिक है? कोई भी कहानी या तो कल्पना होती है या सत्य घटना पर आधारित होती है। भंसाली शायद भूल रहे हैं कि यदि अतीत की किसी सत्य घटना में किसी कल्पना को जोड़ा जाता है तो इसी को 'तथ्यों को गलत तरीके से पेश करना' या फिर 'इतिहास से छेड़छाड़ करना' कहा जाता है।

चलो मान लिया जाए कि रानी पद्मावती एक काल्पनिक पात्र है लेकिन भंसाली शायद यह भूल गए कि काल्पनिक होने के बावजूद रानी पद्मावति एक भारतीय रानी थी जो किसी भी सूरत में किसी क्रूर मुस्लिम आक्रमणकारी पर मोहित हो ही नहीं सकती थी।

हमारे इतिहास की यह स्त्रियाँ ही हर भारतीय नारी की आइकान हैं। रानी पद्मिनी जैसी रानियाँ किसी पटकथा का पात्र नहीं असली नायिकाएँ हैं, वे किवदन्तियाँ नहीं हैं आज भी हर भारतीय नारी में जीवित हैं। ■

विदेशी गाय अपनाओ, खुद जान (से) जाओ

डा. मनोहर लाल भंडारी

आजादी के काफी पहले तक भारत में ठेठ देशी गाय का दूध ही प्रचलित था। एक घटना से उत्साहित होकर अंग्रेजों ने भैंस पर सब्सिडी देना शुरू किया और भैंस का खूब प्रचार-प्रसार भी शुरू कर दिया। फिर तो गाय दोयम दर्जे की हो गई, वैसे ही जैसे न्यू ईयर के चक्कर में गुड़ी पड़वा हो गयी है।

बात आजादी के काफी पहले की है। किसी विद्वान ने २००३ के आसपास इस घटना का उल्लेख किसी सभा में किया था, फिर उसका पुनरुल्लेख मैंने २००४ में अहिंसक खेती और इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में इंदौर प्रीमियर बैंक में आयोजित एक सेमिनार में मुख्य वक्ता के रूप में किया था। और तभी एक मैग्जीन में भी इसी प्रसंग का जिक्र करते हुए मैंने जैविक आहार और जैविक खेती पर केन्द्रित एक आलेख में किया था।

किस्सा यूं है कि एक बार एक अंग्रेज अधिकारी किसी वाहन में ड्राइवर के साथ जा रहा था, कुछ देर बाद देखा कि बीच रास्ते में भैंस बैठी है, उसे हटाने के लिए ड्राइवर उतरने लगा तो अंगरेज नाराज हुआ और बोला कि हार्न बजाओ हट जायेगी। ड्राइवर ने कहा साहब, वह नहीं हटेगी। खूब हार्न बजाने पर भी नहीं हटने पर उसे उतरकर ही डंडा मारकर हटाना पड़ा। पूछने पर अंगरेज को पता चला कि यह दूध देने वाला जानवर है, परन्तु लोग धार्मिक मान्यता के चलते गाय का दूध, दही, घी आदि ही इस्तेमाल करते हैं।

वह अंग्रेज समझ चुका था कि इस जानवर के दूध से व्यक्ति में आलस्य का अवतार हो सकता है। इसी के चलते गाय की चंचलता के मुकाबले भैंस के आलस्य ने उसे उत्साहित किया और उसने भारतीयों को भैंस के दूध की लत लगाने की ठान ली। छूट के लोभी भारतीय काले दिलों के गोरे अंगरेजों के जाल में फंसते चले गए। अब तो जर्सी गाय यानी आलस्य की महावतार ने पूरे देश को अपने दूध में सराबोर कर लिया है, बाकी का काम (६५ प्रतिशत) मिलावटी दूध के राक्षसों ने संभाल ही रखा है। आपको जानकर हैरानी होगी दुनिया में भारत को छोड़ जर्सी गाय का दूध कोई नहीं पीता।

जर्सी गाय सबसे ज्यादा डेनमार्क, न्यूजीलैंड, आदि देशों में पायी जाती है। डेनमार्क में तो कुल लोगों की आबादी से ज्यादा गाय है। और आपको ये जानकार हैरानी होगी कि डेनमार्क वाले दूध ही नहीं पीते। क्यों नहीं पीते? क्योंकि कैंसर होने की संभावना है, घुटनों का दर्द होना तो आम बात है। मधुमेह (शुगर) होने का बहुत बड़ा कारण है यह जर्सी गाय का दूध। डेनमार्क वाले चाय भी बिना दूध की पीते हैं। डेनमार्क की सरकार तो दूध ज्यादा होने पर समुद्र में फिंकवा देती है। वहाँ एक पंक्ति बहुत प्रचलित है- 'Milk is a white poison!' अर्थात् दूध सफेद विष है। जितने दुर्गुण भैंस में होते हैं वे सब जर्सी गाय मे दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए जर्सी गाय को अपने बच्चों से कोई लगाव नहीं होता और जर्सी गाय अपने बच्चे को कभी पहचानती भी नहीं। कई बार ऐसा होता है कि जर्सी गाय का बच्चा किसी दूसरी जर्सी गाय के साथ चला जाए उसको कोई तकलीफ नहीं होती।

लेकिन जो भारत की देशी गाय है वो अपने बच्चे से इतना प्रेम करती है इतना लगाव रखती है कि अगर उसके बच्चे को किसी ने बुरी नजर से भी देखा तो वो मार डालने के लिए तैयार हो जाती है। देशी गाय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह लाखों की भीड़ में अपने बच्चे को पहचान लेती है और लाखों की भीड़ में वह बच्चा अपनी माँ को पहचान लेता हैं।

कभी आप हिमालय पर्वत की परिक्रमा करें, तो जितनी ऊंचाई तक मनुष्य जा सकता है उतनी ऊंचाई तक आपको देशी गाय देखने को मिलेगी। आप ऋषिकेश, बद्रीनाथ आदि जाएँ, जितनी भी ऊंचाई पर जाएँ, ८०००-६००० फीट तक भी आपको देशी गाय देखने को मिलेगी। लेकिन जर्सी गाय को १० फिट ऊपर भी चढ़ना पड़े, तो तकलीफ आ जाती है।

जर्सी गाय का पूरा का पूरा स्वभाव भैंस जैसा है, बहुत बार ऐसा होता है कि जर्सी गाय सड़क पर बैठ जाती है और पीछे से लोग हार्न बजा-बजाकर पागल हो जाते हैं, लेकिन वह नहीं हटती, क्योंकि हटने के लिए जो आई.क्यू. चाहिए वह उसमें नहीं है।

तो पीते रहिये दूध प्रतिदिन जर्सी गाय का, खत्म हो जाएगा, मां बेटे के वात्सल्य का जायका! ■

क्षणिका

जब देखा मैंने रोती बिलखती माँ को
लुढ़कते आँसू आँखों को
खून बौखला उठा मेरा
आँखें क्रोधित उमड़ती ज्वाला
काश! धम्म उठा पटक दूँ उनको
जो हर रहे चैन, अमन
दे रहे पीड़ा माँ को

-- अशोक बाबू माहौर

गीत उर्दू में लिखें ग़ज़लों को हिन्दी में कहें
काव्य धारायें अदब सागर की जानिब यूँ बहें
टूट जाएगा अकेला सुख बिखर जाएगा चैन
आइए आपस का हर दुख-दर्द मिल-जुलकर सहें
वो वतन हो या कि दिल हरगिज न बँटने दें उसे
दूर नफरत से हमें रखनी हैं रिश्तों की तहें
वार अपनी एकता पे हो रहे हर तरफ से
वक्त का है ये तकाजा एकजुट होकर रहें
'शान्त' मन में इक तमन्ना कल भी थी है आज भी
बूँदो-बारिश से किसी के भी न कच्चे घर ढहें

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

संभल जाए तबियत जो तेरा दीदार हो जाए
तेरे छूने से अच्छा इश्क का बीमार हो जाए
इन तिरछी निगाहों का निशाना तो गजब का है
चले जो तीर तो सीधा जिगर के पार हो जाए
नहीं कुछ काम का रहता ये कहते थे चचा गालिब
राह-ए-इश्क पर जो भी चले बेकार हो जाए
मुहब्बत में हुकूमत दिल की तुमको सौंप दी वर्ना
इश्क जिस पर नजर डाले वही सरकार हो जाए
मेरे लफ्जों को मिल जाए सहारा जो तेरे लब का
महफिल लूट ले ऐसी गजल तैयार हो जाए
दीवाना कह के मुझको हँसने वालो मेरी हालत पे
दुआ करता हूँ तुमको भी किसी से प्यार हो जाए

-- भरत मल्होत्रा

इस जीस्त से निराश हूँ मैं, यार क्या करूँ
कुछ भी तो सूझता है नहीं, प्यार क्या करूँ
ये जीस्त भी अजीब है, इज्जत मिली नहीं
खाया हूँ डांट, चोट, तिरस्कार, क्या करूँ
हर बात दोस्त मानता, जोरू जो बोलती
इस भीरु दोस्त से मैं क्या तकरार करूँ
माँगे बिना मिला नहीं कुछ भी यहाँ कभी
ये प्यार जो तुम्हारा है, इनकार क्या करूँ
है नाव जिंदगी का रही तैरता मगर
कश्ती तो डगमगा रही मँझधार, क्या करूँ
यह तोहफा अनूठा है, थोड़ा डरावना
लड़ना तो जानता नहीं, तलवार क्या करूँ
आना है हमको और यहाँ, रहना नहीं कभी
जग-हाट में दुकान का विस्तार क्या करूँ
खोटी नसीब है मेरी, अब क्या कहूँ तुझे
पाना तुझे तमन्ना थी, उपहार क्या करूँ
जब फर्ज ही नसीब है, अधिकार तो नहीं
यह जिंदगी तुम्हारी है, उपकार क्या करूँ

-- कालीपद 'प्रसाद'

दर्द अगर ना हँसकर गाते
इतनी खुशियाँ कैसे पाते
छूट चुकी थी गाड़ी तो फिर
नाहक क्यों हम दौड़ लगाते
दिल रौशन हो जाता है जब
वो दिख जाता आते-जाते
ख्वाबों से यों रिश्ता अपना-
ख्वाब जगाते ख्वाब सुलाते
महफिल सूनी थी उसके बिन
किसको अपने शेर सुनाते
जो बस उससे ही कहना था
वो दुनिया को क्यों बतलाते
उसने दिल की चोरी की थी
फिर हम क्योंकर शोर मचाते
सोच-समझकर सच बोला था
क्यों घबराते क्यों पछताते

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

करें विश्वास कैसे सब तेरे वादे चुनावी हैं
हकीकत है यही सारे प्रलोभन इश्तहारी हैं
हवा के साथ उड़ने का जरा-सा मिल गया मौका
तो तिनके ये समझ बैठे वही तूफान आँधी हैं
कहाँ है वो हसीं दुनिया गजल जिस पर बनाते हो
बहुत अच्छा कहा बेशक, मगर अशआर बासी हैं
सियासत की वो मंडी है वहाँ भूले से मत जाना
वही चेहरे वहाँ चलते हैं जो कुख्यात दागी हैं
न तुम कहने से बाज आते न हम सुनने से ऐ भाई
पता दोनों को है लेकिन सभी बातें किताबी हैं
जवाँ बच्चे बड़े खुश हैं मिला लैपटाप है जबसे
किताबें छोड़कर पढ़ने लगे सब पोर्नग्राफी हैं
हमें तो रोज अपनापन दिखाकर लूटता है वो
मगर हम क्या करें हम भी तो लुट जाने के आदी हैं

-- डॉ डी.एम. मिश्र

किसकी मानूँ और भला किसको ठुकराऊँ?
कुछ कहने से अच्छा है कि चुप हो जाऊँ
भीड़ भरी दुनिया में, कहीं न खो जाये तू
आ तेरी आँखों में डूब के मैं खो जाऊँ
इक कमजोर के आँसू प्रलय मचा सकते हैं
गम के ठेकेदारों को कैसे समझाऊँ?
देख ! सभ्यता के कपड़े सब तार तार हैं
कहाँ कहाँ शब्दों के मैं पैबन्द लगाऊँ?
कहीं आत्ममंथन में आज भी नींद न आये
अच्छा होगा शान्तचित्त हो मैं सो जाऊँ
हर इक गली, मोड़, चौराहों पर गम ही गम
बता लेखनी! किस किससे तुझको मिलवाऊँ?

-- दिवाकर दत्त त्रिपाठी

कुछ तो बात है आप के आशियाने में
सबको छाप दिये एक ही शामियाने में
इक ही राग है हर मन की एक रागिनी
इक ही तो अलाव है मुराद हथियाने में
अहम चुनाव है अब नया मशवरा देखें
फिर आया मजा उनके घिघियाने में
पूछ लिया हाल तो बीमार हो गए
लग गए अपनी थैली गठियाने में
कुछ तो बोझ हम भी उठाते हैं इनका
कुटिल कराल है शठ सठियाने में

-- महातम मिश्र 'गौतम गोरखपुरी'

हर इक आदमी बहुत से किरदार लिये फिरता है
हर दौलतमंद जेब में अब सरकार लिये फिरता है
सच बोलने वाला शख्स लोगों को बुरा लगता है
झूठा शख्स तारीफों की भरमार लिये फिरता है
कुछ पढ़कर सुनादे वो तो सब गमगीन हो जाएं
वो शख्स हाथ में यारों अखबार लिये फिरता है
किसी ने कहा था उससे कि दौलत बरस जायेगी
अब वो ईमान बेचने का इश्तिहार लिये फिरता है
ये बेरोजगारी देखकर मेरे भीतर से कहता है कोई
कि 'वशिष्ठ' तू तो डिग्रियाँ बेकार लिये फिरता है

-- जी.आर. वशिष्ठ

सांस किसकी है, हवा किसकी है
मर्ज किसका है, दवा किसकी है
कुछ असर आज तुझ पे होगा जरुर
हुस्न किसका है, अदा किसकी है
मुद्दतों तक बेवजह जो काटी है
जुर्म किसका था, सजा किसकी है
गर्द ही गर्द है फिजाओं में
कैसा तूफां था, सबा किसकी है
हर तरफ ढेर से हैं लाशों के
जुल्म किसका है, खता किसकी है
आज जिन्दा सा 'जय' तू लगता है
हौसला किसका है, दुआ किसकी है

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

रूप मैं अपना अक्सर बदलती रही
आप में ही हमेशा मैं ढलती रही
माला बन आपके उर सुसज्जित रहूँ
खुद में ही मैं कुंदन सी गलती रही
पूर्ण हो जाये आराधना आपकी
मैं दीपक की बाती सी जलती रही
सर पटकती हुई लहरों की तरह
मैं पाने को किनारा मचलती रही
आप तक पहुंचना है मेरी कामना
इसलिए ही निरन्तर मैं चलती रही
रक्त रिसकर महावर रंगे पांव को
चलते-चलते स्वयं ही सम्हलती रही

-- किरण सिंह

(तीसरी और अंतिम किस्त)

सीख

नीतू सिंह

'कौन मि सिंह? तुम्हारे डिपार्टमेंट का नया एक्जीक्यूटिव ऑफिसर?'

'हां हां वही।'

'क्या किया उसने?'

'जेल में है।'

मैं उछल पड़ा। 'क्या? क्या कह रहे हो? वह तो बड़ा स्मार्ट बंदा था। इंटरव्यू और रिटन में उसने टॉप किया था और उसकी क्वालिफिकेशन भी तगड़ी थीं। तभी तो इतने लोगों में अकेले उसका सेलेक्शन हुआ।'

'अब किसी के सर्टिफिकेट पर थोड़े लिखा होता है कि वह ऑफिस में भीगी बिल्ली बना रहता है, मगर घर जाकर बीवी को पीटता है।'

'क्या? पर तुम्हें कैसे पता कि वो ऐसा करता है?'

'मुझे नहीं पता होगा तो किसे पता होगा? उसके रस्टिकेशन के लेटर पर मेरे ही तो हस्ताक्षर हुए हैं।'

मैंने हमेशा माना है कि जो जितना ज्यादा होनहार साबित होता है, वो उतना ही अच्छा इंसान भी होता है। वो बहुत सफल था इसलिए मेरे मापदंड के अनुसार वह उतना ही अच्छा इंसान भी होना चाहिए था। मगर मेरे मापदंड की धज्जियां उड़ गईं। मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा।

'नौकरी से निकाल दिया?'

'और नहीं तो क्या? तुम्हें तो पता है यह नियम कि जो एक रात भी जेल में बिता देगा वो गया नौकरी से।'

'ऐसे कैसे हो गया?'

'उसकी पत्नी ने पुलिस में कम्प्लेन की। वो इस पोस्ट पर आने के बाद से उस पर नौकरी छोड़ने का दबाव बना रहा था। कल उसे मार-पीटकर घर से निकाल ही दिया। वह भी पढ़ी-लिखी थी, बोली जा तो रही है, मगर सबक सिखा के जाएगी। अब तक तो सहती रही कि कुछ बिगड़े नहीं, मगर जब उसका इतना सहना काम न आया तो चली गई पुलिस थाने।'

मेरी आँखों के आगे वह खूबसूरत नौजवान घूम गया। उसके टैलेंट की तारीफ सुनकर जितनी बड़ी छवि मैंने मन में बनाई थी, वह उतना ही छोटा हो गया। फिर मैंने अपने दिमाग में उसकी बची-खुची छवि को बचाने के इरादे से एक आखिरी कोशिश की या यों कहें कि अपने ध्वस्त होते मापदंड को बचाने की कोशिश की।

'सच में सह रही थी तो नौकरी छोड़ देती। मामला अपने आप सुलट जाता।'

'ऐसे-कैसे छोड़ देती। जब बिना छोड़े इतना मार-पीट करता था, अपनी चलाता था, तो नौकरी छोड़ने के बाद तो कहीं की नहीं रहती। और ऐसे ही मार-पीट के निकाल देता तो कहाँ जाती? आज कम से कम अपने पैरों पर तो खड़ी है। और सुनो, इस हादसे के बाद तो अपने ऑफिस की लड़कियां भी खुल के सामने आ रही हैं। कह रही हैं उन्हें अब समझ में आ रहा है कि वो खूबसूरत लड़कियों से ज्यादा चिपक-चिपक के बातें क्यों करता था।'

उसकी बची-खुची छवि भी धुआँ हो गई और मेरी एक दकियानूसी सोच भी खत्म हो गई। मगर आज एक नई सीख मिली कि अच्छे इंसान का सफलता से कुछ लेना-देना नहीं होता है।

दास कुर्सी पर झूलता हुआ अपनी चिंता से ग्रस्त था और मैं अपनी सोच में गुम था। लेकिन मैं जब अपनी सोच से बाहर आया तो दास का चिंताग्रस्त चेहरा मुझे कचोटने लगा।

'क्या हुआ यार? तुम किस सोच में डूबे हो? वो सब तो उनके घर की टेंशन है।'

'नहीं यार मैं तो यह सोच रहा था कि फिर से इक्जैम-इंटरव्यू कराना पड़ा, तो कितना खर्चा होगा और फजीहत अलग से होगी। और नए आदमी के ज्वाइन करने तक काम सारे ढीले पड़े रहेंगे।'

'इतना क्यों सोचते हो? अभी एक ही हफ्ता तो हुआ है। क्यों न जिस इंटरव्यू से इसे सेलेक्ट किया था उसकी एक वेटिंग लिस्ट बनाकर आदमी ले लें। कुछ करना नहीं पड़ेगा और काम फटाफट हो जाएगा।'

दास मेरी सूझ-बूझ पर मंत्रमुग्ध हो गया और मुझे ढेरों बार थैंक्स बोलता हुआ चला गया। मैंने भी मन ही मन अपनी पीठ थपथपाई कि मैंने भी कोई तीर मारा।

मैं अपने केबिन से निकला तो ऑफिस की फुसफुसाहट और चहल-पहल कम हो गई थी और झुंड बिखर गए थे। धीरे-धीरे सब लोग काम में लग रहे थे और (बिना किसी जूनियर के मदद के) मुझे भी सारा मामला समझ में आ गया था और मैं भी शांत था।

नई सुबह में वही पुराना ऑफिस था। कहीं से की-बोर्ड की किटर-किटर की आवाज, तो कहीं फाइलों के पन्ने पलटे जाने की धुन। इन मध्यम लयों के बीच कहीं रिकार्ड की अलमारियों की धड़ाम-धड़ाम थी, तो कहीं दराजों को खींचने की क्रीच-क्रीच। इन्हीं आवाजों से गुजरता हुआ मैं अपने केबिन तक पहुँचने ही वाला था कि दास ने रोक लिया।

'थैंक्स यार।'

'सुबह-सुबह किस बात का थैंक्स?'

'तुम्हारे सुझाव से झटपट नया एक्जीक्यूटिव ऑफिसर मिल गया। अब मुझे हुड्डा वाले प्रोजेक्ट पर काम करने में समय नहीं लगेगा।'

मुझे भी आश्चर्य हुआ। मेरी युक्ति नए बंदे को जल्दी लाने में मदद करेगी, मुझे पता था, मगर इतनी जल्दी, एक ही दिन में।

मैं जाने लगा तो दास ने मुझे फिर टोका।

'अरे ठहरो। नए बंदे से मिलते तो जाओ।'

दास ने वहीं से खड़े-खड़े एक नई जूनियर को आवाज दी- 'प्रिया! जरा नीरज को इधर भेजना।'

फिर मुझसे मुखातिब होकर दास ने मुझे बताया कि इस बंदे का नाम वेटिंग लिस्ट में टॉप पर था इसलिए बिना किसी झंझट परेशानी के सीधे इसे ही पिक कर लिया। मुझे मि. सिंह की याद आई। वह बहुत टैलेंटेड था, मगर देखो कैसा निकला। अभी मैं सोच ही रहा था कि मि. सिंह की जगह लेने वाला यह नया बंदा जाने कैसा हो कि सामने से मि. सैनी आते दिखाई दिए।

मि. दास ने हमारा परिचय कराया और मैंने बहुत मुस्कुराते हुए उससे हाथ मिलाया जबकि दास परेशान थे कि मैं भला किसी जूनियर से इतनी खुशमिजाजी से कैसे मिल सकता हूँ। मगर मि. दास क्या जाने कि मैं अपने इस जूनियर से क्या-क्या सीखने वाला हूँ। (समाप्त)

भक्ति में दृढ़ता कैसे हो

प्रतिभा देशमुख

तन और मन दोनों से निर्मलता से की गई उपासना तुरंत फलीभूत होती है। इसीलिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि द्वारा के तन और मन को शुद्ध करने की बात कही गई है। विधि और विधान के द्वारा व्यवस्था अनुशासित होती है। बिना अनुशासन के न तो समाज रह सकता है, न ही धार्मिक कर्म।

आपको भक्ति करने के लिए कोई विशेष योग्यता या सामर्थ्य की आवश्यकता नहीं होती है। आप ज्ञानी व्यक्ति हैं या नहीं, या आप धनी हैं या निर्धन हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। भक्ति में ये सब बातें न्यून हैं। मन में इच्छा हो, परम तत्व को जानने की जिज्ञासा हो, तो भक्ति सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। लगन हो तो कोई कार्य असंभव नहीं होता। निश्चयात्मिका बुद्धि तथा निरंतरता अति आवश्यक है। तब आप भक्ति कर सकते हैं।

भक्ति आपकी जिंदगी को सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण शस्त्र है। आप महसूस करते हैं, भक्ति की शक्ति को। यदि आपको किसी रुकावट से मुकाबला करना काफी कठिन लगता है, और आपकी भक्ति की साधना अनवरत चल रही है तो कई बार इससे चमत्कार होते दिखाई देते हैं। मतलब आपमें एक विशेष शक्ति का आभास होने लगता है, आप जो कर सकते हैं, वो तो आप करते ही हैं। पर जो आप नहीं कर सकते हैं, उसके लिए आपकी भक्ति कार्य कर देती है। जब भी आप कुछ करते हैं, तो ये जान लें कि सर्वोत्तम शक्ति ही अंतिम है और आप उस सर्वोत्तम शक्ति से अपनी भक्ति के द्वारा संपर्क में रह सकते हैं।

भक्ति का अर्थ यह नहीं होता है कि सिर्फ बैठकर कुछ शब्दों का उच्चारण किया जाये। इसका अर्थ है कि

(शेष पृष्ठ १६ पर)

ये उम्र की दहलीज भी/बड़ी जालिम होती है
धड़कनों को जवाँ और/जिस्म को खोखली
करती जाती है/मचल के रह जाता मन
उत्तेजनाओं के जोश में/और बीत जाते खूबसूरत पल
सब्र की खामोशियों में/गुमसुम दिल खफा खफा सा है
मान लूँ अगर बात इसकी तो/जमाने में होनी रुसवाई है
निगाहें बदल सकती है लोगों की
क्योंकि बढ़ती उम्र में
इश्क फरमाने की मनाही है
कैसे समझाए ये बात जमाने को
इश्क करने की कोई उम्र नहीं
ये तो हर उम्र की दर्दे दवा होती है

-- बबली सिन्हा

शब्दों के कोलाहल में जो, अंतर्मन की बात करे
बाहर से बहरे गूंगे बन, अंतर्मन से संवाद करे
प्रतिभाओं को आगे लाकर, विकास का प्रणेता है
दर्द छुपाकर दिल में खुद का, बस भारत की बात करे
जुगनू बन तम को हरता, निज प्रयासों से विश्व समरसता
धरा गगन के कैनवास पर,
आतंक पर प्रहार करे
स्वाभिमान का नारा देकर,
जिसने राष्ट्र का मान बढाया
विकसित देश का सपना मोदी,
विश्व गुरू सा काम करे

-- डॉ अ. कीर्तिवर्धन

कहाँ हो तुम?
सप्ताह के अंत में/होता था तुम्हारा आना
वो एक शाम जो गुजारा करते थे तुम मेरे नाम
प्रेम की उष्णता लिए/होठों पर ढेर सारी मुस्कान
बिसराकर सारे गम/और खुशी हो जाती
तुम्हारे प्रेम में/मैं पगली गुमसुम गुमनाम
पिछले कई सप्ताह से/कर रही हूँ तुम्हारा इंतजार
कहाँ खो गए तुम?
वो प्रेम की ऊष्मा अब
इंतजार की ठंड में बदल रही है
आँखों के बरसते आंसू अब
इंतजार की हद बता रहे हैं
कहाँ हो तुम? कहाँ चले गए?

-- रीना मौर्य 'मुस्कान'

कब से बैठी मैं आस लगा/अपने प्रीतम की यादों में
कब आओगे मेरे प्रियवर/देखूँ अपने नयनों से
बागों से फूलों को चुनकर/राहों में फूल बिछायी हूँ
उस फूलों का हार बनाकर/प्रीतम के गले पहनाऊगीं
कब से बैठी मैं आस लगा
अपने प्रीतम की यादो में
कुछ ही इंतजार की घड़ी में
जब मेरे प्रियवर मिलते हैं
उनसे मिलकर मेरे हृदय में
खुशियों का फूल खिल जाता है!

-- बिजया लक्ष्मी

ढेर सारे साँप निकले हैं आजकल दौरों पर
जो हमेशा ही चुनावी मौसम में निकलते हैं
ढेर सारे सपने हम सभी को दिखलाते हैं ये
फिर सारे सपनों को ये पाँच साल छलते हैं
जनता बेहाल रहती और भी परेशान रहती
इनके तो सिर्फ अपने
ही रिश्तेदार फलते हैं
सियासती खिलाड़ी
अपना खेल दिखा रहे
माहौल को देखकर
अपने चेहरे बदलते हैं

-- बेखबर देहलवी

मैं गर्भ से हूँ/जल्द ही बियाऊँगी/अपनी जैसी
एक हाड़-मांस की पुतली
जिसे तपाकर, गलाकर
बेड़ियों के सांचे में ढालकर
परम्पराओं की थाती लाद कर
परोस दिया जायेगा
एक बार फिर किसी
गुलाब की पंखुड़ियों से सजे बिस्तर पर
जहाँ काँटों को गूँथकर
गहरे तक चुभो दिया जायेगा उसकी छाती में
लहूलुहान चादरों पर फिर लिखी जायेगी
उजले इतिहास की गाथा
जिसे हक नहीं अग्नि देने का/पिंडदान करने का

-- पूनम विश्वकर्मा वासम

है शौक हमें भी खेलने का मगर
जिन्दगी से गायब शरारतें क्यों हैं
है लबों पर चाहतें कई मेरे मगर
तेरे लबों पे भरी शिकायतें क्यों हैं
कहनी थी कई बातें तुझे ऐ हमनशीं
पर तेरी आखों में हिकारतें क्यों हैं
है इल्म मुझे तेरी चुप्पी का मगर
मेरे लिए तेरी ये नजरें इनायतें क्यों हैं
गुजर जायेगी ये जिन्दगी युँ ही रुसवाईयों में
मगर तेरे दिल मे दर्द भरी ये रवायतें क्यों हैं
कहने को कह दूं सारी बातें जमाने से
मगर मेरे लब्जों मे पसरी तेरी खामोशियां क्यों हैं
है अभी भी इन्कार तुझे मेरी दिल्लगी का
मगर मेरे इश्क मे बरकरार ये गर्माहटें क्यों हैं

-- अल्पना हर्ष

अजीब से हालात हैं मेरी जिंदगी के
दिन ढलता भी नहीं और रात होती हैं
मुस्कुराना काफी नहीं है इस महफिल में
यहां तो आंसुओं के जरिये बात होती है
इश्क के बाजीगरों को रोते देखा है अकेले
इन तन्हाइयों से जबभी मुलाकात होती है
तुम लौटकर मत आना मेरी जिंदगी में
हर अंजाम पर एक नई शुरुआत होती है

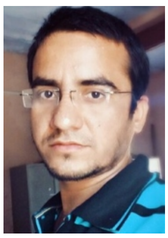

-- विनोद दवे

बिन तेरे तेरी यादों में/मुमकिन है मैं जी जाऊँ
बेखबर हूँ/ये भी हो सकता है
पूरी तरह बिखर जाऊँ/ढह रहा सपनों का घर
मुमकिन है आँसू पी जाऊँ/बेखबर हूँ
ये भी हो सकता है/संग आँसुओं के बह जाऊँ
घायल अपनी
यादों के पन्ने
मुमकिन है बँद कर पाऊँ
बेखबर हूँ ये भी हो सकता है
किताब पूरी पढ़ जाऊँ!

-- अंजु गुप्ता

बदल रहा है मानव पल पल/बदल रहा संसार
बढ़ रहे मकान नफरत के/कहीं भी पनप नहीं रहा प्यार
बदल गया है बचपन अब तो/बदल गए हैं संस्कार
बड़े बूढ़ों का आशीर्वाद नहीं है/बस फैल रहा व्यापार
बदल रहा पहनावा देखा/बदल गई चाल और ढाल
नहीं रही लटकती चोटी अब तो
देखते हैं बस घोंसले जैसे बाल
बैलगाड़ी की फोटो घर पर
अब सब के पास है कार
वही बन गया गुरुर लोगों का
बाकी सब हुआ बेकार
असली पहनावा बस मेले में/फटी जींस का प्रचार हुआ
दिखावे की है सारी दुनिया/धोती कुर्ता सब बेकार हुआ
उतरा जब मैं बस से नीचे/मिली नहीं नीम की छाँव
खो गया है मेरा गांव कहीं/बस ये रह गया बदलाव !

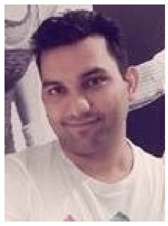

-- परवीन माटी

मुझे सोने नहीं देती, खुश होने नहीं देती
याद मेरे गाँव की, याद मेरे गाँव की।
जिस आँगन में बचपन बीता वो सूना पड़ा है,
खंडहर हो गया पर घर मेरा आज भी खड़ा है,
अपनों के करीब रखती है, बनाये खुशनसीब रखती है,
वो गलियाँ वो कच्चे रास्ते
आज भी बुलाते हैं
सखियों के संग बिताए
वो लम्हें बहुत रुलाते हैं
अक्सर ही बेचैन कर जाती है,
आँसुओं से आँखें भर जाती है,
याद मेरे गाँव की, याद मेरे गाँव की

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

ये न समझो कि मेरे कदम
कहीं थककर ठहर जाएंगे
पाँव तब भी जमीं पर होंगे मेरे
जब हम फलक पर नजर आएंगे
कांटों को भी मालूम है
मेरे हौसले का हुनर
देखना एक रोज खुद ही बन फूल
राहों में बिछ जाएंगे

-- अमित कु. अम्बष्ट 'आमिली'

मुँह दिखाई

नई बहू के गृहप्रवेश करते ही घर में कानाफूसी शुरू हो गई। 'बडे पंडित बनते हैं, इन्हें यह भी नहीं पता की राहुकाल में नई बहू को गृहप्रवेश नहीं कराते।'

'हाँ री, सुना है बड़ा अशुभ होता है।'

'...भगवान ही मालिक है अब।'

इन्हीं कानाफूसियों के बीच सारे रीति-रिवाज बीत गए। दादी भी मुहँ फुलाये थी। बहू ने पैर छूकर आशीर्वाद माँगा ही था कि बरस पड़ी, 'राहुकाल में प्रवेश हुआ है छोरी, भगवान करें सब अच्छा हो।'

बहू हँसते हुए बोली- 'यह राहुकाल क्या होता है दादी? आप बस हँसते रहा करिए, ये हँसी का काल है।' कहके जोर से खिलखिला पड़ी।

टीवी देखती हुई दादी ने उसकी निश्छल हँसी सुनकर मुहँ बिचका दिया। 'आजकल की बहुएँ...' कहते हुए टीवी पर समाचार सुनने लगी।

अचानक पाकिस्तान का नाम सुनते ही उनके कान चौकन्ने हो गए। समाचार वाचक बोले जा रहा था। वह आँखें फाड़े हाथ को कान पर लगाकर बैठ गयी मूर्ति की तरह। टीवी की खबर कानों से टकराई कि पन्द्रह साल से जेल में बंद रामकृपाल के साथ दो और बुजुर्ग बंदियों को छोड़ा जा रहा है।

पलंग से फुर्ती से उतरकर दादी अलमारी में कुछ खोजने लगी। 'बहू-बेटा, सुनते हो, अरे जल्दी आओ! तेरे पिताजी जिन्दा हैं।'

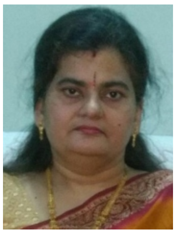

पति द्वारा दिया गया नौलखा हार हाथों में लिए बोलीं- 'तेरी बहुरिया कहाँ है, बुला उसे, उसकी मुहँदिखाई दे दूँ। अरी उसका प्रवेश बड़ा शुभ है...!'

-- सविता मिश्रा

चेहरा

नगर सेठ सहाय साहब के आवास पर आयोजित होली-मिलन समारोह में शामिल होने के लिए विधायक शुभ्रा देवी खादी-रेशम की दूध सी उजली साड़ी में सज कर घर से निकलीं और अपनी बड़ी सी शानदार सफेद गाड़ी की ओर बढ़ीं, जिसका दरवाजा खोले ड्राइवर राम जी सावधान की मुद्रा में मुस्तैदी से खड़े थे।

शुभ्रा देवी और गाड़ी के बीच दो कदम का ही फासला रह गया था कि उस फासले के बीच टपक पड़ी अचानक माली काका की बिटिया केसर कंवर...'होली की राम-राम सा! ढोक दे!' कहते हुए उसने उनके पैरों पर गुलाब की पंखुरियाँ मिला हुआ तनिक-सा गुलाल धर दिया। उसकी इस हरकत से शुभ्रा देवी यूँ बिदक उठीं जैसे किसी साँप पर पाँव पड़ गया हो।

उनके उस बिदकने से गुलाल के कुछ कतरे उनकी साड़ी पर और कुछ गाड़ी पर जा पड़े, जिसे देखकर वह आग-बबूला हो कर चिल्लाईं, 'ये सब क्या है गंवार लड़की?'

'हो...हो... ली... होली मेम सा!' पीपल के पत्ते सी कांप रही थी वह।

'होली खेलेगी मुझसे बद्ज़ात लड़की? इत्ती औकात है तेरी? सब कुछ बिगाड़कर रख दिया।' घोर घृणा की दृष्टि से उसे देखते हुए, साड़ी बदलने के लिए वह भीतर चली गईं।

'म्हारे से के गलती हो गई राम जी भाया?' अँसुआए स्वर में केसर कंवर ने पूछा, तो वह मुस्कुराए, 'तुमसे यह गलती हुई, बहिनी, कि तुमने गलत जगह उनसे होली खेली। यही सब तुम जनता और मीडिया के सामने करती न, तो वह तुम्हें ना सिर्फ हंसकर गले

लगातीं, साथ में बख्शीश भी देतीं। हमारी मैडम के कई चेहरे हैं री केसर और यह उनका असली चेहरा है।'

-- कमल कपूर

मोलभाव

सरिता ने रास्ते पर सब्जी की दुकान लगाये वृद्धा से पुछा- 'माँ जी! गोभी कैसे किलो है?'

वृद्धा ने जवाब दिया- 'ले लो बेटी! चालीस रुपये किलो का भाव लगा दूंगी!'

सरिता ने मुंह बनाते हुए कहा- 'माँ जी! तुम तो बहुत ज्यादा भाव बता रही हो। तीस रुपये लगाना है तो एक किलो तौल दो।'

इसी तरह मोलभाव करके सरिता ने और भी सब्जियां खरीदीं। जबकि उसके साथ ही खड़े अमर को यह सब नागवार गुजर रहा था। वह चाहता था कि सरिता उस वृद्धा की मजबूरी का गलत फायदा न उठाये। वापसी में सरिता अपने घर के समीप ही बने एक शौपिंग म ल में गयी और साबुन, तेल, शैम्पू, पाउडर, टूथपेस्ट जैसे चीजों की खरीददारी कर काउंटर पर पैसे देने गयी। कुल चीजों की रसीद ग्यारह सौ पचपन रुपये की थी। अभी सरिता काउंटर पर पैसे दे ही रही थी कि अमर ने पूछा- 'अरे सरिता! यहाँ मोलभाव नहीं करोगी? पूछो शायद हजार रुपये में मान जाये?'

सरिता ने हंसते हुए कहा- 'आज आप कैसी बातें कर रहे हैं? यहाँ भी कोई मोलभाव करता है भला?'

'तो मोलभाव उन गरीबों से ही क्यूँ? क्या उन्हें पैसे कमाने का हक नहीं?' सरिता अमर की बात का जवाब न दे सकी और आगे बढ़ गयी।

-- राजकुमार कांदु

पीली साड़ी

'क्या सोच रही हो वाणी अम्मा! अब तुम्हारा सुपुत्र नहीं आने वाला। यह चौथा बसंत है और उसने तुम्हारी सुध नहीं ली, क्या अब भी आस बाकी है?'

'क्यों नहीं? तुम शायद भूल गई हो, पिता की मृत्यु के बाद उनका विधि-पूर्वक क्रियाकर्म उसी ने आकर करवाया था और मुझे अकेली देखकर पूरी सुख-सुविधा वाले इस आश्रम में भर्ती करके घर बेचकर सारा पैसा मेरे नाम जमा करके गया फिर हर बसंत पंचमी पर मिलने भी आता रहा।'

'तुम्हें अकेली देखकर वो हमेशा के लिए स्वदेश वापस भी तो आ सकता था न?'

'जब भूल हमारी ही थी कि उसे विदेश की राह दिखाई और वहीं विवाह करके बस जाने की सहर्ष अनुमति भी दी, फिर अपना कैरियर छोड़कर वापस कैसे आ जाता? ये चार साल तो, बच्चे छोटे थे न, समय ही नहीं मिला होगा।'

'अपनों के लिए समय निकाला जाता है अम्मा, अपने आप कभी नहीं मिलता।'

'देखो, अब उसका बेटा चार और बिटिया दो साल के हो चुके होंगे, इस बार वो जरूर आएगा।'

'पर उसका कोई फोन भी तो नहीं आया, एक तुम हो कि इस दिन हर साल बच्चों के नाम का पौधा लगाकर उनके जीवन में सदैव बसंत बना रहने के लिए दुवाएँ माँगती हो।'

'यह तो मैं अपनी खुशी के लिए करती हूँ री, माँ हूँ न, और इस दिन से मेरी यादें भी तो जुड़ी हुई हैं। भला उसके बचपन के वे दिन कैसे भूल सकती हूँ जब बसंत-पंचमी के दिन से पूरे एक माह तक मुझे हरी-पीली अलग-अलग डिजाइनों वाली साड़ियों में तैयार होते देखकर वो खुद भी वैसे ही रंग के वस्त्र पहनकर तितलियाँ पकड़ने, झूला झूलने, मेरे साथ बगीचे चला करता था। वो मुझे बहुत प्यार करता है, मेरे बिना उसे भी चैन नहीं होगा। हो सकता है वो मुझे सरप्राइज देना चाहता हो।'

'ऐसा होता तो वो अब तक आ चुका होता अम्मा! मान जाओ कि अब वो अपने परिवार में व्यस्त होकर अपना फर्ज भूल चुका है। जल्दी से उठो और तैयार हो जाओ, बाहर पौधारोपण का कार्यक्रम शुरू होने वाला है, आश्रम की सेविका तुम्हें लेने आती ही होगी।'

'ओह! शायद तुम सही कह रही हो, पर मुझे तो अपना फर्ज पूरा करना ही है।'

और स्वयं से ही संवाद करती हुई वाणी अम्मा ने

एक गहरी साँस के साथ कमरे की सिटकनी अन्दर से चढ़ाकर सामने ही रखी हुई आश्रम से मिली हरी किनारी वाली पीली साड़ी उठा ली।

-- कल्पना रामानी

जहाँ देखिए जी गधे ही गधे हैं
बौड़म हैं ज्यादा, और कुछ सधे हैं
मगर देखिएगा, गधे ही गधे हैं
इलेक्शन के मौसम में, दिखते हैं ज्यादा
स्वयं को बताती 'लियोनी' भी राधा
जो साड़ी पहन मंच से हँस रही है-
वो केवल चुनावों में करती है वादा
जमीनों-कमीनों के दर्जे बँधे हैं
जहाँ देखिए जी गधे ही गधे हैं
इलेक्शन में नेता गजब ढा रहे हैं,
गधों को गधे ही नजर आ रहे हैं
भाई ही भाई की चर्चा करे अब-
अजब भाईचारा भी दिखला रहे हैं
हो यूपी या गुजरात, सारे बँधे हैं
जहाँ देखिए जी गधे ही गधे हैं
नहीं खुद जो जीता तो लेकर सहारा
गधे ने पिता तक को दू-लत्ती मारा
विरासत पिता की गधे चर रहे हैं-
मगर ये स्वयं को समझते हैं दारा
उल्लू बनाने की कुछ सरहदें हैं?
जहाँ देखिए जी गधे ही गधे हैं

-- सुरेश मिश्र

प्रेम पर्व पावन बेला पर, गीत समर्पित करता हूँ।
जीवन का क्षण क्षण मैं तुमको, मीत समर्पित करता हूँ।
देने को तो शायद तुमको और न कुछ मैं दे पाऊँ
नौका प्रिये गृहस्थी की भी मुश्किल से ही खे पाऊँ
ये उपहार तुम्हारे प्रति है, प्रीत समर्पित करता हूँ।
इन संघर्ष भरी राहों पर कब तुमने वैभव चाहा !
मात्र प्रेम ही माँगा तुमने प्रेम गीत सुनना चाहा
हृद-वीणा की धड़कन लो,संगीत समर्पित करता हूँ।
संग रही झंझावातों में
हर मुश्किल में साथ दिया
रहा हाथ में हाथ तुम्हारा
मुझे हारने नहीं दिया
जो भी मेरे हिस्से आयी,
जीत समर्पित करता हूँ।

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

जब से रावत जी ने बोला, आतंकी को ठोकेंगे
सारा भारत समझ गया था, अब कुछ कुत्ते भौकेंगे
पत्थर बरसाने वालों को, वो मासूम बताएँगे
अपने अपने बिल से बाहर, आकर के चिल्लायेंगे
सेना के कामों में अपनी, टांग अड़ाना बंद करो
आतंकी को मासूमों सा, आप बताना बंद करो
वो तुमको मासूम लगे पर, मैं बोलूं वो कातिल है
ऐसे आतंकी भी सुन लो,
फांसी के ही काबिल है
जड़ से काटो अब तो सारे,
भारत भू की आफत जी
बोल दिया सो बोल दिया
अब ठोको उनको रावत जी

-- मनोज 'मोजू'

क्या बात अब तुझसे करूं, हर ख्वाब तन्हा रह गए
जो बात हम न कह सके, वो अश्रु बन कर बह गए
प्रणय के इस अनुबंध को इक बार भी न गुन सके
झीनी चदरिया प्रेम की इक तार भी न बुन सके
अहसास बन गए कफन तन से लिपट कर रह गए
जो बात हम न कह सके, वो अश्रु बन कर बह गए
कहने को तो हम साथ थे, पर सांसों में थीं दूरियां
वनवास इक कमरे में था, थीं दिल की कुछ मजबूरियां
मैं सरिता बन बहती रही, तुम 'कूल' बन कर रह गए
जो बात हम न कह सके, वो अश्रु बन कर बह गए
कुछ चाहतें अपनी अधिक थीं, या हमारी भूल थी
कैक्टस के संग गुलाब था, बस हर घड़ी इक शूल थी
हर पल लहुलुहान थे, यह दर्द भी हम सह गए
जो बात हम न कह सके, वो अश्रु बन कर बह गए
उम्मीद थी इक रोज तुम हमको समझ कुछ पाओगे
खुद के अहम को त्यागकर,
दिल से हमें अपनाओगे
बस इक इसी उम्मीद में
दिन-रात-दिन गुजर गए
जो बात हम न कह सके,
वो अश्रु बन कर बह गए

-- डॉ रमा द्विवेदी

अब प्रिय मन आप बिन, हर दिवस जलने लगा है
रात का गहरा अंधेरा, अब मुझे डसने लगा है
इस अंधेरी जिंदगी में दीप की लौ अब बनो तुम
तुम बिना ये मोम-सा मन, बिन जले जलने लगा है
यादों का ऐसा बवंडर-सा उठा जिंदगी में
दर्दो गम का एक तूफां
हर दिशा चलने लगा है
क्या पढ़ूं मैं उस प्रणय के
ग्रंथ को तुम ही बताओ
प्रीत के इतिहास पर जो
धूल-सी मलने लगा है

-- सुरेखा शर्मा

हर इंसान मिलेगा सच्चा, कहना यह बेमानी है
सँभल-सँभलकर गोते लेना, जीवन बहता पानी है
ध्यान भंग होने पर पथ में, मिलता न्योता ठोकर को
कोई नहीं उठाने आता, गिरे हुए इक जोकर को
देख गिरे को लोग हँसेंगे, जग की रीति पुरानी है
सँभल-सँभलकर गोते लेना, जीवन बहता पानी है
लोग खड़े तैयार लगाने, नमक हृदय की चोटों पर
अंधकार में डूब गया सच, झूठ सजा है होठों पर
इसीलिए तो विधि के घर में, दुष्टों की अगवानी है
सँभल-सँभलकर गोते लेना, जीवन बहता पानी है
रंग बदलती दुनिया की इस, चकाचौंध में मत खोना
बिना प्रीति के जीना मुश्किल
विष के बीज नहीं बोना
सदा प्रेम करने वालों की,
होती अमर कहानी है
सँभल-सँभलकर गोते लेना,
जीवन बहता पानी है

-- उत्तम सिंह 'व्यग्र'

वन-उपवन में तू बिखरा है, सचमुच तुझ पर यौवन है
अमराई, सरसों, पलाश पर, तुझसे ही तो जीवन है
बहता है तू संग पवन के, हर कछार में दिखता है
प्रेमकथा की रचना करके, अनुबंधों को लिखता है
अंतर्मन को करता प्रमुदित, आनंदित अब हर जन है
अमराई, सरसों, पलाश पर, तुझसे ही तो जीवन है
कोयल की भाषा में है तू, है सुधियों के दर्पन में
है अनंग की महिमा में तू, तू प्रणय के बंधन में
राग-रंग, अनुराग तुझी से, मिलन-नेह का आंगन है
अमराई, सरसों, पलाश पर, तुझसे ही तो जीवन है
कामनाओं की दावानल तू, पीड़ादायी तनहाई
विरह-वेदना का तू स्वामी,
टीस लगाती गहराई
आया है रौनक लेकर तू,
तेरा तो अभिनंदन है
हे बसंत, हे प्रिय बसंत,
तेरा तो अभिवंदन है

-- प्रो. शरद नारायण खरे

नेह बिना तुम मिलन देह का मत करना स्वीकार
इस गंगा में तब बहना जब मन से उमड़े प्यार
आसमान को छूने की तो मन में चाह भरी है
पर मैं जो कहती हूँ वो भी बिलकुल बात खरी है
नीलगगन में उड़ना जब लो पूरे पंख पसार
इस गंगा में तब बहना जब मन से उमड़े प्यार
अगर स्वाद ही मिले न तो क्या खाना खाया जाये
बेमन से जो करें समर्पण तो आनन्द न आये
प्रेम नहीं है दुनियादारी प्रेम नहीं व्यापार
इस गंगा में तब बहना जब मन से उमड़े प्यार
भाव बहुत अनमोल इसे तुम यों ही नहीं गँवाना
इसे समझना जैसे पूजन
कर ईश्वर को पाना
रिश्ते वैसे होते जैसा
होता है आधार
इस गंगा में तब बहना
जब मन से उमड़े प्यार

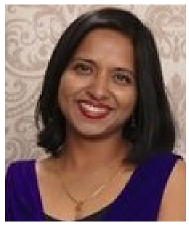

-- अर्चना पांडा

अनवरत चलते रहें हम भूल बैठे मुस्कुराना
है यही अनुरोध तुमसे बस खुशी के गीत गाना
फर्ज की चादर तले, कुछ मर गए अहसास कोमल
पवन के ही संग झरते शाख के सूखे हुए दल
रच गया बरबस दिलों में औपचारिकता निभाना
नित सुबह से शाम ढलती, दंभ दरवाजे खड़ा है
रस विहिन इस जिंदगी में शून्य सा बिखरा पड़ा है
क्षुब्ध मन की पीर हरता, प्रीति का कोमल खजाना
साँस का यह सिलसिला ही
वक्त पीछे छोड़ता है
हर समर्पण भाव लेकिन
तार मन के जोड़ता है
मैं कभी रूठूँ जरा सा,
तुम तनिक मुझको मनाना

-- शशि पुरवार

(पहली किस्त)

अनुत्तरित प्रश्न

डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह

अपने शेष बचे जीवन के गहराते अंधकार के बारे में आज मैं सोच रही हूं। मजहब के उन विष-दंतों के बारे में। किसी मर्द के बनाये उस शरियत के कानून के बारे में। उनके द्वारा दिये गये जख्मों के बारे में! जख्मों से शरियत का मवाद रिस रहा, कीड़े रेंग रहे। सिर्फ इनके ही बारे में मैं सोच रही हूं।

ठंड अपने पूरे शबाब पर है। मैं चूल्हे के पास बैठी आग सेंक रही हूं। मेरे पास ही बैठे हैं मेरे देवर जावेद तथा छोटी ननद गुलशन। मेरे शौहर इधर साल भर से कलकत्ता में हैं। सुना है, वे किसी चमड़े के कारखाना में काम करते हैं। नयी नौकरी है, इसलिए वे घर आना नहीं चाहते, जबकि अम्मा उन्हें बुलाना चाहती हैं। और मन ही मन मैं भी। कारण कि शौहर की याद अक्सर मुझे भी आती रहती है। जीवन में खालीपन का अहसास होता है। घर में सबकी यह राय है कि अगर अम्मा अपनी बीमारी का तार दें तो वे आने पर मजबूर हो जायेंगे। जाहिर है इससे उन्हें छुट्टी मिलने में सहूलियत होगी। यह राय मुझे मुफीद लगी। तार देने की बात पर गुलशन ने चुटकी ली तथा जावेद ने मुस्कराकर मेरी ओर अपनी नजर गड़ा दी। मैं उसकी शोख मुस्कराहट से वाकिफ हूं। उसके इरादे शायद नेक नहीं, यह सोचकर मैंने प्रसंग को बदलते हुए गुलशन से कहा, 'कड़ाके की ठंड है, थोड़ी और लकड़ी चूल्हे में डाल दो।'

'ठंड तो मुझे भी लग रही है भाभी जान!' यह कहते हुए जावेद हम दोनों के बीच में आ टपका। मैंने जावेद को टोका, 'जावेद? ज्यादा ढीठ बनने की कोशिश न करो।'

मेरी हिदायत का मानो उस पर कोई असर ही न हुआ। उसने इत्मीनान से मेरे जिस्म के उभारों पर नजर गड़ाते हुए मेरे भीतर एक अजीब-सी सिरहन पैदा कर दी। 'वाकई आप बहुत खूबसूरत हैं भाभी जान! आपके हर अंग में मानो मादकता समायी हुई है। आपकी देह-सुगंध का एक अभिनव अहसास हो रहा मुझे। और अफसोस कि भाई जान इससे पूरी तरह बेखबर हैं। अगर आप इस गुलाम को हुक्म करें तो मैं आपकी खदिमत में उन्हें इसकी खबर कर दूं। भाई जान को तार देने की जरूरत न पड़ेगी, वे खुद ही दौड़े-दौड़े आप तक पहुंच जायेंगे।' उसने शायद मेरे भीतर झांकने की शोख शरारत की।

सचमुच जावेद इन दिनों काफी बदल-सा गया है। हालांकि वह पहले ऐसा नहीं था। उसमें आचनक आये इस बदलाव को लेकर उसकी भविष्य की चिंताओं से मैं काफी परेशान हूं। पहले वह मेरी अदब करता। मैं भी उसका सानिध्य चाहती। उससे बोलना-बतियाना अच्छा लगता। उसके करीब सघन अपनापन का अनुभव करती। उसकी सहज शरारत मुझे अच्छी लगती। किसी बात पर जब मैं उस पर रंज होती, वह अपनी आंखें झुका लेता। मेरे हर अंदाज की वह लिहाज करता और यह मुझे काफी अच्छा लगता। लेकिन आज-कल वह रंगीन ख्यालों में हर समय डूबा रहता है। शायद दोस्तों की संगत में पड़कर आंखें चार करने की कला उसने सीख ली है और मुझे इसी बात का डर सता रहा। वह अब पहले जैसा निर्मल-निर्लिप्त न रहा। मुझे इसका अक्सर अहसास होता है। उसमें विकार आ गया है और उसके भीतर का मर्द शायद मेरा स्पर्श चाहता है। मुझे पाना चाहता है या और कुछ, यह समझना मेरे लिए अधिक मुश्किल नहीं है। खैर, रिश्ते की कमजोर हो रही डोर को मैं हर हाल में टूटने से बचाना चाहती हूं। ऐसे में मेरे शौहर का घर पर होना अत्यंत जरूरी है। दरअसल मेरे भीतर की यह जो शंका है इसे लेकर मैं बेहद सहमी हुई हूं। मैं जावेद से जितनी दूरी बनाने की कोशिश करती हूं, वह उतना ही मेरे करीब आना चाह रहा है।

इन दिनों मेरे प्रति उसका आकर्षण कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है। वह अक्सर मुझे अपलक नजर देखना चाहता है। वक्त-बेवक्त मेरी प्रशंसा में कसीदे कसता। मुझसे हंसना-बतियाना चाहता है। वह चाहता है कि मेरा मन भी उसे पहले जैसा ही सहज कबूल कर ले। मुझे जब कभी वह उदास देखता है तो टोक देता, 'भाभी जान, भाई जान नहीं हैं तो क्या हुआ?' आपका ख्याल रखने के लिए मैं तो हूं न! क्या मुझ पर आपको यकीन नहीं हो रहा?' मेरे व्यथित मन को सहलाने का जब भी वह यत्न करता है तब मैं अधिक परेशान हो उठती हूं।

निहायत एक औरत होने के नाते क्या मैं जावेद से अपनी दूरी बढ़ाना चाहती हूं! दरअसल वजह यह नहीं है। जावेद की आंखों में कई बार मैंने वासना के उठते तूफान को देखा है। यह वही जावेद है जिसके सिर के बालों को मैं अक्सर सहलाया करती और उसे अपने मन की हर बात बताती। लेकिन सचमुच ही मैं उससे अब डरने लगी हूं। मैं चाहती हूं कि मेरे शौहर घर आ जायें ताकि जावेद पर थोड़ा लगाम लगे और मैं भी फिसलने से बच जाऊं। भीतर ही भीतर कष्ट सहती हूं। घुटन महसूस करती हूं। फिर भी अम्मा के सामने अधिक खुलने की हिम्मत मुझमें नहीं होती। घर में अम्मा से सब डरते हैं। इस बात का डर मुझे भी बराबर बना रहता है। वह कब किस बात पर उबल पड़ेंगी, यह कहना मुश्किल है। दरअसल अम्मा को सिर्फ पैसे चाहिए। उन्हें बेटे तथा बहू की चिंता नहीं होती, बस उनकी जरूरत पूरी होती रहे। लेकिन मेरे देह-मन की भी तो कुछ जरूरत है। उसे भी तो कुछ चाहिए!

तार देने की बात पर अम्मा के तेवर अचानक बदल गये। वह तुनक कर बोलीं, 'वह औरत ही क्या, जो मर्द के बिना न रह सके।' दरअसल उनका इशारा मेरी ओर रहा। इतनी-सी बात पर वह घंटों बड़बड़ाती रहीं। हमारे ससुर की वह दूसरी पत्नी हैं। लेकिन इस घर में उनकी ही हुकूमत चलती है।

भाई को प्रदेश गये साल भर गुजर गये। लेकिन मुझे लगता है कि वे अभी-अभी गये हैं। आपको कैसा लगा रहा है भाभीजान, क्या बोलना पसंद करेंगी?'

मैं समझ गयी कि यह आफत इतनी जल्दी नहीं टलेगी। मैंने गौर किया, जावेद की आंखों में लाल-लाल डोरे उभरने लगे थे। चूंकि अशरफ पर बात आकर ठहर गयी थी, जाहिर है मेरे जेहन में उनकी भूली-बिसरी स्पर्श स्मृतियां सुप्त नारीत्व को पल भर के लिए उद्‌बेलित कर गयीं। मेरे भीतर भावनाओं सुखद ज्वार उठी और मैं उसमें समा गयी। तभी जावेद ठहाके लगाते हुए मेरी ओर मुखातिब हुआ, 'आप किसकी चिंता में डूब रहीं, आपका पूरा ख्याल रखने के लिए मैं हूँ न?'

मैं पूरी तरह सहम गयी। कारण कि दुनिया की हर औरत एक जैसी होती है। वह पुरुष-मन को बखूबी पढ़ व समझ सकती है। पुरुष हमेशा से औरत में अपने सुख की ही तलाश करते रहे हैं। वे स्त्री-मन की व्यथा को अब तक कहां समझ पाये जबकि औरत तुरंत समझ लेती है। पुरुष कब किस नजर से औरत को देखता है, इसे समझने में औरत कभी कोई गलती नहीं करती, जबकि पुरुष अक्सर इस मामले में चूक जाते हैं। मुझमें जावेद की बढ़ती आशक्ति ने अनायास ही मेरी चिंता को बढ़ा दिया। जब मैं इस घर आयी थी, उस वक्त जावेद कक्षा नवीं में पढ़ता था। मैं उम्र में उससे छोटी थी, मगर रिश्ते में बड़ी। वह मेरी लिहाज करता। मेरी खदिमत में वह हमेशा ही हाजरि रहता। दरअसल मैं इस घर में सबसे अधिक उस पर ही भरोसा करती। उसे अपना दोस्त समझती। उससे अपनी हर खुशी बांटती। यकीनन एकांत में मैं अपने मन को उसके समक्ष खोल कर रख देती। उसमें कभी कोई ऐब मुझे नहीं दिखी। भाई को मैं मायके में छोड़ आयी थी। इस कमी को जावेद ने अपने भावनात्मक लगाव से कभी महसूस न होने दिया। उसने रिश्तों की डोर को टूटने से बचाया जरूर। साथ ही संबंधों को गरिमा प्रदान की। रिश्ते को एक नाम दिया। सचमुच ही हम दोनों के बीच का यह रिश्ता बड़ा पाक-साफ रहा। मन की सुप्त वासना कभी जगी भी तो हम सावधान रहे। अपने विवेक से काम लिया। हम एक-दूसरे के काफी करीब आते चले गये।

शरीर-परिवर्तन के साथ-साथ मन में भी बदलाव आया और हमारे रिश्तों के मायने भी शायद बदल गये। जिस रिश्ते को लेकर मैं बेहद उत्साहित रहती और सुकून महसूस करती थी, अब उसी रिश्ते से मैं डरने लगी। जब कोई रिश्ता मन में संशय पैदा करने लगे, तो उससे आतंकित होना स्वाभाविक है। दरअसल रिश्ते को हम जीते हैं, लेकिन जब वह हमारी नींद खराब करने लगे व सुख-शांति के बीच आकर सवाल खड़ा करे अथवा बोझ बन जाये, तो उसे हमें ढोना पड़ता है। हमारे रिश्ते भी कुछ इसी तरह के हो गये थे।

(अगले अंक में जारी)

जब बेजुबां हो इश्क तो क्या लिखे कलमा कोई
पत्थर ए महबूब हो तो क्या लिखे कलमा कोई
जब जलाए जाते हैं सुन अहसासों के पन्ने यहां
हां फिर वफा में डूबकर क्या लिखे कलमा कोई
ये दिल तो कहता है लिखें हम एक लंबी दास्तां
पर कोई पढ़ता नहीं तो क्या लिखे कलमा कोई
अब कहां वो दिल रहे जिनको वफा मंजूर थी
अब वफा मिलती नहीं क्या लिखे कलमा कोई
दूध की नदियाँ बहा दीं वो दीवाने और थे
अब अश्क भी गिरता नहीं
क्या लिखे कलमा कोई
हम देखते हैं आज 'जानिब'
रंजो गम की बारिशें
अपना ही अपना नहीं तो
क्या लिखे कलमा कोई

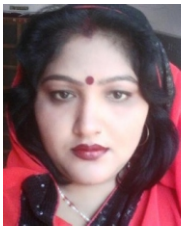

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

कतने अरमानों से धरती नीलगगन को तकती है
प्यार की रोटी शर्म की लौ में धीरे-धीरे पकती है
जो माया पाई है तुमने उसपे गर्व न करना तुम
याद रहे जो आज आई है वो कल जा भी सकती है
धूप-दिया-बाती-चंदन-कुमकुम तो सिर्फ दिखावा है
पीड़ित की पीड़ा हरना ही सच्ची पूजा-भक्ति है
मात-पिता गुरु- वैद-कुम्हार सभी होते हैं इक जैसे
भीतर-भीतर नर्म-मुलायम बाहर-बाहर सख्ती है
औरत सीधी-सादी होती लेकिन है कमजोर न वो
वक्त पड़े तो दुनिया से
लड़ने की ताकत रखती है
मन का मीत वही होता
जो मन की सब बातें जाने
बिन बोले सब कहना-
सुनना ही सच्ची अनुरक्ति है

-- अर्चना पांडा

घिरे हैं तन्हाई में हम, बचाने तुम चली आओ
सोती यादों को जगाने तुम चली आओ
उदासी हर घड़ी रहती, तड़पती रूह मेरी है
वो सरगम पायल की सुनाने तुम चली आओ
समन्दर हैं यहां कितने, मगर नाकाम सारे हैं
तबस्सुम की बूंद वो, पिलाने तुम चली आओ
फिजां मदहोश करती है, नजारे जख्मी कर देते
छुपा है 'राज' ईशा में बुलाने तुम चली आओ
सही दूरी नहीं जाती, बहते अश्क रातों दिन
वो जुल्फों की चादर में,
सुलाने तुम चली आओ
बहुत हो गये हैं हिज्र,
अब सहना मुहाल है
जिन्दगी मुझे जहां से
उठाने तुम चली आओ

-- राज कुमार तिवारी 'राज'

इस तरह कुछ जोश में हद से गुजर जाते हैं लोग
जुर्म की हर इन्तिहाँ को पार कर जाते हैं लोग
हर तरफ जलते मकाँ हैं आदमी खामोश है
कुछ सुकूं के वास्ते जाने किधर जाते हैं लोग
अहमियत रिश्तों की मिटती जा रही इस दौर में
है कोई शमशान वह अक्सर जिधर जाते हैं लोग
यह शिकन जाहिर न हो चेहरा न हो जाए किताब
आईने के सामने कितना सँवर जाते हैं लोग
गाँव खाली हो रहा कुछ रोटियों के फेर में
माँ का आँचल छोड़कर देखो शहर जाते हैं लोग
बाप की थीं ख्वाहिशें बेटा निभाए उम्र तक
हो बुढ़ापे का तकाजा तो मुकर जाते हैं लोग
देखिये मतलब परस्ती का जमाना आ गया
मांगिये थोड़ी मदद तो खूब डर जाते हैं लोग
कौन कहता दौलतों से वास्ता उनका नहीं
कुर्सियों पर बैठकर काफी निखर जाते हैं लोग
ऐ मुसाफिर यह हकीकत भी हमें मालूम है
इश्क में कुछ ठोकरें खाकर
बिखर जाते हैं लोग
भूल जाना भी मुकद्दर
का बड़ा तोहफा यहां
दर्द की तासीर बन दिल
में ठहर जाते हैं लोग

-- नवीन मणि त्रिपाठी

अदब से यूँ निभाना चल रहा है
मिजाज अब शायराना चल रहा है
समझता कौन है अब दिल की बातें
फकत सुनना सुनाना चल रहा है
तुम्हारे दर्द की पूँजी लगाकर
गमों का कारखाना चल रहा है
मेहरबां हो चला है अब मुकद्दर
बिना माँगे ही पाना चल रहा है
उधर भी चल रही हैं दावतें, और
इधर भी आबोदाना चल रहा है
यकीं की पीठ थी जिनके सहारे
वो दीवारें गिराना चल रहा है
किसे परवाह है अब शायरी की
तुम्हें लिखना मिटाना चल रहा है
नहीं कुछ खास है इनकी जरूरत
मगर साँसों का आना चल रहा है
तेरी माँ के किए सदके से 'पूनम'
दुआ का शामियाना चल रहा है

वक्त ने ही हमें सताया है
वक्त ने ही हमें सम्हाला है
दास्ताँ गैर से कहें क्या-क्या
जिन्दगी में सबने रुलाया है
काफिला साथ है मेरे फिर भी
जिन्दगी का बसर ये तनहा है
फिक्र करता वही जमाने की
कद्र जो वक्त की न करता है
हम सब्र करते रहे हमेशा ही
हाथ खाली हमको मिला क्या है
ऐ! खुदा तू बता इबादत के
इस जुनूँ में अब रखा क्या है

-- पूनम पांडे

छोड़कर पैरों के निशां जाओ
याद जग कुछ भी न रखता है
जो मिटा सके 'पुष्प' का जीवन
दौर ऐसा अभी न आया है

-- पुष्प लता शर्मा

क्यों होता है मेरे मन तू बेकल
इक सपना बुन लेना फिर से तू कल
मद्धिम पड़ जाए सूरज भी तुझसे
बादल को अपना कर लेना आँचल
चाहत की राहें मत समझो आसां
करना सपनों को पड़ता है घायल
प्रीत की रीत निभानी है तुझको
बरसाना थोड़े से आँसू बादल
तोड़ न पाएंगे चाहत की रस्में
उनको कर देंगे हम अपना कायल
धानी रंगी है ये चुनरी अपनी
कारी बदरी को बनाया है काजल
क्यों जागी जागी सी हैं ये रातें
किसने फैलाया यादों का आँचल
माना यह जीवन संघर्षों भरा है
चमकेगा सितारा अपना भी कल

-- प्रिया वच्छानी

दल हाथ से अब जाता रहेगा
नगमे मुहब्बत के गाता रहेगा
अगर रूठ जाओ कभी तो सनम
दिल तुमको यूं ही मनाता रहेगा
आती नहीं शोखियां हमको लेकिन
सादगी से प्यार को निभाता रहेगा
मिल गए जो कभी तुम हमनशीं
दिल फिर सदा मुस्कराता रहेगा
उल्फत के किस्से सुने थे हजारों
आपबीती तुम्हें अब बताता रहेगा

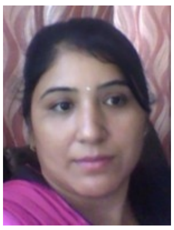

-- कामनी गुप्ता

कितने हसीन फूल खिले हैं पलाश में
फिरभी भटक रहे हैं चमन की तलाश में
पश्चिम की गर्म आँधियाँ पूरब में आ गयी
गाफिल हुए हैं लोग क्षणिक सुख-विलास में
जब मिल गया सुराज तो किरदार मर गया
शैतान सन्त-सा सजा उजले लिबास में
कश्ती को डूबने से बचायेगा कौन अब
शामिल हैं नयी पीढ़ियाँ अब तो विनाश में
किसको सही कहें अब और कौन गलत है
असली जहर भरा हुआ नकली मिठास में
कागज के फूल में कभी आती नहीं सुगन्ध
मसले गये सुमन सभी भीनी सुवास में
बदला हुआ है 'रूप' रंग और ढंग भी
अन्धे चले हैं देखने दुनिया उजास में

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

बिक रहे हैं रिश्ते
अब तो थोक में व्यापार है
कहलाती थी कल तक तिजारत
उसी का नाम अब प्यार है !

-- अंजु गुप्ता

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

(नवीं कड़ी)

जब तक यादव हस्तिनापुर पहुंचे तब तक इस बात का निर्णय हो चुका था कि पांडवों को खाण्डवप्रस्थ का क्षेत्र दिया जायेगा और हस्तिनापुर के साथ शेष क्षेत्र दुर्योधन को दिया जाएगा। पारिवारिक कलह को और अधिक बढ़ने से रोकने के लिए युधिष्ठिर ने इस अन्यायपूर्ण विभाजन को भी स्वीकार कर लिया था।

यादव इस निर्णय को बदलवाने की कोशिश नहीं कर सकते थे, क्योंकि युधिष्ठिर ने भी इसको स्वीकार कर लिया था, लेकिन वे इतना तो कर ही सकते थे कि युधिष्ठिर यहां से खाली हाथ न जायें और धन सम्पत्ति, कर्मचारियों, सेवकों तथा सेना का उचित भाग भी उनको प्राप्त हो। कौरवों की राजसभा में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह बात रखी कि विभाजन न्यायपूर्ण विधि से किया जाना चाहिए। दुर्योधन ने इस बात पर बहुत विवाद किया, लेकिन अन्ततः धृतराष्ट्र इस बात पर सहमत हो गये कि जो सेवक, राजकर्मचारी और सैनिक पांडवों के साथ जाना चाहते हैं उनको जाने दिया जाये तथा राज्य कोष का भी एक भाग युधिष्ठिर को दिया जाए।

इतना ही नहीं, इस बात के लिए भी राजा धृतराष्ट्र की सहमति ले ली गयी कि जो प्रजाजन हस्तिनापुर में नहीं रहना चाहते, वे अपनी समस्त चल सम्पत्ति को लेकर खांडवप्रस्थ जाने के लिए स्वतंत्र हैं, उनको न रोका जाय। इस निर्णय से समस्त हस्तिनापुर में प्रसन्नता की लहर फैल गयी और बहुत से प्रजाजन, जो दुर्योधन के दमनकारी राज से पीड़ित थे, अपने परिवार और सम्बंधियों को साथ लेकर तत्काल खांडवप्रस्थ चलने के लिए तत्पर हो गये। उनको देखकर बहुत से ऐसे प्रजाजन भी खांडवप्रस्थ जाने को उद्यत हो गये, जिनको प्रत्यक्ष में कौरवों से कोई असुविधा नहीं थी।

पांडवों ने किसी तरह नावों द्वारा सभी नागरिकों को यमुना नदी पार करायी और खांडवप्रस्थ में पैर रखा। घनघोर जंगल के क्षेत्र में नया नगर बसाना कोई सरल कार्य नहीं होता। प्रारम्भ में वे सब यमुना नदी के किनारे ही रेती पर जम गये। फिर किनारे के कुछ वृक्ष काटकर जगह बनाकर उन्होंने कुटियों का निर्माण किया। सैनिकों को जंगली पशुओं से नागरिकों की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया। फिर क्रमशः जंगलों को काटा गया और नगर का निर्माण किया गया। हस्तिनापुर से साथ गये हुए श्रमिकों और वास्तुविदों ने इसमें बहुत सहायता की। लगभग ६ माह के कठोर परिश्रम के बाद निवास के योग्य राजधानी बन गयी। पांडवों ने श्रीकृष्ण की सहमति से उस नगर का नाम देवराज इन्द्र के नाम पर 'इन्द्रप्रस्थ' रखा।

खांडवप्रस्थ के जंगलों में उन दिनों नाग जाति के कुछ लोग रहते थे। उनको हटाने के लिए अर्जुन को उनके साथ युद्ध करना पड़ा। इससे नाग पराजित होकर भाग गये। जंगल साफ करने के लिए उसके कुछ भाग में आग भी लगानी पड़ी थी। परन्तु अन्ततः इन्द्रप्रस्थ का निर्माण हुआ, जो किसी भी तरह हस्तिनापुर से कम नहीं थी। कृष्ण के आदेश पर वास्तुविदों ने बहुत अच्छे भवनों का निर्माण कर दिया था, जो एक सम्राट की राजधानी के उपयुक्त थे।

महाराज युधिष्ठिर का शासन सब प्रकार से श्रेष्ठ था। वे प्रजाजनों से न्यूनतम कर ही लेते थे। इससे सभी प्रजाजन उनसे बहुत संतुष्ट रहते थे। धीरे-धीरे इन्द्रप्रस्थ की ख्याति अन्य राज्यों तक पहुंची, तो अन्य राज्यों के व्यापारी भी वहां व्यापार के लिए आने लगे और शीघ्र ही इन्द्रप्रस्थ हर विषय में हस्तिनापुर से भी बहुत आगे निकल गया। इन्द्रप्रस्थ की समृद्धि और महाराज युधिष्ठिर के सुशासन से आकर्षित होकर अन्य राज्यों के नागरिक भी वहाँ स्थायी रूप से रहने के लिए आने लगे।

जब इन्द्रप्रस्थ में जनजीवन सामान्य हो गया, तो कृष्ण ने युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने की राय दी। युधिष्ठिर उन दिनों कृष्ण से परामर्श किये बिना कोई बड़ा निर्णय नहीं करते थे। उन्होंने इस परामर्श को मान लिया, लेकिन इसकी बाधाओं की चर्चा की। इसमें सबसे बड़ी बाधा मगध नरेश जरासन्ध था। उसने आसपास के आर्य राजाओं पर अपना आतंक स्थापित कर रखा था। स्वयं कृष्ण की नगरी मथुरा उसका आतंक भोग चुकी थी। वैसे जरासन्ध शिव का भक्त था, लेकिन शिव को १०८ राजाओं की बलि चढ़ाने के लिए उसने लगभग एक सौ राजाओं को बन्दी बना रखा था और उनकी संख्या पूरी हो जाने पर बलि चढ़ाने वाला था। इन दोनों कारणों से कृष्ण को जरासन्ध का अन्त कराना सबसे अधिक आवश्यक लगा।

युधिष्ठिर चाहते तो मगध पर सीधे चढ़ाई कर सकते थे और जरासन्ध को हरा सकते थे, लेकिन कृष्ण की राय थी कि इसमें मगध की जनता का कोई दोष नहीं है, अतः युद्ध करना उचित नहीं है। इसके स्थान पर जरासन्ध को द्वंद्वयुद्ध में पराजित किया जा सकता है। यह सलाह युधिष्ठिर को अच्छी लगी।

एक दिन कृष्ण, भीम और अर्जुन ब्राह्मणों का वेश बनाकर मगध की राजधानी गिरिव्रज पहुंच गये। वे राजमहल की दीवार फाँदकर महल में पहुँचे थे। वहाँ उन्होंने दान में जरासन्ध से द्वंद्वयुद्ध माँगा। जरासन्ध ने स्वीकार कर लिया। तब भीम और जरासन्ध का मल्लयुद्ध हुआ, जिसमें भीम ने जरासन्ध को मार डाला। जरासन्ध की मृत्यु के बाद भी कृष्ण ने उसका राज्य स्वयं नहीं लिया, बल्कि जरासन्ध के पुत्र सहदेव को वहाँ का सम्राट बना दिया। बन्दी राजाओं को भी कृष्ण ने मुक्त कराया। इस प्रकार राजसूय यज्ञ की सबसे बड़ी बाधा दूर हुई और पांडवों के पक्ष में सैकड़ों छोटे-बड़े राजा भी हो गये। ये सभी घटनायें कृष्ण को अच्छी तरह याद थीं, जैसे कल ही घटी हों।

राजसूय यज्ञ करना सरल नहीं था। सबसे पहले तो चारों ओर दिग्विजय के लिए सेनायें भेजनी थीं, ताकि वे सभी राज्यों को जीतकर उनको युधिष्ठिर को सम्राट मानने के लिए बाध्य करें। इस हेतु युधिष्ठिर के चारों भाइयों को चारों दिशाओं में सेनाओं के साथ भेजा गया। उनको अन्य राज्यों को जीतने में कोई कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि अधिकांश ने बिना युद्ध किये ही उनकी प्रभुता स्वीकार कर ली और कर देना स्वीकार किया। जिन राजाओं ने युद्ध करने का साहस किया भी उनको पराजित होना पड़ा और कर भी देना पड़ा। दिग्विजय करके चारों भाई सेनाओं सहित लौट आये।

सभी सेनाओं के लौट आने के बाद राजसूय यज्ञ की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गयीं। सबसे पहले सभी मित्र राजाओं और सन्त-महात्माओं को निमंत्रण भेजे गये। हस्तिनापुर में भी निमंत्रण भेजा गया और पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, महाराज धृतराष्ट्र, महामंत्री विदुर एवं दुर्योधन सहित सभी कौरव भाइयों को बुलाया गया। इसी प्रकार द्वारिका में भी सभी यादव प्रमुखों को निमंत्रण भेजा गया। वहां से महाराजा उग्रसेन, वसुदेव, बलराम, सात्यकि सहित सभी प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। निर्धारित तिथि से एक दिन पहले ही सभी अतिथि आ गये, जिनको उचित भवनों में ठहराया गया।

कौरव तो अपने परिवार के ही सदस्य थे, अतः उनको भी राजसूय यज्ञ में विभिन्न कार्य दिये गये। युवराज दुर्योधन को भेंट में प्राप्त होने वाली वस्तुओं के एकत्रीकरण और सुरक्षा का दायित्व दिया गया। अधीनस्थ राजाओं ने सम्राट युधिष्ठिर को सोना, चांदी, हीरे, रत्न आदि बहुमूल्य सम्पत्तियाँ भेंट की थी, जिनका एक बड़ा ढेर लग गया था। उस ढेरी को देखकर दुर्योधन की आंखें चौंधिया गयीं। उसको इससे बहुत ईर्ष्या हुई। पांडवों का भवन भी विलक्षण था। उसको देखकर सभी कौरव हतप्रभ रह गये।

राजसूय यज्ञ की सभी क्रियायें यथाविधि सम्पन्न की जा रही थीं। जब अग्रपूजा का समय आया, तो सभी ने विचार विमर्श किया कि अग्रपूजा का सम्मान किसको दिया जाना चाहिए। वहां उपस्थित व्यक्तियों में से किसी एक को ही यह सम्मान दिया जाना था। महाराज युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म का नाम प्रस्तावित किया। लेकिन पितामह भीष्म ने स्वयं भगवान कृष्ण का नाम रखा। उनका कहना था कि यहां उपस्थित व्यक्तियों में वासुदेव श्रीकृष्ण ही हर दृष्टि से अग्रपूजा का सम्मान पाने के अधिकारी हैं। उनकी बात का भगवान वेदव्यास, महात्मा विदुर तथा अन्य उपस्थित जनों ने भी समर्थन किया। अतः श्रीकृष्ण को अग्रपूजा के लिए चुन लिया गया।

(अगले अंक में जारी)

पृष्ठ २१ की पहेलियों के उत्तर-
(१) होली (२) गद्दा (३) तकिया (४) नाई (५) नारियल

गलती का अहसास

नेकचंद एक सरकारी स्कूल में अध्यापक थे। परिवार में पत्नि और चार बेटियां थी। नेकचंद का सपना था अपनी बेटियों को ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाना जिससे वह समाज का भला और देश का नाम ऊंचा कर सकें। नेकचंद की आय इतनी नहीं थी, ले देकर गुजारा चल जाता था। बेटियों को ऊँची शिक्षा दिलाने के लिए अधिक आय की आवश्यकता थी, इसलिए नेकचंद ने अध्यापन के बाद घर में बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने की व्यवस्था कर ली।

धीरे धीरे उनकी आय में वृद्धि होने लगी उन्होंने घर कि मरम्मत भी करवा ली ट्यूशन पढ़ने आये छात्रों के बैठने के लिए अलग कमरा बनवा लिया, सोफा टेबल अलमारी किताबें वगैरह भी रखवा दी। नेकचन्द यदि देखते कि कोई छात्र होनहार है पर पैसों के अभाव के कारण पढ़ाई ठीक से नहीं कर पा रहा तो वह उस छात्र को बिना फीस लिए ट्यूशन पढ़ाते यहां तक कि यदि कोई छात्र अपने स्कूल की फीस नहीं दे पाता तो वह उसकी फीस भी भर देते थे।

एक दिन नेकचंद अपने घर के बरामदे में बैठे हुए थे। उन्होंने देखा कि उनके स्कूल का एक छात्र विवेक एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को साथ लेकर उनके घर की ओर आ रहा था। वह व्यक्ति मैले कुचैले वस्त्र पहने हुए था। विवेक स्कूल में रोज साफ सुथरे कपड़े, नए-नए जूते पहनकर आया करता था। उसके स्कूल का बैग भी बहुत कीमती होता था। नेकचन्द ने उठकर उनका स्वागत किया और विवेक को साथ आये व्यक्ति के साथ अंदर आने को कहा। विवेक सिर झुकाये खड़ा था और साथ आये व्यक्ति का हाथ पकड़कर धीरे-धीरे उसके कान में कुछ बुदबुदा रहा था। वह अपने साथ आये व्यक्ति को अंदर आने से मना कर रहा था।

नेकचन्द ने पूछा कि विवेक, क्या बात है आप लोग अंदर क्यों नहीं आ रहे हो? उस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा- 'मास्टर जी, मैं विवेक का पिता हूँ। हम यहीं ठीक हैं। मैं तो अपने बेटे की ट्यूशन के लिए आपसे बात करने आया हूँ। मेरे मैले-कुचैले कपड़ों के कारण विवेक शर्म महसूस कर रहा है और कह रहा है कि खड़े-खड़े ही बात कर लो। मैं खेत में मजदूरी करके गुजारा करता हूँ। इसे खूब पढ़ा-लिखाकर बहुत बड़ा आदमी बनाना चाहता हूँ। पर मेरे पास ट्यूशन के पूरे पैसे नहीं है। आपके मार्गदर्शन से मैं इसे प्रतियोगी परीक्षा में भेजकर अपना सपना पूरा करना चाहता हूँ।'

मास्टर जी ने उनका हाथ पकड़कर अंदर बिठाया। उन्होंने विवेक से पूछा- 'विवेक, तुम तो स्कूल में बहुत अच्छे कपड़े-जूते पहनते हो, कीमती बस्ता लेकर स्कूल आते हो। तुम्हारे पिता अगर चाहें तो स्वयं अच्छा खा पी सकते हैं, अच्छे कपड़े पहन सकते हैं और तुमसे भी खेत में मजदूरी करवा सकते हैं। यदि अभी तुम पढ़ना-लिखना छोड़कर मजदूरी करोगे तो पूरी जिंदगी मेहनत मजदूरी करनी पड़ेगी।'

उन्होंने विवेक के पिता से कहा- 'इससे तो मजदूरी करवाइये, पढ़-लिखकर यह क्या करेगा?' विवेक और उसके पिता ऐसा सुनकर अचंभित रह गए। विवेक ने हिम्मत करके पूछा- 'मास्टर जी, ऐसा क्यों?'

मास्टर जी ने जवाब दिया- 'बेटा, तुम्हें आज अपने पिता के फटे-पुराने मैले-कुचैले कपड़े देखकर शर्म आ रही है। कभी तुमने सोचा है कि तुम आज जिस ढंग से कपड़े पहन रहे हो बिना शारीरिक मेहनत किये पढ़ रहे हो किसके कारण? तुम्हारे जैसे कई बच्चे पैसे के अभाव के कारण स्कूल का मुंह तक नहीं देख पाते। तुम्हारे पिता तुम्हें पढ़ाने के लिए कितना त्याग कर रहे हैं। अपने पिता के दिल को देखो उनके कपड़ों को नहीं। अगर तुम्हें आज अपने पिता को साथ ले चलने में शर्म आ रही है तो कल जब तुम एक अफसर बन जाओगे तो अपने पिता को तो पहचानने से ही इनकार कर दोगे। अपने पिता के लिए सम्मान के बदले तुम उनके कपड़ों के कारण शर्म महसूस कर रहे हो। तुम्हारा नाम विवेक है पर तुमने अपने विवेक का उपयोग नहीं किया।'

सुनते ही विवेक तो शर्म से पानी-पानी हो गया। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया। वह अपने पिता और मास्टर जी के सामने फूट-फूटकर रो पड़ा। उसके पिता ने मास्टर जी को दिल से दुआएं दीं।

-- रविन्दर सूदन

जाग्रत इच्छाएं

आवारागर्द लोगों की दोस्ती ही उसे इस बस्ती में ले आई थी, जहां उसने इस पगली को पहली बार देखा था। पगली थी नहीं वह, बस बुरी हालत और ऊलजूलुल बातें करने से ही पगली नाम पड़ गया था। अधिकतर रेलवे फाटक के पास ही नजर आती थी, नशेड़ी लोगों के इर्दगिर्द कूड़े के ढेर टटोलते हुए। औरों की तरह ही अक्सर उसकी नजरें भी पगली के अस्त-व्यस्त कपड़ों से झांकते अंगों को देखने का प्रयास करतीं। ऐसे ही आज भी, वह फाटक के पास खड़ा उसे देख अपनी भावनाओं की संतुष्टि में था जब उसने पगली को दो नशेड़ियों के साथ उलझते देखा। वे उसे जबर्दस्ती करने के इरादे से एक ओर खींचने की कोशिश कर रहे थे, जब एकाएक वह उसकी ओर देख मदद के लिए चिल्लायी थी।

'सोच मत, यही मौका है पगली को अपनी तरफ 'अट्रैक्ट' करने का...!' उसके दिमाग ने कहा था और बस वह अकेला ही उन दोनों से जा भिड़ा था। उसने लड़ने में अपनी पूरी ताकत लगा दी थी और वैसे भी नशे की अधिकता से खोखले हुए वे दोनों उसके सामने अधिक नहीं रुक सके और भाग खड़े हुए थे।

'ऐ! लाओ पट्टी बांध दूँ।' पगली कपडे के कई पट्टीनुमा टुकड़े लिए वापिस उसके सामने आ खड़ी हुयी थी। उसने सहज ही हाथ आगे बढ़ा दिया और उसकी आखें पगली के चेहरे पर अपने लिए प्रेम-भाव तलाश करने लगी। अक्सर जागने वाली इच्छाएं फिर जाग्रत होने लगी थी।

'अब ठीक है न।' एक कुशल नर्स की तरह चोट पर पट्टियां बांधने के बाद वह कह रही थी। 'और हाँ, एक ये बची है, ये भी तेरे लिए।' बात पूरी करते हुए उसने उसका हाथ थाम लिया था। और क्षण भर में उन टुकड़ों में से बचा आखिरी रेशमी टुकड़ा उसकी कलाई पर बंधकर चमकने लगा था।

उसकी आखें अभी भी पगली के चेहरे पर थी लेकिन जाग्रत इच्छाएं अनायास ही उसके इस पवित्र टुकड़े में जलने लगी थी। 'मैं अभी आई।' कहकर वह पगली एक ओर को भाग गयी और वह हाथ में आई चोट पर ध्यान देने लगा।

-- विरेंदर 'वीर' मेहता

भांड

जिले सिंह ने गंभीर हो नफे सिंह से पूछा, 'भाई ये भांड किसे कहते हैं?'

'कोई कलाकार जब स्वार्थवश अपनी कला को बेच देता है तो वह भांड बन जाता है।' नफे सिंह ने समझाया।

जिले सिंह सिर खुजाते हुए बोला, 'भाई मैं कुछ समझा नहीं।'

नफे सिंह बोला, 'जब कोई व्यक्ति कला के प्रति तन-मन से समर्पित हो उसकी समृद्धि में योगदान देता है, तो वह कलाकार कहलाता है।'

'और भांड किसे कहते हैं?' जिले सिंह ने उत्सुकता से पूछा।

'जब वही कलाकार चंद सिक्कों के लालच में अपनी कला और जमीर का सौदा कर लेता है, तो...'

इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी करता जिले सिंह खिलखिलाते हुए बोला, '...तो वह भांड कहलाता है।'

-- सुमित प्रताप सिंह

कविता

न ही यादें रहीं तू भी न रही
न लौटेगी कभी ये भी न सही
कहाँ होता मुझे है प्यार यारा
दिलों की बात थी वो भी न कही
कभी आना न ख्वाबों में न आओ
छला तूने मुझे तू भी न वही
अरे तू लौट के आ जा कहूँ मैं
तुझे चाहूँ आज भी ये भी न सही

-- नवीन कुमार जैन

जब से तुम मेरे मन में हो उतरे/जीवन के तुम प्राणदाता बन गए
बासंती श्रृंगार मन को भाए/रूप भी तुम्हें देख के इतराए
रंगीला मौसम प्यार का बताए/मेरे मीत! तन-मन हैं बौराए
चंदा की चाँदनी लाई सौगात/सुना रही मुझे मन से मन की बात
मायूसी, विरहाग्नि को हर जाओ
हकीकत की बारात बन के आओ
प्रेम रंग लिए निहारूँ दर्पण
बेचैन तन-मन किए तुम्हें अर्पण
नयनों ने नयनों से की है बात
दिन-रात हुए अब तुम्हारे साथ ढोल,
डफली मंजीर झाँझ झंकार/दशों दिशाओं में कर रहीं पुकार
मन प्रीत! बनके कर रही इजहार/आजा-आजा मेरे बसंत बहार

-- मंजु गुप्ता

सत्ता जहर है जिसका विष पी/मैं नीलकंठ बन जाऊंगा
शिव बनकर हित करूंगा सबका/भस्मासुर को मिटाऊंगा
राजनीति की बात अजब है/इसमें सब उल्टा होना है
कर्म की अखंड ज्योति जलाकर/इस भ्रम को मिटाऊंगा
देश विकास की औषधि राजनीति/असुरों ने इसे जहर बनाया
मैं देश पुत्र बन देश बन्धु,
गंगा सा निर्मल बनाऊंगा
कमल हाथ तो लक्ष्मी साथ में,
भूले को स्मरण कराऊंगा
विकासशील को विकसित करने,
ही सत्ता में आऊंगा

-- प्रदीप कुमार तिवारी

सहते-सहते अग्नि का ताप/जल ने भी जलना सीख लिया
लोगो की फितरत देख-देख/हमने भी बदलना सीख लिया
कुछ जोर ना था जब शब्दों में/चुप्पी ने कहना सीख लिया
नहीं राह मिली फूलों की मगर
काँटों पर चलना सीख लिया
ठोकर खाकर गिर गए कभी तो
खुद ही सम्भलना सीख लिया
मौसम की मार इस तरह पड़ी
हर हाल में ढलना सीख लिया

-- नीतू शर्मा

अरमानों के पंख लगाके, इस दुनिया में आई थी
रूप रंग सिंगार देखके, सबके मन को भाई थी
बड़े प्यार से बाँह थाम के, चरखी का सँग पाया था
मतवाले दो हाथों ने भी, ढेरों नेह लुटाया था
बँधी डोर से खुले गगन में, ऊँचाई को छू जाती
रंग-बिरंगी सखियों को पा, झूम भाग्य पर इठलाती
कभी गुचती कभी उड़ती मैं, पेच दाँव पर लग जाते
कट कर गिरते देख धरा पर, कितने हाथ मचल जाते
लूट रहे थे, नोंच रहे थे, अपमानित हो रोती थी
आशाओं के दीप बुझाए,
मान-सम्मान खोती थी
आज कहीं स्वच्छंद गगन में
मेरा भी इक घर होता
नहीं उजड़ता जीवन मेरा,
जो इक रखवाला होता

-- डॉ रजनी अग्रवाल 'वाग्देवी रत्ना'

मन में फिर से प्यास जगायी/पिया मिलन की आस जगायी
खेतों मे कुछ फूल हैं पीले/हर्षित मन है दिल हैं खिले
प्रेंति भी गजब इठराई/कली-कली ले रही अगड़ाई
मौसम जैसे पास बुलाता/धूप के संग जाड़ा दिखलाता
आओ हम भी खो जाते हैं/अबकी इनके हो जाते हैं
जीवन के अब रंग चलेंगे/फगुआ के संग भंग चलेंगे
इस बहाने उस बहाने/उनके संग खूब छेड़ तराने
जहाँ मिला था साथ तुम्हारा
बात तुम्हारी हाथ तुम्हारा
वो पथ फिर से चहक रहे हैं
कुछ लोग फिर से बहक रहे हैं
शरद का बस अब अन्त है आया
फिर से देखो बसन्त है आया

-- डॉ. शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी

चिड़िया विस्मित चहक रही/बसंत तो आया नहीं
आमों पर मोर फूल की मद्धिम खुशबू
टेसू से हो रहे पहाड़ के गाल सुर्ख
पहाड़ अपनी वेदना किसे बताए
वो बता नहीं पा रहा पेड़ का दर्द
लोग समझेंगे बेवजह राई का पर्वत
पहाड़ ने पेड़ की पत्तियों को समझाया/मै हूँ तो तुम हो
तुम ही तो कर रही बसंत का अभिवादन
गिरी नहीं तुम बिछ गई हो
और आने वाली नव कोपलें जो है तुम्हारी वंशज
कर रही बसंत के आने इंतजार
कोयल के मीठी राग अलाप से
लग रहा वादन हो जैसे शहनाई का
गुंजायमान हो रही वादियों में
गुम हुआ पहाड़ का दर्द
जो खुद अपने सूनेपन को
टेसू की चादर से ढाक रहा
कुछ समय के लिए अपना तन

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

उन हवाओं का क्या करूँ
जिनमें तेरा अर्श नहीं
उस बारिश का क्या करूं
जिसमें भीगने में तेरा स्पर्श नहीं
क्या करूँ उस संगीत का
जिसके सुर में तेरा नाम नहीं
और जिसमें तेरा नाम नहीं
उसे सुनकर मुझे कोई हर्ष नहीं
कैसे कहूँ नहीं रहा जाता
बस कविताओं में याद कर-करके
मरा भी नहीं जाता
और जिया भी नहीं जाता
उम्मीदों में इंतजार कर-करके
बस बहुत हुआ अब लौट आ
न रह-रहकर मुझको तरसा
जहर जुदाई का अब पिया नहीं जाता

-- महेश कुमार माटा

भावनाओं से भरी मैं बह जाती हूँ
हर रिश्ते के लिए दिन रात/मरती और पिसती रहती हूँ
मान सम्मान को न्यौछावर कर/खुश रहती हूँ
मैं जीती हूँ सभी के सपनों के लिए
ताकि अपनों को खुश रख सकूं
मैं बदलती रहती हूँ अपनों के लिए
भूल जाती हूँ अपनी हर तकलीफ और दर्द
बहती हूँ बस भावनाओं में
हर रिश्ता निभाती हूँ
माँ बहन बेटी पत्नी प्रेयसी बनकर
हर पल बदलती रहती हूँ
सभी की खुशियों के लिए
सब कुछ भुलाती हूँ

-- संयोगिता शर्मा

सोचा ना था, समझा ना था/जाऊँ कहाँ मालूम ना था
कांटे तो थे लाखों मगर/एक फूल की भी चाह थी
उस फूल को ढूंढा बहुत/उस फूल को खोजा बहुत
जिस राह पे था चल पड़ा/सोचा नहीं जाना नहीं
वो फूल भी मिला नहीं/वो गुल कभी खिला नहीं
पतझड़ भी आकर चले गए/बारिश भी आकर गुजर गई
था मैं जहाँ, हूँ मैं वहां
देखा तो कोई मिला नहीं
हूँ मैं वहां, था मैं जहां
देखा तो अपने छूट गए
वो सारे सपने टूट गए
वो सारे अपने रूठ गए

-- आर्यन उपाध्याय 'मयंक'

अच्छा कार्य करो तो, दर्द मिलता है
बूरा कार्य करो तो, खुशियाँ मिलती है
इसे संयोग कहेंगे या जमाना बदल गया है
समझ में नहीं आता किसे अपना कहें, किसे पराया
कैसी अनहोनी है, कैसा अहसास है
प्रतिक्षण दर्द का दायरा बढ रहा
धूसरित धूल में आशाएं
दमन होती इच्छाएँ
रह रह कराह उठती वो सांसें
जो जिलाती है शरीर को

-- रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'

कुंडलियाँ

आभासी जा हाट में, लई दुकान सजाय
गाहक तौ ना मिलत हैं, बनिया नून चबाय
बनिया नून चबाय, अकेलो बैठो रोबै
बेचौ सस्तौ माल, मगर घाटा ही होबै
का का रंगे ख्वाब, दिखावैं इतै प्रभासी
सूनो है बाजार, भए गायब आभासी
आभासी बाजार की, बड़ी अनोखी बात
घाट-घाट में घूमकर, खा जाते हैं मात
खा जाते हैं मात, यही किस्मत का रोना
चलती नहीं दुकान, किया है किसने टोना
करते रहे गुहार, न ग्राहक भरें उबासी
सोए चादर तान, यहाँ सबकुछ आभासी

-- डॉ. रमा द्विवेदी

खादी पर राजनीति क्यों?

मुकेश सिंह

हाल के दिनों में खादी की बढ़ती मांग को देखते हुए खादी आयोग ने अपने उत्पादनों के विज्ञापन हेतु छापे जाने वाले कैलेंडर और डायरियों पर खादी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले अपने ब्रांड अम्बेसडर नरेन्द्र मोदी की तस्वीर छापने का साहसिक फैसला लिया। पर कैलेडरों के प्रकाशन के बाद से ही उस पर छपी मोदी की तस्वीर को लेकर राजनीतिक गलियारों में जमकर हंगामा मचा हुआ है। पूरा विपक्ष एकजुट होकर इस मुद्दे को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने की जिद्द पे अड़ा हुआ है। राजनीति के इस बिन सिर-पैर वाले मुद्दे को लेकर सरकार की सहयोगी शिवसेना भी अकारण ही विपक्ष के साथ खड़ी नजर आ रही है।

वास्तव में खादी आयोग द्वारा इस बार खादी के प्रोमोशन के लिए देश के सबसे बड़े यूथ आईकन नरेन्द्र मोदी की तस्वीर छापी गई है। इस तस्वीर में मोदी आधुनिक किस्म का चरखा चलाते नजर आ रहे हैं। तस्वीर में सूत कातते मोदी साधारणतः ही किसी का भी ध्यान आकर्षित करने में सफल दिख रहे हैं, जिससे खादी उद्योग को खासा लाभ होने की उम्मीद है। पर इसके बावजूद सिर्फ राजनैतिक मतविरोध के चलते विपक्ष के नेता मोदी को निशाना बनाने में जुटे हैं। कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष मोदी पे हमलावर होकर बस यही रोना रोए जा रहा है कि बापू के स्थान पे मोदी की चरखा चलाती तस्वीर क्यों छापी गई? उनका मानना है कि इस तस्वीर के जरिये मोदी बापू को रिप्लेस कर रहे हैं और इससे बाबू का अपमान हो रहा है।

पर क्या विपक्ष के कहे अनुसार वाकई इस देश में बापू को रिप्लेस कर पाना सम्भव है? देश के प्रति बापू के समर्पण तथा बापू को लेकर देशवासियों के मन में बसी अगाध श्रद्धा को देखकर तो ऐसा नहीं लगता। बापू के प्रति देशवासियों के प्रेम की भावना को देखकर सहज ही यह कहा जा सकता है कि बापू को इस देश में रिप्लेस करना किसी के लिए सम्भव नहीं है और इस देश में बापू को कोई रिप्लेस नहीं कर सकता। बापू इस देश के हर एक व्यक्ति के मन में बसते हैं और वे किसी कैलेंडर या तस्वीर के मोहताज नहीं हो सकते। ऐसे में गांधी जी के सिद्धांतों पर चलनेवाली संस्था खादी एवं ग्रामोद्योग से गांधी जी को अलग करने की बात कहना सिर्फ और सिर्फ मानसिक दिवालियापन का सबूत है।

वैसे भी खादी एवं ग्रामोद्योग के कैलेंडरों के बारे में बात की जाए तो जानकारों से पता चलता है कि आयोग द्वारा छपवाए जानेवाले इन कैलेंडरों पर हर वर्ष गांधी जी की ही तस्वीर छापने का कोई अनिवार्य नियम नहीं रहा है और इस वर्ष से पहले भी १९९६, २००२, २००५, २०११, २०१३ और २०१६ के कैलेंडरों में गांधीजी की तस्वीरें प्रकाशित नहीं की गई थीं। ये और बात है कि उपरोक्त वर्षों के कैलेंडरों में किसी दूसरे नेता की भी तस्वीर नहीं छापी गई थी। और ऐसे में सबसे अधिक राजनैतिक विरोधियों के निशाने पे रहनेवाले नरेंद्र मोदी की तस्वीर उनके विरोधियों को असहज करने के लिए काफी है।

पर विपक्ष द्वारा हवा दिए जा रहे इस मुद्दे को लेकर नरेन्द्र मोदी किसी भी एंगल से जिम्मेदार नहीं दिखते। एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग ने सोच-समझकर ही खादी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रधानमंत्री की चरखा चलाती तस्वीर का प्रयोग किया है। और लोकप्रियता के शिखर को चूमने वाले देश के इस सशक्त नेता की तस्वीर का प्रयोग करके आयोग अपना ही हित साध रहा है, इससे मोदी को कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं पहुंच रहा है।

प्रधानमंत्री की तस्वीर छापने को लेकर आयोग ने तर्क देते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री की चरखा चलाती यह तस्वीर १८ अक्टूबर, २०१६ की है जब प्रधानमंत्री ने खादी के उन्नयन के लिए पंजाब में ५०० महिलाओं को चरखा दिया था और राष्ट्रपिता के सपनों को साकार बनाने का बीड़ा उठाया था। इससे पहले १९४५ में गांधी जी के कहने पर कामराज ने ५०० चरखे बांटे थे और इन ७० सालों में किसी भी प्रधानमंत्री ने खादी को लेकर इतना उत्साह नहीं दिखाया।

मोदी हर मोर्चे पर गांधीजी के सपनों को साकार करने में डटे हुए हैं। वे देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जो खादी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए हर स्तर पर कोशिश कर रहे हैं। महात्मा गांधी के खादी के माध्यम से गांव गांव में रोजगार दिये जाने के विजन के साथ मोदी खादी को भी बढ़ावा देने में जुटे हुए हैं। यह उनकी मेहनत व लोकप्रियता का ही नतीजा है कि उनकी ओर से खादी का प्रमोशन किए जाने के बाद खादी ग्रामोद्योग आयोग के कारोबार में जोरदार वृद्धि हुई है। रेडियो पर 'मन की बात' कार्यक्रम समेत कई मंचों पर पीएम मोदी की ओर से खादी पहनने की अपील किए जाने के बाद से इसकी मांग में बड़ी बढ़ोत्तरी हुई है।

बीते साल १८ अक्टूबर को लुधियाना में एक रैली के दौरान भी उन्होंने 'खादी फॉर नैशन और खादी फॉर फैशन' का नारा दिया था। और इसके अगले ही रविवार यानी २३ अक्टूबर को दिल्ली के कनाट प्लेस स्थित खादी ग्रामोद्योग के आउटलेट में बिक्री चार गुना बढ़ गई थी और सिर्फ एक दिन में १.०८ करोड़ रुपये के सामान की बिक्री हुई। यह खादी उत्पादों की अब तक की सबसे ज्यादा सेल थी। गौरतलब है कि २२ अक्टूबर को यही सेल महज २७ लाख रुपये की ही थी।

इस तरह प्रधानमंत्री की सक्रियता से वित्त वर्ष २०१५-१६ में १५१० करोड़ रुपये के खादी उत्पादों की सेल हुई, जबकि २०१४-१५ में यह आंकड़ा महज ११७० करोड़ रुपये था। इस तरह एक साल के भीतर खादी उत्पादों की सेल में २९ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जबकी २०१४-१५ में खादी उत्पादों की सेल में ८.६ प्रतिशत की ही वृद्धि हुई थी। मौजूदा वित्त वर्ष में खादी ग्रामोद्योग आयोग के उत्पादों में ३५ प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान है। यही नही बल्कि खादी की लगातार बढ़ते मांग से उत्साहित आयोग ने २०१८ में ५००० करोड़ रुपये की सेल का लक्ष्य तय किया है। खादी उत्पादों की ऑनलाइन सेल को प्रमोट करने के लिए आयोग ई-कॉमर्स कंपनियों से भी बातचीत कर रहा है।

हाल ही में प्रकाशित मीडिया रिपोर्टों के अनुसार खादी को लेकर पीएम मोदी की अपील का जादू इस कदर लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है कि नोटबंदी के बावजूद दिसंबर में खादी एवं ग्रामोद्योग की वस्तुओं की बिक्री में सवा नौ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

आयोग के चेयरमैन वी.के.सक्सेना के अनुसार १००० और ५०० रुपये के पुराने नोटों को चलन से बाहर किए जाने के बावजूद आयोग की बिक्री प्रभावित नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि नोटबंदी के बाद शुरुआती दो-तीन दिन में बिक्री में कमी देखी गई लेकिन डिजिटल भुगतान के विभिन्न माध्यमों को प्रोत्साहन दिए जाने के बाद इसमें जल्द ही सुधार हो गया। और इसका पूरा श्रेय हमारे प्रधानमंत्री मोदी को ही जाता है।

अब विपक्ष चाहे माने या न माने पर यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि नरेंद्र मोदी यूथ आइकन हैं। वे वर्तमान समय में देश के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति हैं। उनकी तस्वीर से देश का युवा वर्ग आकर्षित होता है। लोग उनकी बात सुनते हैं। यह उनकी लोकप्रियता का ही नतीजा है कि आज वर्षों बाद खादी उद्योग पुनर्जीवित हो उठा है।

ऐसे में एक स्वायत्तशासी संस्थान द्वारा अपने उत्पादों के प्रमोशन के लिए जारी किए गए कैलेंडर और डायरी पर किसी भी लोकप्रिय व्यक्ति की तस्वीर छापने का उसे पूरा अधिकार है। और इसके लिए तस्वीर छपे व्यक्ति को निशाना बनाना इर्ष्या मात्र है। ऐसे में विपक्ष को भी चाहिए कि वे मोदी को बेकार में निशाना बनाने के बजाय खादी के विकास के लिए उनका सहयोग करें और गांधी जी के सपनों को साकार करने में अपनी भागीदारी निभाएं। ■

(पृष्ठ ७ का शेष) **भक्ति में दृढ़ता कैसे हो**

आप स्वच्छ, शांत और ध्यान की अवस्था में हैं। आपका चित्त उस परम तत्व मे लगा हुआ है। जब आप भक्ति में लीन रहते हैं तो उसमें आप संपूर्ण रूप से होते हैं। यह नहीं कि मन कहीं और है या मन पहले से ही कहीं व्यस्त है। भक्ति आत्मा की पुकार होती है। यह तब होती है जब आप परम तत्व को महसूस कर रहे होते हैं। जब आप अपनी परिसीमा और सीमाओं के संपर्क में आ जाते हैं, तब भक्ति अपने परम तत्व के संपर्क में आती है और आपको आत्म संतोष प्राप्त होता है। ■

वेलेण्टाइन-डे से बर्थ-डे तक

शरद सुनेरी

कबीर बाबा बड़े दूरदर्शी थे। वे जानते थे कि आनेवाले जमाने में भारत वर्ष का यौवन कुछ करे या करे, प्रेम अवश्य करेगा। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में 'प्यार' का कारोबार खूब फलेगा, फूलेगा, फैलेगा और पसरेगा। वे खुद तो प्यार न कर सके। करते भी क्या? जब प्रेमिका ढूंढने का समय था, तब गुरू ढूंढने में लगे थे। और वैसे भी उनको कोई लड़की प्रेम न करती। कारण? एक नहीं दो-दो हैं। पहला तो कौन बात-बात में उनकी झिड़कियाँ पसंद करती। और दूसरा, भला एक जुलाहे के पास कोमलांगियों को क्या मिलता? न अर्थ! न अलंकार!! ये बात और है कि दादा प्यार तो न कर सके किंतु प्रेमियों की पीड़ा की गहरी समझ उनको थी।

वे सच्चे समाजवादी थे, प्यार की फिलॉसफी को लेकर। क्या ऊँच-क्या नीच, क्या अमीर-क्या गरीब, क्या हिन्दू-क्या मुसलमान? सबको एक फार्मूला दे दिया, जो आज तक चला आ रहा है-'ढाई आखर प्रेम का पढ़े, सो पंडित होय।' कोई जरूरत नहीं पोथी-पुस्तक पढ़ने की। खूब प्रेम करो और पंडित बनो। वे जानते थे, भारत की भविष्यकालीन शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुखी भले की न हो, प्रेमोन्मुखी अवश्य रहेगी। बच्चे नर्सरी-केजी में जाकर कखगघ भले ही न सीखें पर 'आय लव यू' बोलना अवश्य सीख जाएंगे। लड़के-लड़कियाँ स्कूल-कॉलेज जाकर, मैट्रिक या स्नातक भले ही न हों पर गुरूकुल से प्रेमशास्त्र में निपुण होकर अवश्य निकलेंगे। वेलेण्टाइन-डे मनाएँगे। बड़े दूरदर्शी थे कबीर बाबा!

क्या करें? वेलेण्टाइन-डे मनाना हमारे युवाओं का राष्ट्रीय-पर्व है। या यूँ कहें, अंतर्राष्ट्रीय पर्व है। पुरानी कहावत थी कि जब बेटे के पैर में बाप का जूता आने लग जाए तो वह जवान हो जाता है। अब परिभाषा बदल गयी है- जब आपकी औलाद सिगरेट पीने लगे, तंबाकू खाने लगे, मदिरापान करने लगे, बदन उघाड़ू छोटे-छोटे कपड़े पहनने लगे, तो समझिये वह जवान हो गयी। और यदि वह वेलेण्टाइन-डे मनाने में रूचि लेने लगे, तो समझदार माँ-बाप को उनके हाथ पीले करने की सोचना चाहिए, वरना मुँह काला भी करवा सकता है।

आज वेलेण्टाइन-डे मनाना राष्ट्रीय धर्म होता जा रहा है, युवाओं के लिए। मैंने इस धार्मिक पर्व पर अनेक ऐसे लौंडों को अपनी प्रेमिकाओं को फूल देते देखा है जो माँ-बाप के लिए सिरदर्द की दवा तक नहीं ला सकते। जवानी, स्वाधीनता-दिवस, गणतंत्र-दिवस पर झंडा फहराने भले ही न जाएं, शहीद-दिवस पर भले ही मौन न साधें, पर वेलेण्टाइन-डे मनाने की तैयारी जोर-शोर से करती है। वह युवा असभ्य है, अशिष्ट है, अनपढ़ है, अज्ञानी है, अछूत है, अनिष्टकारी है, जो वेलेण्टाइन-डे नहीं मनाता। वेलेण्टाइन-डे न मनाना आधुनिकता के गाल पर तमाचा है। यदि वेलेण्टाइन-डे न मनाओगे तो, विश्व के बाकी देशों से पिछड़ जाओगे। "फिसड्डी कहीं के!"-अमेरिका, फ्रांस और इटली हमें कहेंगे।

इस धरती पर प्यार करने और उपहार देने का इतिहास सर्वाधिक पुराना है। संसार का सबसे पहले प्रेमी आदम ने, सबसे पहली प्रेमिका हौव्वा को, सबसे पहला गिफ्ट 'सेब' तोड़कर दिया था। आदम था, एक नंबर का माँसखोर। जानवरों को मारता, कच्चा खा जाता था, डकार जाता। उसे फल-फ्रूट से कोई लेना-देना न था। उसको इंटरेस्ट था-हौव्वा को सेब खाता देखने में। उधर हौव्वा ने फरमाइश की कि 'डॉर्लिंग, आय वांट देट एपल।' और आदम मियाँ झाँसे में आ गये। पिट गये बेचारे। दे दिया सेब तोड़कर हौव्वा को-ले खा।

आगे जो हुआ, वह जमाना जानता है। उसके बाद से जो गिफ्ट देने की पंरपरा आरंभ हुई तो, प्रेमी आज तक उसे निभा रहे हैं। कालान्तर में प्रेमी उस धराधाम पर अवतरित हुए और प्रेमग्रंथ में अपने नाम का अंगूठा लगाते रहे। सोहनी-महिवाल, हीर-रांझा, लैला-मजनू, रोमियो-जूलियट, नल-दमयंती को दुनिया के महानतम प्रेमी मानते हैं। पर वे हमारे मोहल्ले के पप्पू और पिंकी से बीस नहीं हो सकते, साहब! क्यों? अरे! पप्पू और पिंकी वेलेण्टाइन-डे मनाते हैं। इनमें से किसी ने मनाया, वेलेण्टाइन-डे, बताइए?

पिछली बारिश में नौजवानों का प्रकृति के प्रति बढ़ता प्रेम देखकर बड़ी खुशी हुई। सब मिलकर वृक्षारोपण कर रहे थे। मैंने उन्हें बधाई दी तो उनमें से एक बोला- 'श्रीमान जी ज्यादा खुश न होइए। हमें न फल खाने हैं और न पर्यावरण बचाने की ठेकेदारी हमने ले रखी है, समझे? वो तो अपनी गर्लफ्रेंड को लेकर बगीचे में जाओ ना, तो पुलिसवाले फालतू परेशान करते हैं। कितनी भी घनी झाड़ियों में घुसकर बैठो, ये कमबख्त वहाँ भी आकर उँगली करते हैं। हमलोग अपने फ्यूचर के लिए ये सब कर रहे हैं।'

सच बात है, बेचारे क्या करे? आजकल प्यार करने का प्रचलन इतना बढ़ गया है और जहाँ-तहाँ बिल्डर्स, बगीचे कम बिल्डिंगें बनाने में ज्यादा लगे हैं। और जहाँ थोड़े बाग-बगीचे बचे हैं, वहाँ तोता-मैना झाड़ के ऊपर कम, नीचे ज्यादा दीखते हैं- चोंच मिलाए। अब प्यार आँखें देखकर नहीं होता- 'मेरे मेहबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम।' नाऽऽ। अब तो प्यार पलक झपकते ही, आँखें बंद कर हो जाता है। और जब आँखें खुलती हैं तो आँखें मिलाने की हालत भी नहीं रह जाती, क्योंकि तब तक प्यार, बहुत-सी सीमाएँ लाँघ चुका होता है। तब वेलेण्टाइन-डे मनाने की नहीं, बर्थ-डे मनाने की तैयारी करनी होती है।

कई बार सोचता हूँ, आधुनिक बनते-बनते कहीं हम सच में असभ्य, अशिष्ट, अनपढ़, अज्ञानी, अभद्र, अश्लील और हाँ देश के लिए अनिष्टकारी तो नहीं होते जा रहे? ■

झुट्ठौ न बगर्‌यो बसंत है

अशोक मिश्र

अब तो पता ही नहीं चलता कि कब मुआ वसंत आया और चला गया। दरवाजे पर, खेतों में, बागों में, गली-कूचों में न कहीं वसंत की आहट सुनाई देती है, न पदचिह्न। ईमेल के जमाने में मुआ चिट्ठी-पत्री हो गया, अगोरते रहो साल भर। आता भी है, तो ह्वाट्स ऐप, लैपटॉप, फेसबुक, ट्विटर पर किसी पोस्ट के आने पर जिस तरह मोबाइल पर एलार्म रिंग बजती है, उसी तरह रस्म अदायगी के तौर पर वसंत पंचमी के दिन पीले कपड़े पहने, पीले फूल हाथों में लिए 'वर दे वीणावादिनि वर दे...' गाते बच्चे-बच्चियों को देखकर पता चलता है कि वसंत आ गया है।

हालांकि दिन-रात आंखें गड़ाने की वजह से मिचमिची आंखों और फास्टफूड खाने से पियराये इन बच्चे-बच्चियों के चेहरों पर थोड़ी मस्ती, थोड़ी शरारत के भाव नदारद ही रहते हैं। ऐसे में कैसे समझा जाए कि वसंत या तो कहीं आसपास है या आ चुका है। अब तो वसंत के आने पर जी में वह फुरफुरी ही नहीं उठती, जो कुछ दशक पहले तक दूर से ही किसी नवयौवना या नवयुवक को देखते ही युवा लड़के-लड़कियों के मन में उठती थी। चेहरा एकदम पलास हो जाता था। आंखें हजार सूरज की रोशनी लिए चमकने लगती थीं। नख से लेकर शिख तक मद छा जाता था। बसंत और फाल्गुन में तो बूढ़ी भौजाइयां, बूढ़े बाबा तक मदांध होने लगते थे। आम के साथ-साथ लोग बौराने लगते थे। अंतरतम में कहीं गहरे छिपी बैठी साल भर की दमित इच्छाएं और वासनाएं जैसे अंगड़ाइयां लेने लगती थीं।

मन से हुलास-उल्लास तो जैसे बिला गए हैं। न तो नौजवानों में कहीं वसंत दिखता है, न प्रौढ़ों और बुजुर्गों में। कई बार तो लगता है, महाकवि पद्माकर झुट्ठे लिख गए हैं कि 'बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में बनन में बागन में बगरयो बसंत है।' अब वसंत आता भी है, तो दबे पांव। आता है, तो उसके आने पर थोड़ी बहुत रस्म अदायगी होती है और चुपचाप विदा हो जाता है, जैसे कुघड़ी में आया हुआ मेहमान। मेहमान के आने पर अब जिस तरह किसी को खुशी नहीं होती है, वैसे ही प्रकति और मानव से निरादरित वसंत अपने प्राचीन गौरव को याद करता हुआ थके पथिक की तरह चला जा रहा होगा। प्राचीन वसंतकालीन विरहिणी नायिका की तरह बिसूरता होगा अरण्य में बैठकर।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

ग़ज़लें

कभी शब तो कभी सहर नहीं होती
जिन्दगी तनहा बसर नहीं होती
मान लो बात, लौट आओ तुम
अब तुम बिन गुजर नहीं होती
तुम होते हो तो खुशियां होती हैं
किसी गम की फिकर नहीं होती
इश्क कहते हैं कि अन्धा होता है
क्योंकि रूह की नजर नहीं होती
प्यार का हाथों में हाथ होता है
तब दुनियां की खबर नहीं होती
सुबह होती या शाम होती है
तेरी यादों की दोपहर नहीं होती
लगता है जज्बात एकतरफा है
वरना मुहब्बत बेखबर नहीं होती
तुम न लौटे तो हम ही लौट जायेंगे
इन्तजार की शब उम्रभर नहीं होती

-- साधना सिंह

मेरे आंगन नाच रही है, कुंदन सी चमकीली धूप
मन में बैरन आग लगाए, कैसी यह बर्फीली धूप
जमुना तट पर रोज नहाने, आती है सखियों के संग
गोरी-गोरी अलबेली सी, पागल सी यह शर्मीली धूप
चैन कहां आराम कहां है, अँखियन में है नीर कहां
रात अंधेरे उठ जाती है, साजन की मतवाली धूप
बिजली चमके जोर पवन का, निर्मोही घनघोर घटा
सोच रही हूं कब आएगी, सपनों की रखवाली धूप
गोरी अपना घूंघट ताने, यूं जाती है काली कोस
पेड़ों के उस छोर से जैसे, निकली हो शर्मीली धूप
खेतों में हल जोत के आए, ताक रहे हैं नील गगन
बस्ती-बस्ती सामान लाना,
रूठ के जाने वाली धूप
अबके बरस क्यों बदला-बदला
मौसम का है लगता रूप
कोमल-कोमल फूलों पर है,
नीली पीली काली धूप

-- मोनिका अग्रवाल

दिल में दिल का दर्द दबाये एक जमाना बीत गया
मेरे होंठों को मुस्काये एक जमाना बीत गया
आवाजें देती है मुझको यूँ तो ये सारी दुनिया
अपनों को आवाज लगाये एक जमाना बीत गया
दुनिया और जहां की बातें पल-पल हमने की लेकिन
मन को मन की बात बताये एक जमाना बीत गया
होठों पर मुस्कान सजाये गीत सुनाने वालों को
मन वीणा का साज बजाये एक जमाना बीत गया
केवल खाली पैमाने हैं तन्हाई की महफिल में
सागर से सागर टकराये
एक जमाना बीत गया
सावन आया बादल बरसे
लेकिन बरसे सागर में
मन सहरा को आस लगाये
एक जमाना बीत गया

-- सतीश बंसल

मुक्तक

किसी के कहने से मुहब्बत हो नहीं जाती
किसी के कहने से जान चली नहीं जाती
मौसम-ए-मिजाज को समझा करो जरा
किंतु रितु लंबे समय तक रह नहीं पाती

किसी की चाहत ने हमें दीवाना कर दिया
उसी की चाहत का हमने पैमाना भर पिया
यह कैसा जुनून यह कैसा सुरूर है छाया
जबसे उसकी चाहत का पैमाना भर पिया

रंग-रंग के फूल हैं पर उपवन एक है
भारतीय हैं हम सभी निश्चय तो नेक है
गर मिलाकर हम कदम निकलें एक ओर
बन गई मोतियों की माल समझो एक है

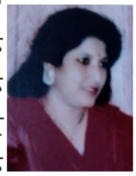

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

निराशा के समंदर में कभी मत उतरो
शक के दुशाले को कभी मत पहरो
खाक में मिला देती है ये सियासत
नफरत की चिंगारी को हवा मत दो

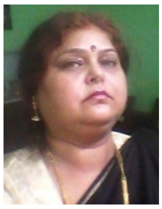

-- साधना अग्निहोत्री

गीत लिखना सरल गीत गाना कठिन
प्रीति करना सहज पर निभाना कठिन
दर्द काफिर दिए भावना तोड़कर
ज्ञान गगा बहे मन सजाना कठिन

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

लघुकथा

धन्धा

'क्या कहा ५०० रुपये, एक बार की परिक्रमा के वो भी रिक्शे में सिर्फ बच्चे को ही बैठना है, हम लोगों को नहीं।'

'साब, पूरे दिन मे एक ही परिक्रमा कर पाते हैं, मंहगाई में इस कमाई में घर चलाना भी मुश्किल है। चलिए ५० कम दे देना।' रिक्शेवाला गोवर्धन परिक्रमा को आये सेठ सेठानी से बडी ही आशा भरी नजरों से देखते हुए बोला।

'नहीं, ३५० से ज्यादा नहीं दूंगी।'

'क्या करती हो भाग्यवान, बडी मिन्नतों से बेटा पाया है और तुम मोल-तोल करने लगीं। ये भी हमारे पुण्य का हिस्सा है जो हमारे साथ पूरी परिकथा में साथ देगा.. चल मेरे भाई पूरे ले लेना।'

'तुम नहीं समझ रहे, ये तो इनका धन्धा है।'

'नहीं भाग्यवान! धन्धा तो हम लोग करते हैं, ये लोग तो मेहनत करके अपना परिवार चलाते हैं। चल मेरे भाई, बैठा ले बच्चे को।'

रिक्शेवाला उनको बहुत सारे शुभाशीष दे रहा था।

-- रजनी बिलगैयां

अंदाज मेरे तुम हो अल्फाज भी तुम्हीं हो
धड़कन तुम्हीं हो मेरी आवाज भी तुम्हीं हो
होना न दूर मुझसे तुम बिन न जी सकूँगी
हो साँझ मेरी दिन का आगाज भी तुम्हीं हो

तुमसे जुड़ी हैं धड़कनें साँसों की डोर है
देखूँ न जब तलक तुझे होती न भोर है
तेरी निगार आँख ये हरसू तलाशती
खामोशियाँ फैली हुईं 'गुंजन' न शोर है

-- अनहद गुंजन 'गूँज'

कभी मैं रूठ जाऊं तो मनाने पास आते हो
कभी होती नजर से दूर तो तुम ढूंढ़ लाते हो
यही तो है अनोखा प्यार जो सबको नहीं मिलता
तुम्हें भुला न पाऊं क्यों इतना याद आते हो

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

उबलते जज्बात पर चुप्पी खामोशी नहीं होती
गमों की जड़ता से सराबोर मदहोशी नहीं होती
तन के दु:ख प्रारब्ध मान मकड़जाल में उलझा
खुन्नस में बयां चिंताएँ सरगोशी नहीं होती

-- विभा रानी श्रीवास्तव

अगर दो पंख बेटी को छुएगी आसमां इक दिन
कहेगा ये जहां सारा इसी की दासतां इक दिन
भरेगी कल्पना जैसी उडानें देखना ये भी
करेगा नाज इस पर देखना हिन्दोस्तां इक दिन

करोगे मान कर उनका तुम्हें सम्मान देंगे वो
करोगे गर जरा परवाह तुम पर जान देंगे वो
बचाकर तुम बुजुर्गों की अगर पहचान रख लोगे
मेरा दावा है की तुमको नयी पहचान देंगे वो

-- सतीश बंसल

ग़ज़ल

इंसान इंसानियत को भूल जाता है क्यों
छोटा होकर ये खुद बड़ा बताता है क्यों
खुद अपने जिन्दगी में भटका हुआ पड़ा
फिर दूसरो को ये रास्ता दिखाता है क्यों
इनके दिलों में पलते है मतलब के सबब
फिर खुद ही बड़ा शरीफ जताता है क्यों
तु गैरों से भी बदतर है हम सभी के लिए
मेरे सामने यूँ मेरे ही कशीदे गाता है क्यों
यूँ कहता है मैं सबका भला करता रहा हूँ
अगर जो किया तो यूँ फिर बताता है क्यों
खैरात नहीं चाहिये कहता फिरता है फिर
तोड़के सबके सपने
अपने सजाता है क्यों
अब भी समय है जैसे
हो वैसा दिखा करो
अपने चेहरे पर इतने
चेहरे लगाता है क्यों

-- बेखबर देहलवी

विश्व व्यापी हिंदी का भारतीय मोड़

धनंजय वितानगे, श्री लंका

हिंदी एक ऐसा जादू है, जो मानवों के हृदय पर नित्य हमला कर रहा है और मानव भी अपने-आप उसकी ओर खिंचा जा रहा है। इसका सबसे प्रमुख कारण हिंदी की अनेकता है। प्रयोग, क्षेत्र, मानव के मन:स्थिति आदि की पहलुओं पर आधारित हिंदी की अनेकता मानव की मन:स्थिति के अनुकूल अनेक रूप धारण करते हुए जबान पर चढ़ती है। दुख, प्रेम, प्रसन्नता, हर्ष, अकेलापन, मस्ती, दुष्टता आदि मानव की हर किसी भावना से जुड़ी हुई हिंदी की अलग-अलग पहचान है, जिनके द्वारा श्रोताओं में भी उसी भावना का उत्पादन कर दिया जाता है।

आज विश्व के लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं में हिंदी तृतीय स्थान पर खड़ी है, और द्वितीय स्थान पाने की ओर जा रही है। १९वीं शताब्दी में ब्रितानी और फ्रेंच में उपनिवेश में रखे गये भारतीय शर्तबंद मजदूरों के साथ आरंभ हुई प्रवासी भारतीयों की हिंदी आज 'प्रवासी हिंदी' नाम को लेकर विश्व भर घूम रही है। आज उसका बढ़ाव मारीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड-टुबैगो, बर्मा, थाईलैंड, नेपाल, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, नार्वे आदि लगभग सौ से अधिक देशों तक हुआ है, बल्कि उसके प्रयोगकर्ताओं की संख्या २ करोड़ से बढ़कर है। मातृ भाषी भारत वासियों की हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'विश्व भाषा' का रूप धारण कर चुकी है और अन्य विदेशी भाषियों में संपर्क भाषा के रूप में लोकप्रिय हो रही है। वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी जिस मोड़ पर ठहरी है, जिसके पीछे हिन्दी सिनेमा की विराट भूमिका है, वहाँ से अनेक रास्ते खुल चुके हैं, जिनसे हिंदी रूस, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, रूमानिया, चीन, जापान, स्वीडन, पोलैंड, आस्ट्रेलिया, मैक्सिको, श्री लंका आदि देशों तक पहुँच चुकी है।

एक ओर विश्व भाषा हिंदी जितनी स्वावलंबन हो रही है, दूसरी ओर राष्ट्र भाषा हिंदी उससे कई ज्यादा घट रही है। आज हिंदी विदेशी भाषाभाषियों को हिंदी प्राध्यापक बना रही है, भारत उसी हिंदी को एक ऐसा मोड़ पर ले आया है, जहाँ से निकलती गलियों पर हिंदी को कम महत्व मिलना रुकता नहीं। इतनी परिष्कृत हिंदी, जिसके पीछे विराट इतिहास है भारत में दिन पर दिन घुल रही है, जिससे वास्तविक भारतीय पहचान विकृत हो रही है, क्योंकि हिंदी का उत्तर भारतीय संस्कृति से अटूट रिश्ता है, जिसे मानव के अपनापन तथा एकता का एक स्रोत कहना तर्कसंगत होगा।

हिंदी का इतिहास भारत के आर्यों की भाषा वैदिकी संस्कृत तक दौड़ता है। (१५०० ई. पू. के आसपास) तब से हिंदी की पैदाइश होने तक भारत में कालक्रमानुसार जिन भाषाओं का प्रयोग होता रहा उन सभी का समावेश हिंदी के सूत्रपात से है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक ओर अंग्रेज भारतीय संस्कृति का ध्वंस कर रहा था, तब भी हिंदी में उनसे ठोकरे खाते हुए राष्ट्र भाषा संग्राम में भी मुसलमानों की भाषा उर्दू से टकराने की शक्ति इसलिए थी, क्योंकि हिंदी एक भाषा ही नहीं ठहरी, बल्कि भारतीयों की संपर्क करने की संस्कृति भी रही। आज हिंदी स्वतंत्र भारत की राष्ट्र भाषा है। उत्तर भारत के दस राज्यों की राज्य भाषा है, पूरे भारत की जनता की संपर्क भाषा है। सन् १९४७ में मिली स्वतंत्रता के साथ अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा, अपितु उनहोंने अपने जिन चीजों को भारत में छोड़ आया है, उनके द्वारा तभी से भारतीयता को गोरा बना दिया जा रहा है। उस शिकारी की ओर हिन्दी का जुजरना दिन-ब-दिन तेज हो रहा है। आज वह दशा यहाँ तक पहुँच गयी है कि अपनी मातृ भाषा हिंदी में संपर्क करना लोग शर्म की बात समझते हैं।

समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं की हिंदी में शब्दोच्चारण तक बदलाव आ गया है। शब्दों में चंद्रबिंदु चला ही गया है, उसकी कमी बिंदी ने पूरा कर दी है। 'ज़' का भी वही स्थिति, जिसकी कमी 'ज' पूरा कर रहा है। इसका फलस्वरूप पाँच का पांच, गाँव का गांव, आँगन का आंगन हो गया है तो, सजा का सजा, जरूर का जरूर और मजा का मजा। दूसरी ओर समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की हिंदी का क्रमशः अंग्रेजीकरण हो रहा है। हर विज्ञापन के, हर आलेख के, हर कविता के हर अनुच्छेद में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होना आम बन चुका है। कभी-कभी हिंदी विज्ञापनों में पूरा अंग्रेजी वाक्य तक छपता है।

दूरदर्शन तथा रेडियो के स्तर पर प्रस्तुतकर्ताओं तथा आख्यापकों के द्वारा अपने प्रस्तुतीकरण में जिस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, वह इतनी अशुद्ध है कि किसी शुद्ध भाषा की कल्पना करना न मुमकिन हो गया है। इनकी हिंदी का व्याकरण बेडौल बन गया है। लिंग का एहसास चला ही गया है। वाक्यों की शुरूआत हिंदी में, किन्तु उसका अंत अंग्रेजी में, बल्कि उर्दू का भी समावेश। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशियों के हृदय तक हिंदी पहुँचाने का वाहक बालीवुड की दुनिया है, लेकिन आज वह दुनिया आधे से ज्यादा अंग्रेजीकारण बन चुकी है। उनके संवाद, गीत ही नहीं चलचित्रों के नाम भी अंग्रेजी में निकलने लगे हैं। सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि हिंदी चलचित्रों के संवाद का लिपिबद्धीकरण अंग्रेजी लिपियों से होता है। बालीवुड की दुनिया, जो उत्तर भारतीय संस्कृति पर निर्भर थी तथा उसकी हिंदी माध्यम से अलग पहचान थी, आज उसी दुनिया में गुजरनेवाला मानव-संसाधन की हिंदी टूटी-फूटी हो गयी है, आधी अधूरी रह गयी है।

भारत की गली गली पर हिंदी के साथ अंग्रेजी भी गूँजने लग गयी है। आम जनता की मन:स्थिति यहाँ तक बदल गयी है कि वे हिंदी के साथ कोई कमी का अनुभव करने लगे हैं। अंग्रेजी दृष्टिवाद की जड़ों ने हिंदी को भी घेर लिया है। अंग्रेजी पैंट, कमीज तथा चश्मा पहनने के बाद हिंदी में बोलना शर्म की बात समझी जाती है। भारत की नयी पीढ़ी ढेर सारे हिंदी शब्द, उनके मानक उच्चारण नहीं जानती, जो उनकी गलती नहीं, दृष्टिवाद का प्रभाव है, यह वातावरण उसकी पुरानी पीढ़ी के द्वारा निर्माण किया गया है।

हिंदी व्याकरण पर कार्यरत फ्रांस के डॉ. निकोल बलबीर के द्वारा फ्रेंच भाषियों के लिए 'हिंदी मैनुअल' तैयार किया गया है, तो भारतवासियों के द्वारा अपने बच्चों की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी बना दी गयी है। अमेरिका में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी समझने और सीखनेवालों की संख्या लाखों में है, तो भारत में अंग्रेजी को मातृभाषा का पद मिल रहा है। जापान के प्रो. क्यूया दोई के द्वारा 'हिंदी-जापानी कोश' तथा 'जापानी-हिंदी कोश' की रचना की गयी है, तो भारत के हिंदी कोश ग्रंथ पुस्तकालयों में छिपे जा रहे हैं। श्री लंका तथा चीन में हिंदी की प्राध्यापक प्रजा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और स्कूली शिक्षा के बाद हिंदी की पंचवर्षीय स्नातक पढ़ाई की व्यवस्था की गयी है तथा बी.ए., एम.ए., और पीएच.डी. की भी व्यवस्था की गयी है।

राष्ट्र भाषा आंदोलन में १४ सितंबर १९४९ को संविधान सभा के द्वारा हिंदी राष्ट्र भाषा के रूप में घोषित की गयी, जो हिंदी की बहुत बड़ी जीत रही। उसी जीत के मनाने तथा भारत के अहिंदी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने हेतु सन् १९५३ सितंबर १४ से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के द्वारा पूरे भारत में हिंदी दिवस मनाने का आयोजन किया गया। आज यह तिथि भारतीयों को हिंदी की याद दिलाने का साधन मात्र बनती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जब १० जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाते हुए दूसरे देशों के करोड़ों जनता हिंदी को अपना रही है, भारतवासी उसी हिंदी से अपना रिश्ता बताना 'गँवारापन' समझने लगे हैं।

अंग्रेजी संस्कृति की सफलता यहाँ तक पहुँच गयी है कि जब अंग्रेजों को भारत छोड़े ७० वर्ष हो रहे हैं, तब अंग्रेजी संस्कृति का बच्चा किशोर बनकर खड़ा हो रहा है। इस माहौल में अंग्रेजी हर किसी को खास बना ही देती है, किंतु हिंदी उन्हें आम बना देती है। श्री लंका के केलणिय विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक उपुल रंजित हेवावितानगमागे का कहना है, 'भारत से ज्यादा श्री लंका में हिंदी सुरक्षित है।' लिखने तथा बोलने के लिए प्रामाणिक व्याकरण से युक्त, संस्कृत, पालि, अपभ्रंश जैसी गहरी भाषाओं से होते हुए उपजी, विभिन्न शैलियों, प्रयोगों के विचार-विमर्श से बनी मानक हिंदी, जो स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध उठा भारतीय वीरों का नुकीला अस्त्र रहा, आज उन्हीं के द्वारा उसी अंग्रेजी को अस्त्र बनाकर जान-बूझकर अपने महान शिष्टाचार का ध्वंस किया जा रहा है।

बाल कहानी

क्लास में सफाई

कल्पना भट्ट

स्कूल में आते ही बच्चों का ध्यान मुख्य पटल पर पड़ा जिस पर लिखा हुआ था- 'इस माह से स्कूल प्रबन्धक कमिटी ने तय किया है कि स्वच्छता अभियान के तहत जो क्लास सबसे ज्यादा साफ मिलेगी, उस क्लास को इनाम के तौर पर साल के अंत में एक ट्रॉफी मिलेगी और जो क्लास सबसे ज्यादा गन्दी मिलेगी उसको भी एक ट्रॉफी मिलेगी।'

बच्चों में एक उत्साह दिखा, पर सब सोच में पड़ गये गंदगी के लिये ट्रॉफी! किसी को भी यह बात समझ में नहीं आयी। बच्चों ने प्रयास किया कि इस बारे में जानकारी हासिल कर पायें, पर इस विषय में किसी को कुछ भी नहीं पता था और न ही अध्यापकों ने उनको कुछ बताया।

खैर, सब अपने क्लास को बेहतर बनाने में लग गये। विद्यार्थीगण बेहतर से बेहतर तरीके से क्लास को सजाने में, साफ-सुथरा रखने में लग गये। धीरे धीरे स्कूल में सफाई दिखने लगी और आसपास के रहने वालों को जब इस बात का पता चला, तो स्कूल के बच्चों की मिसाल देने लगे। धीरे-धीरे अपने अपने घर और प्रांगण भी साफ-सुथरे दिखायी देने लगे।

इन सबसे अलग स्कूल में एक क्लास ऐसी थी, जिसमें कोई जाना पसंद नहीं करता था, कई बार शिक्षक के कहने पर वहां सफाई हो जाती, पर वापिस वही का वही हाल, जगह-जगह कागज, बच्चों के लंच का कचरा आदि पड़े हुए। बाई साफ करती रहती थी पर इस क्लास के बच्चे टस से मस नहीं हुए।

साल खत्म होने को आया, अवॉर्ड मिलने का समय आ गया, सबके मन में यह प्रश्न था इनाम किस क्लास को मिलेगा? गंदगी के लिए तो क्लास तय थी पर सफाई के लिए? आखिर वह समय भी आ ही गया। प्रिंसिपल सर ने अवार्ड घोषित करवाये और स्वयं अवार्ड वितरण किये।

अब क्या था, सफाई रखने के लिए तालियों की बौछार शुरू हुई, तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। हर क्लास को किसी न किसी वजह से अवार्ड प्राप्त हुए। और गन्दी क्लास को भी जैसा कि बताया गया था, एक अवार्ड प्राप्त हुआ।

सबकी ट्रॉफी पर कुछ न कुछ लिखा हुआ था। गन्दी क्लास के लिए भी लिखा हुआ था- 'स्कूल की सबसे गन्दी क्लास'।

अब क्या था, इस ट्रॉफी को लेने क्लास के मॉनिटर को जाना था स्टेज पर, सो वो गया पर ट्रॉफी प्राप्त करते वक्त वहां तालियों की जगह लोगों की हंसी सुनाई दे रही थी। मॉनिटर ने स्टेज से अपनी क्लास के दूसरे बच्चों की तरफ देखा, सबकी नजरें झुकी हुई दिखीं। उसको शर्मिंदगी महसूस हुई और वो स्टेज पर ही रो पड़ा।

उसको रोता देखकर प्रिंसिपल सर ने उसके सर पर प्यार से हाथ फिराया और स्कूल को सम्बोधित करते हुए बोले, 'बच्चो, मैं जानता था यही होगा, पर मुझे खुशी है कि देर से ही सही पर इस क्लास को अपनी गलती का एहसास हो गया है। यह अवार्ड सिर्फ सबक सिखाने के लिये घोषित हुआ था। उम्मीद करता हूँ कि आगे से ऐसी गलती कोई न करेगा।'

धीरे-धीरे हुआ यह कि इस स्कूल की चर्चा अखबारों में होने लगी और अपने एरिया की सबसे बेहतरीन स्कूल में इसको सम्मानित किया गया। सरकार द्वारा भी इस स्कूल को अनेक अवार्ड प्राप्त हुए। ■

शिशु गीत

मम्मी देखो मेरी डॉल, खेल रही है यह तो बॉल
पढ़ना-लिखना इसे न आता, खेल-खेलना बहुत सुहाता
कॉपी-पुस्तक इसे दिलाना,
विद्यालय में नाम लिखाना
मैं गुड़िया को रोज सवेरे,
लाड़ लड़ाऊँगी बहुतेरे
विद्यालय में ले जाऊँगी,
क.ख.ग.घ. सिखलाऊँगी

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

१. होली

होली जमकर सभी मनाएँ, गुझिया, मालपुए भी खाएँ
ध्यान रहे जो नहीं चाहता, भूल न उसको रंग लगाएँ

२. पिचकारी

भैया बड़ी एक ले आया, दीदी ने छोटा मँगवाया
पिचकारी मैं नहीं चलाता, गुब्बारों से काम चलाया

३. रंग बरसे

तितली को मैं आज चिढ़ाती, रंगों से इतना पुत जाती
मुझको बहुत पसंद पर्व ये, मस्ती लेकर होली आती

४. गुलाल

मुझे गुलाल अधिक भाते हैं, बिन पानी वे हट जाते हैं
गालों पर खिलते मुस्काकर, गीत बहारों के गाते हैं

५. मालपुए

मालपुए की बात निराली
सजा सभी की देता थाली
होली इसके बिना न होती
देख इसे मैं तो मतवाली

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविताएं

मैंने इक सपना देखा था, मैं छोटा-सा सैनिक हूं
अपनी छोटी-सी वर्दी में, देश बचाता सैनिक हूं
अपने झंडे की रक्षा में, मिटने वाला सैनिक हूं
जीवन भर इसकी जयकार,
बढ़ने वाला सैनिक हूं
हे प्रभु तुम हो बड़े दयालु,
सपना यह पूरा कर दो
देश के काम में लगा रहूं मैं,
ऐसा मुझको शुभ वर दो

-- लीला तिवानी

बच्चों की टोली लगती हैं प्यारी
रंग बिरंग के खेल, खेलते हैं बिन मेल
लुका छिपी दौड़ा दौड़ी, बताऊं कितने खेलों के नाम
सब उनके मन को भाता
खेल के आगे बच्चों को कुछ नहीं सुहाता
खाने की फिकर नहीं, नहीं नहाने को रहता है
अपने शिक्षक के डर से
स्कूल जाने के लिए बस
तैयार होना आता है
मां पीछे लगी रहती
अपने बच्चों को खिलाने को
बच्चों को होश कहां
खेल से छुटकारा पाने को

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

लघुकथा

नई परम्परा

'यह असंभव है. हमारे यहां ऐसा नहीं होता है', उसके ताऊजी ने जमकर विरोध किया. 'तुम्हारी मां और तुम जो चाहे जो करो, मगर यह नया रिवाज यहाँ नहीं चल सकता!', काका ने भी आदेश सुना दिया.

'क्यों नहीं चल सकता? जब हमारे समाज में कन्यादान हो सकता है तो पुत्रदान क्यों नहीं हो सकता?'

'यह हमारी परंपरा के खिलाफ है. हम ऐसा नहीं होने देंगे.' ताऊजी ने काका के सुर में सुर मिलाए.

'यह मेरी मां के जीवन सवाल है. हम जैसा चाहे वैसा कर सकती हैं.' रीना ने प्रतिरोध किया तो ताऊजी दबंगाई से बोले, 'कभी अपनी मां से पूछा है. वह ऐसा करना चाहती है या नहीं?' तभी मां आ गई, 'तुम्हारे ताऊजी ठीक कह रहे हैं. मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगी.'

'हां मां! मुझे पता है. आप ऐसा क्यों कह रही हो, क्योंकि आप अपनी होने वाली दुर्दशा नहीं देख सकती है. मगर मैं देख रही हूँ इसलिए आपसे कह रही हूँ.'

माँ को चुप देखकर रीना फिर बोली, 'मां! आप जवानी में नानाजी के डर से अपने प्रेम का इजहार नहीं कर सकी. मगर, अब जब पापा ही नहीं रहे हैं तब आप अपने प्रेम को इजहार करने से क्यों डर रही है?'

'समाज क्या कहेगा? यह तो सोचो बेटी?'

'मां! हमें उसकी परवाह करना चाहिए जो हमारी परवाह करता है. फिर हमारे नए पापा खुद इस नई परंपरा को निभाकर हमारे घर आने को तैयार हैं.' यह सुनकर मां धम्म से बैठ गई और सोचने लगी।

-- ओम प्रकाश क्षत्रिय

बाल लेख

आइए कविता लिखना सीखें-१

प्रिय बच्चो, सदा खुश रहो,

आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं!

यह पत्र हम आपको होली से कुछ दिन पहले ही लिख रहे हैं. इस महीने से हम आप सबको एक नई कला का अभ्यास करवा रहे हैं. इस कला का नाम है- लेखन कला और लेखन कला में भी काव्य कला.

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके अंदर भी लेखन कला का हुनर अवश्य विद्यमान होगा. आइए तनिक लेखन में काव्य-कला को उभारने की कोशिश करें. गणतंत्र दिवस पर हम देशभक्तिपूर्ण गीत-कविताएं गाते-सुनते हैं. आप चार-चार पंक्तियों की सरल कविता लिखने का प्रयास करें. एक उदाहरण-

"भारत प्यारा देश हमारा,
हम सब की आंखों का तारा,
कोशिश कर इसे और संवारें,
तभी बनेगा जग का प्यारा."

इसी तरह किसी का जन्मदिन हो, तो हम लिख सकते हैं-

"खुश रहिए हमेशा, यह दुआ है हमारी,
राह तकें बुलंदियां, सदियों तक तुम्हारी,
जन्मदिन आपका प्रेम से मनाने को,
कतार बांधे खड़ी है कायनात सारी."

पहले सर्दी, गर्मी, वर्षा, बसंत, फूल, माता, पिता, बहिन, भाई, गुरु यानी किसी भी विषय पर चार-चार पंक्तियां लिखना शुरु कीजिए, फिर भाषा में भी सरल से कठिन की तरफ चलते जाइए और पंक्तियां भी बढ़ाते जाइए. हमने अपने स्कूलों में ऐसे बहुत-से छात्रों को कवि और कहानीकार यानी साहित्यकार बनने को प्रेरित किया है. आज वे बहुत बड़े-बड़े लेखक बन गए हैं.

हम इस साल कविता के क्षेत्र में इस प्रयोग को जारी रखने की कोशिश करेंगे. आप कमेंटों में कविताएं लिखकर भेजेंगे, तो हम आगामी पत्र में इसे आपके नाम-सहित प्रकाशित करेंगे.

आशा है, आप कविता लिखना सीखने में रुचि लेंगे.

इसी आशा के साथ-

आपकी नानी-दादी जैसी,

-- लीला तिवानी

बाल कविताएं

काले रंग का चतुर-चपल, पंछी है सबसे न्यारा
डाली पर बैठा कौओं का, जोड़ा कितना प्यारा
नजर घुमाकर देख रहे ये, कहाँ मिलेगा खाना
जिसको खाकर कर्कश स्वर में, छेड़ें राग पुराना
काँव-काँव का इनका गाना, सबको नहीं सुहाता
लेकिन बच्चों को कौओं का, सुर है बहुत लुभाता
कोयलिया की कुहू-कुहू, बच्चों को रास न आती
कागा की प्यारी सी बोली, इनका मन बहलाती
देख इसे आँगन में, शिशु ने बोला औआ-औआ
खुश होकर के काँव-काँव कर, चिल्लाया है कौआ

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

बाल पहेलियाँ

(१) बदले सबके रंग, मचा-मचा हुड़दंग
पहले डरते लोग, आते फिर सब संग
(२) बंधु रजाई का अंतर है बस ये
वो सबके ऊपर, ये सबके नीचे
(३) सबके सिर को थाम, करे रातभर काम
नहीं समझना टोप, चलो बताओ नाम
(४) सबकी गर्दन पर ब्लेड भिड़ाता रोज
लेकिन सारे लोग,
करते इसकी खोज
(५) इसके सिर को छील,
पीते सब ही नीर
बोलो उसका नाम,
जिसकी ये तकदीर

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ १३ पर देखिए।)

बाल कहानी

खुशी के आंसू

शशांक मिश्र भारती

कोमल एक गरीब मां-बाप का बेटा था किसी तरह मेहनत मजदूरी करके सभी का गुजारा चलता था। कभी-कभी काम न मिलने पर चूल्हा एक बार ही जलता। उनके पास इतने पैसे नहीं हो पाते कि कोमल को उसकी पसन्द के कपड़े दिलवा पाते। फिर भी वह सन्तुष्ट था। कोई शिकायत न थी।

कोमल के साथी जब स्कूल जाने लगे तो उसने भी अपनी मां से कहा- 'मां! मेरे साथ के सभी दीपक रमेश सूरज दीपा हेमा गीता आदि स्कूल जाने लगे हैं। मैं भी जाऊंगा।'

'बेटा तुम्हारे पास स्कूल ड्रेस और पढ़ने के लिए किताबें कहां से आयेंगी? घर का खर्च बड़ी मुश्किल से चलता है। केशव लाला का ही कई-कई महीने का उधार हो जाता है।' उसकी मां ने समझाते हुए कहा।

मां मैं अपना खर्च अपने आप उठाऊंगा। मेहनत- मदूरी कर लूंगा। छोटा हूं तो क्या हुआ। अपने भर को पैदा कर ही लूंगा।'

'बेटा यह उम्र कहीं काम करने की होती है। खैर शाम को तेरे पापा से पूछती हूँ।' मां ने कहा।

पूरी बात पता लगने पर कोमल के पापा तैयार हो गए। कोमल ने समीप बह रही नदी से बजरी और रेत निकालने के लिए ठेकेदार से बात की। उसे कुछ रुपये एडवांस मिले। उन रुपयों से कोमल ने अपने स्कूल की ड्रेस और कुछ किताबें खरीद ली। अगले दिन सुबह-सुबह ही आस-पास के बच्चों को खुश खबरी दे डाली- 'दीपक सुरेश गीता आओ! देखो मैंने कितने अच्छे कपड़े बनवाये हैं। स्कूल के लिए किताबें भी खरीद ली हैं। मैं आज से तुम लोगों के साथ स्कूल जाऊंगा।'

कोमल का उसके पापा ने गांव के स्कूल में दाखिला करवा दिया। वह मन लगाकर मेहनत से पढ़ने लगा। स्कूल से छुट्टी के बाद ठेकेदार के यहां रेता-बजरी निकालता । 'अरे! कोमल तुम इतनी कम उम्र में ऐसी लगन से काम करते हो क्या बात है।' ठेकेदार ने पूछा

'कुछ नहीं ऐसे ही।' कोमल ने ठेकेदार की बात का जबाब देते हुए कहा।

'नहीं बताओ तो हम भी जाने।'

'मैं पढ़लिखकर बड़ा बनना चाहता हूँ। ताकि मेरे माता-पिता को मेहनत-मजदूरी न करनी पड़े। मेरे छोटे भाई-बहन अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ें।' कोमल ने ठेकेदार की जिज्ञासा को शान्त करते हुए कहा। ठेकदार पर कोमल की बातों का गहरा असर पड़ा- 'बेटा मुझे तुम्हारे विचारों को जान कर बहुत प्रसन्नता हुई। आज से तुम्हें मेरे यहां रेता-बजरी निकालने की आवश्यकता नही है। मैं तुम्हरी पढ़ाई-लिखाई का पूरा खर्च उठाऊंगा तथा हेड मास्टर से कहकर छात्रवृत्ति भी दिलवाऊंगा। तुम बस मन लगाकर अपनी पढ़ाई करते रहो।'

ठेकेदार के मुँह से ऐसा सुनकर कोमल की आंखें खुशी से छल-छला उठीं। वह उसके पैरों में लिपट कर रो पड़ा।

'नहीं! नहीं!! पैरों मे नहीं गिरते। तुम्हारी बात ने तो मुझे बहुत प्रभावित कर दिया है। काश! ऐसी भावना इस देश के प्रत्येक बालक में पैदा हो पाती।' ■

बाल गीत

हम बच्चे हिन्दुस्तान के, हम बच्चे हिन्दुस्तान के
शीश झुकाना नहीं जानते, शीश कटाना ही जाना
मेरा मजहब मुझको प्यारा, पर का मजहब कब माना
गोविन्द सिंह के वीर सिंह, हम पले सदा तलवारों में
अपने बच्चे चिनवा डाले, जीते जी दीवारों में
रग-रग में है स्वाभिमान, हम चलते सीना तान के
राणा-सांगा के हम वंशज, और शिवा के हम भाई
परवशता की बेड़ी काटी, और घास की रोटी खाई
स्वाभिमान की जलती ज्वाला, हम जौहर राजस्थान के
इंगलिश भारत माँ के गहने, हिंदी है माता की बिंदी
गुजराती परिधान पहन कर, गाना गाते हम सिंधी
शांति-दूत, हम क्रांति-दूत, हम तारे नील वितान के
हम बच्चे हिन्दुस्तान के

-- आनन्द विश्वास

(दूसरी और अंतिम किस्त)

थके पाँव

रवि शुक्ल

यदि पिता रोयेगा तो उससे उसकी कमजोरी प्रतीत होगी। अब कौन समझाए इस समाज को कि सोहनलाल एक पिता ही नहीं 'माँ' भी थे। माँ के सारे फर्ज तो निभाए थे उन्होंने।

मुन्नी उस रोज हँसते-हँसते रुक नहीं पा रही जब पहली बार सोहनलाल ने उसकी चोटियाँ बनाई थी। उन चोटियों ने जो रूप लिया था वो एक तरफ पर मुन्नी की हँसी से सोहनलाल बड़े शर्मिंदा हुए थे। बस फिर क्या उस दिन से जैसे ही मुन्नी स्कूल से घर आती सारे काम-धाम छोड़कर वे चोटी बनाने का अभ्यास करने लगते। अब तो मुन्नी की स्कूल की शिक्षिकाएँ भी उसकी चोटी को देखकर तारीफ किए बिना न रह पाती थी।

सोहनलाल को कई ऐसे मौके मिले जब मुन्नी के कारण उन्हें सम्मान मिला था। दफ्तर में मुन्नी के हाथ से बने खाने की तारीफ से उनका पेट यूँ ही भर जाता और सारा खाना खुद न खाते हुए बाँट आते थे। कल से किस खाने की तारीफ सुनेंगे। अब कानों का क्या होगा। जिसे मुन्नी की तारीफ, उसके शब्द सुनने की आदत हो गई थी।

सुबह की पहली किरण के साथ ही अंतिम मेहमान ने भी बिदाई ली। सभी ने जाते हुए सोहनलाल को बहुत समझाया। सभी के उद्‌गार सुन सोहनलाल और दुखी हो गए। उनके दुःख का कारण यह रस्म थी। सभी ने कहा, 'बेटी तो पराया धन होती है, सोहू। पराए धन को अपने घर में कौन रख सका है?'

आज सोहनलाल खुद से पूछ रहे थे, 'मेरी मुन्नी मेरे लिए पराया धन कैसे हो सकती है।'

घर पर शामियाना उतारने वालों ने दस्तक दी। सोहनलाल का जी चाहता है कि जवाब में कह दें कि कुछ और दिन नहीं रहने दे सकते इस शामियाने को? इन्हें ही देखकर उसकी याद में जीवन गुजार लूँगा। शामियाना उतर गया। रोशनदान से रोशनी गायब हो चुकी थी। घर का रोशनदान आज मध्यम हो गया था।

शामियाने वाले का बिल चुका कर उन्होंने सामान समेटना शुरू किया। कहाँ से शुरू करें। उनकी समझ में नहीं रहा था। एक तरफ उन्हीं में यादें थी, दूजे उन्हीं को समेटने की जिम्मेदारी भी।

हृदय की परीक्षा का समय आ गया था। जिन सपनों को बनाने में साल लगा दिए, वह सभी एक ही पल में ध्वस्त हो गए। जिस शादी के पहले उत्साह था। चेहरे पर उमंग थी। बेटी के अरमानों को पूरा करने का आत्मविश्वास था। आज वही सब कुछ तो रह गया था। बचा ही क्या था। अपना सबकुछ तो दे चुके थे। अब उनके पास कुछ नहीं था। अब रो लेने का जी कर रहा है। अब कौन है जो उन्हें देखेगा। कोई भी नहीं। और यदि कोई देख भी ले तो क्या एक पिता को रोने का अधिकार भी नहीं दिया, इस समाज ने।

सामान समेटते-समेटते एक जगह बैठ गए। कुछ देख कर हैरान थे। घर के सामने वाले कमरे में टीवी के ऊपर से कुछ गायब था। देखते ही उनका मन जैसे बैठ गया। अब तो ऐसा लग रहा था कि सब कुछ लुट लिया हो किसी ने। उन्होंने घर का कोना-कोना छान मारा पर नहीं मिली वह चीज। जिसकी उन्हें तलाश थी। पहले सोचा मेहमानी बच्चों ने कहीं खेलते-खेलते इधर-उधर रख दिया होगा। पर अब चिंता बढ़ गई। घर के फैले चार कमरे से लेकर घर के बाहर तक नजर दौड़ाई। कुछ नहीं, कुछ भी नहीं। कोई नहीं। कुछ नहीं। कुछ भी नहीं मिला।

तभी अचानक फोन की घंटी बजी और फोन के दूसरे तरफ की रुदन आवाज सुनकर उनका दिल रो पड़ा। आवाज थी मुन्नी की। दोनों ने एक दूसरे की हालत को समझते हुए इसका अहसास भी नहीं होने दिया कि उनकी स्थिति कैसी है?

मुन्नी ने कहा, 'पिताजी, आपसे बिना पूछे कुछ ले आई हूँ। आप नाराज मत होना।'

सोहनलाल, 'अरे कैसी बात कर रही है, सब कुछ तेरा है।' इतना कहते ही मन तो हुआ कि यह भी कह दें कि अपने पिता को क्यों छोड़ गई इसे भी साथ ले जाती।

मुन्नी, 'पिताजी, मैंने आपकी और मेरी वाली वो टीवी पर की फोटो आपसे बिना पूछे ही रख ली है। मैं उसके बिना नहीं रह पाऊँगी। आप नाराज मत होना।'

अब होश संभाले सोहनलाल की आँखें भर आयी। जिस तस्वीर को उन्होंने चारों दिशाओं में खोज लिया था। वह तो अपने साथी के साथ सफर में थी। वह तस्वीर थी सोहनलाल और मुन्नी की। जब पहली बार मुन्नी ने होश संभालकर जीवन को समझा था, तब की यादें समाई थी उस तस्वीर में। निर्जीव पर भावनाओं से भरी हुई तस्वीर!

आश्चर्य की बात ये निकली कि उसी तस्वीर के बगल एक और तस्वीर भी थी, जिसे ले जाना मुन्नी ने उचित नहीं समझा। आज सोहनलाल को उनकी परवरिश का फल मिल गया था। आज उन्हें पिता होने पर गर्व हो रहा था। आज ऐसा अनुभव कर रहे थे जैसे सारी दुनिया ही जीत ली हो उन्होंने।

मुन्नी ने फोन रखा। सोहनलाल उस दूसरी तस्वीर को देखकर खुद में खो गए। उस दूसरी तस्वीर में उनकी पत्नी, मुन्नी और वो खुद थे। उनके थके पाँव थक चुके थे। मुन्नी जो तस्वीर ले गई है उसकी याद करते। फिर इसे देखने लगते। यह क्रम यूँ ही चलता रहा। बार-बार विचार करते कि मुन्नी ने वही तस्वीर क्यों चुनी?

(समाप्त)

कहानी

कर्तव्य

डॉ जय प्रकाश शुक्ल

'खट खट खट!' 'राधा देखो कोई आया है?' राधा ने गिलास को मेज पर टिका दिया और स्वयं दरवाजे की ओर बढ़ गयी। डॉक्टर रमेश के इंजेक्शन लगाते ही बच्चा एक आवाज करके शांत हो गया। शायद उसे बेहोशी आ गयी थी। राधा वापस आकर बच्चे के पास खड़ी हो गयी। 'कौन है?' डॉक्टर रमेश ने पूछा। 'कोई होगा। आपको पूछता है। डॉक्टर का पेशा क्या जब देखो कोई न कोई बला लिए खड़ा रहता है, कभी आराम का मौका नही गहन अंधकार हो या तीव्र बरसात।'

डॉक्टर बोले- 'राधा क्या तुम ये नहीं जानती कि यदि आज मैं डॉक्टर न होता तो तुम्हारे बच्चे की क्या दशा होती, जरा सोचो।' राधा के पास इस बात का कोई जबाव न था, वह बैठकर बच्चे के कपड़े ठीक करने लगी। डॉक्टर दरवाजे की ओर चल दिए। वह युवक वड़ी बेचैनी से इंतजार कर रहा था। डॉक्टर को आते देख वह फौरन हाथ जोड़ कर बोल पड़ा- 'डॉक्टर साहब, बाबूजी की तबियत बहुत खराब है, उन्होंने आपको बुलाया है।'

'कौन हैं बाबूजी?' डॉ रमेश ने पूछा। 'वही गोबिंद सिंह जी वकील के पिता' युवक ने उत्तर दिया। 'ये हमें कैसे जानते हैं? किस मुहल्ले में रहते हैं? डॉ रमेश ने पूछा। 'जी मिश्रा मार्केट में मस्जिद के पीछे मकान है, आपसे परिचित हैं।' युवक ने एक ही क्षण में कह डाला।

'मुझसे परिचित! खैर!' बुदबुदाते हुए डॉक्टर स्टोर रूम की ओर चल दिए। बच्चे की दवा बनाकर बैग दवाइयों तथा इंजेक्शनों से भरने लगे कि राधा बोल पड़ी 'यह कहाँ की तैयारी हो रही है?'

'मरीज देखने जा रहा हूँ दो घण्टे में आ जाऊंगा, ये तीन खुराक दवा होश आने पर आधे-आधे घण्टे के क्रम में दे देना और हां बर्फ आ जाय तो सिकाई कर देना।' बच्चे की दवा देते हुए डॉक्टर रमेश ने कहा।

राधा कुछ रोष में आ गयी वह गुस्से मे बोल पड़ी आज आपको इस समय कहीं नहीं जाना है। अपना बच्चा बीमार पड़ा है और आप जनाब बाहर जा रहे हैं। बच्चे को हमने दवा दे दी है, आध घण्टे में होश आ जायेगा।' डॉक्टर ने जल्दी से कहा। 'इतनी रात आपको कहीं नही जाना है, कह दो सुबह देख लेंगे।' राधा ने कहा। 'नहीं राधा, मुझसे ऐसा नहीं होगा। यदि मैं उसकी रक्षा नहीं कर सका तो मेरा ये काम करना बेकार है। राधा जरा सोचो वह भी किसी माँ का बच्चा होगा तुम्हारे बच्चे की तरह, सोचो उसकी माँ भी आंसू बहा रही होगी।' डॉक्टर ने कहा।

'वह तो मैं खुद बखुद समझती हूँ पर रात्रि में अनजाने युवक के साथ अपरिचित स्थान पर जाना यही

(शेष पृष्ठ २८ पर)

प्रेम हाट बिकाय

विनय कुमार तिवारी

बात उन दिनों की है जब पहली बार मैंने वेलेंटाइन डे का नाम सुना था। 'वैलेंटाइन डे' का नालेज, मेरे जनरल नालेज में जबरदस्त बढ़ोत्तरी के रूप में एड हुआ था। जहाँ-तहाँ मैं अपना यह नवार्जित ज्ञान बघारता फिरता कि देखो एक वैलेंटाइन डे भी होता है! और, इसकी चर्चा को 'फैशन' की श्रेणी में मानता, यानि मैं एकदम आधुनिक टाइप की नई सोच से रूबरू हुआ था। वाकई, बड़ा फैशनेबल है यह वैलेंटाइन डे! फैशन तो बदलने वाली चीज ही होती है, जो न बदले फिर उसमें फैशनवाली बात कहाँ! और जब तक दिखावा न हो तब तक फैशनवाली बात भी नहीं जमती। अब कोई चुपचाप वैलेंटाइन मना ले तो प्रेम का मतलब ही क्या?

हाँ, वो मध्ययुगीन प्रेमी निरे बेवकूफ रहे होंगे जो चुपचाप प्रेम को सहते हुए 'गूँगे के गुड़' टाइप वाले प्रेम में मगन होकर 'भरे भौन में करतु हैं नैनन ही सो बात' में अपना प्रेम-जीवन बर्बाद कर देते रहे होंगे। भला प्रेम भी कोई सहने की चीज है! लेकिन तब के बेचारे इन प्रेमीजनों का इसमें दोष भी तो नहीं था! समाज के मारे तब के प्रेमीजनों को कोई बाजार दिखानेवाला भी तो नहीं पैदा हुआ था। महाकवियों ने तो प्रेम-भावना को ही मटियामेट कर दिया था।

प्रेमीजन कोई भगवान तो होते नहीं कि अपने प्रेम-पात्र को प्रेमाभिभूत कर दें? आखिर प्रेमीजन बिन लुभे और लुभाये कैसे एक दूसरे को अपने प्रेमजाल में फंसाएंगे? इसके लिए बाजार की जरूरत पड़ती ही है! लेकिन प्रेम में बाजार के इस महती योगदान को कबीर ने अपने बेवकूफी भरे अंदाज में यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि 'प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।'

लेकिन, पता नहीं कबीर के जमाने में बाजार-वाजार होता भी था या नहीं या वे केवल बाजार का नाम ही सुने थे। अगर वे बाजार गए होते तो अपने इस दोहे में प्रेम की ऐसी तौहीन न करते। अरे भाई! जो बाजार में न बिक सके फिर वह किस काम की चीज ! मेरी समझ में तो यही है कि जिसकी कीमत न आंकी जा सके उसकी कोई कीमत नहीं! इसीलिए हमारे यहाँ दूल्हा तक बिकता है, और पैसेवाले लोग कीमती दूल्हे में ही विश्वास जताते हैं। हाँ, महँगे दूल्हे की खोज प्रकारांतर से कीमती प्रेम की ही खोज और गारंटी होती है। लेकिन भला हो बाजार का जिसके कारण अब खोज-खोजाई का वह दौर भी समाप्त होने वाला है, प्रेमीजन अब स्वयं बाजार में खड़े होकर रेडीमेड प्रेम प्राप्त कर लेते हैं और उनका प्रेम यहीं बाजार में भटकता मिल भी जाता है।

तो महात्मा कबीर यदि आज होते तो मैं उनसे यही कहता- 'जिस प्रेम की कीमत न आँकी जा सके, भला उसे हम प्रेम कैसे मान लें?' और कहता, 'कबीर दास जी, एक आप थे, एक वो वैलेंटाइन बाबा हैं! आपको तो बाजार का कोई नालेज ही नहीं था कि वहां क्या बिकता और क्या बिक सकता है! और वो वैलेंटाइन बाबा को प्रेम के बारे में भरपूर नालेज था, वो प्रेम को बाजार में बिकवाना भी जानते थे।'

शायद यही कारण था कि हमारे देश में वैलेंटाइन बाबा का जलवा आर्थिक सुधारों के साथ ही आया और तभी से बाजारों में 'प्रेम हाट बिकाय' का स्कोप भी खड़ा हो गया। यही नहीं अब तो प्रेमीजनों यानी गर्लफ्रेंड और ब्वॉयफ्रेंड की सरे बाजार कीमत आँकी जाने लगी है और राजनीति में भी ऐसे जन धमाल मचाने लगे। खैर!

मेरा तो यही मानना है कि अपने देश में वैलेंटाइन डे का उतना स्कोप नहीं था जितना वहाँ, जहाँ वैलेंटाइन बाबा हुए थे। वहाँ तो विवाह पर ही पहरा बैठाया गया था। इसीलिए वे प्रेमियों के लिए लड़े थे। मतलब अविवाहितों के विवाहित होने के या उनके प्रेमाधिकार को लेकर अपना जान तक न्यौछावर कर दिए थे। लेकिन अपने यहाँ ऐसी बात तो है नहीं। यहाँ तो प्रेम करो या न करो विवाह कर लो और सात जन्मों का बंधन निभाओ और निभाते चले जाओ वाले प्रेम का प्रचलन पहले से तो हईये था! अब ऐसे जन्म-जन्मांतर वाले प्रेम में ऊब तो होनी ही थी। इस प्रेम में थ्रिल और रोमांच खतम हो जाता है और ऐसा प्रेम, सुबह-दोपहर-साँझ होते हुए शेष अगले जनम की बात कह कर अस्ताचलगामी हो जाता है, आखिर प्रेम भी तो कोई चीज ही होती है, जिसे ढलना भी होता है। अब ऐसे में असली प्रेमियों के लिए प्रेम में उबाऊपन या बासीपन गँवारा नहीं हो सकता। लेकिन लाइसेंस-राज हर चीज में आड़े आ जाता है।

तो भाई, आज के प्रेमीजन ऐसे जन्म-जन्मांतर वाले प्रेम से इतर एक दूसरा वैलेंटाइन डे वाला प्रेम चाहते हैं लाइसेंस-राज से मुक्त वाला प्रेम! इस वाले प्रेम में थ्रिल और रोमांच भी होता है। यहाँ प्रेम में लुका-छिपाई जैसे खेल के साथ ही पहरेदारों से भी बचने और इसकी कीमत आंकने का बखूबी खेल भी होता है। अब ऐसे में प्रेमियों के लिए वैलेंटाइन डे वाला प्रेम मुफीद और मजेदार तो होना ही है। वैलेंटाइन डे पर प्रेम के लाइसेंस-राज पर चोट पहुँचाकर उदात्त-प्रेम की संकल्पना साकार की जाती है तथा प्रेम में उदारीकरण का संघर्ष एक कदम और आगे बढ़ चुका होता है। जय हो वैलेंटाइन बाबा की!! ■

खट्टा-मीठा

भाभी से होलियाना छेड़छाड़

बीजू ब्रजवासी

फागुन का महीना, देवरों पर होली के साथ-साथ चुनावों का भी खुमार और सामने प्यारी-सी सलोनी-सी भाभी! ऐसे माहौल में अगर छेड़छाड़ न होगी, तो क्या भजन-कीर्तन होगा? भाभी आयी थी कुछ वोट कमाने। उसने सोचा होगा कि देवरों की ओर मीठी-सी मुस्कान फेंककर कुछ वोटों-सीटों का जुगाड़ हो जाएगा, जिससे अगले पाँच साल तक दाल-रोटी चलती रहेगी। पर देवर ठहरे समाजवादी। भाड़ में गया वोट, चुनाव तो होते ही रहते हैं, पर भाभी से हँसी-ठिठोली-छेड़छाड़ का मौका बार-बार नहीं मिलता। इसलिए उन्होंने तय कर लिया था कि भाभी से होली खेलनी ही है।

अब जैसे ही भाभी कार से उतरीं कि देवरों ने घेर लिया। 'भाभी, बस एक बार गाल पर गुलाल लगा लेने दो।' यह अनपेक्षित माँग सुनकर भाभी पसीने-पसीने हो गयी। बड़ी मुश्किल से मंच तक पहुँची। सोचा होगा कि मंच के आस-पास बैठे देवर लोग अधिक सभ्य होंगे। पर वे तो और भी अधिक होलियाना मूड में थे। भाभी की बात सुनने को एकदम तैयार नहीं, उल्टे होली के रसिया गा रहे थे।

भाभी ने लाख समझाया कि 'पहले मेरी बात सुन लो, होली बाद में खेल लेना। यह साड़ी होली वाली नहीं है।' पर देवरों पर इसका कोई असर नहीं। अगर भाभी लाठी लेकर उन पर पिल पड़ती, तो वे ज्यादा खुश होते। वे ब्रज की लट्ठमार होली का स्वाद चख लेते। इसके लिए वे पूरी तरह तैयार होकर आये थे।

ऐसे दीवाने देवरों को देखकर भाभी डर गयीं। भैया से शिकायत करने की धमकी दी। इस पर देवर और भी अधिक हो-हल्ला करने लगे। 'भाभी, हम भैया से नहीं डरते। अगर भैया डाँटेंगे, तो उनको भी गुलाल लगा देंगे। पर हम भाभी से होली जरूर खेलेंगे।' भाभी जानती थी कि ससुर जी से भी शिकायत करने का कोई लाभ नहीं होगा। वे तो अधिक से अधिक यही कहेंगे कि 'लड़के हैं, लड़कों से गलतियाँ हो जाती हैं।'

लेकिन भाभी ऐसी गलतियों का मौका बिल्कुल नहीं देना चाहती थीं। भाड़ में जायें वोट! जान है, तो जहान है! सो भाभी ने देवरों से जान-बचाकर निकल लेना ही अच्छा समझा। किसी तरह कार में बैठकर भाग निकलीं। देवर बेचारे दूर से ही होली के रसिया गाते रह गये। अब कहीं और जाकर गलतियाँ करेंगे। पर ऐसी भाभी और कहाँ मिलेगी? ■

बकवास लेकिन गंभीर

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

कल यू ट्यूब पर एक पाकिस्तानी चैनल देख रहा था जिसमे ऐंकर शाजिया और एक कोई हिलाली तथा एक पत्रकार मौजूद था. हिलाली साहब कह रहे थे कि अगर कश्मीर लेना है तो पाकिस्तान को भारत पर तुरंत न्यूक्लीयर हमला करना चाहिये. यद्यपि यह पूर्णतया बकवास लग रहा था, लेकिन वे जो दलील दे रहे थे बड़े गंभीर थे. हम अपनी पीठ भले थपथपा लें, लेकिन हिलाली की एक एक दलील हमारे यहाँ की राजनैतिक और राष्ट्रीय परिस्थिति पर बिल्कुल सटीक बैठ रही थी.

वे कह रहे थे कि भारत आज भी मुगल राज्य के समय जैसा अस्थिर देश है. वहाँ आज भी वे सब विघटनकारी शक्तियाँ मौजूद हैं जिसका फायदा उठाकर मुगल शासक एक हजार साल तक शासन किये. बुरहान बानी के लिए पूरे ३० दिन तक कश्मीर जलता रहा, अफजल की फांसी पर हमारे कितने लोग सड़कों पर उतर आये थे, कालेजों तक में अफजल के लिए मुजाहरे हो रहे थे, आज भी हिन्दुस्तान के हर हिस्से में कहीं न कहीं पाकिस्तानी झंडे लहराये जाते हैं, जबकि पाकिस्तान में कहीं भी और कभी भी हिन्दुस्तानी झंडे नहीं फहराए जाते. सारी परिस्थितियाँ हमारे साथ हैं लेकिन हमारा नेतृत्व हमेशा मौका गँवाता रहा. १९६२ में अगर हम भी चीन के साथ हमला बोल दिये होते तो कश्मीर की समस्या कब की खतम हो गई होती. मुम्बई हमला हुआ, संसद पर हमला हुआ, भारत ने हमला क्यों नहीं किया क्योंकि वह हमारे बम्ब से डरता है, भारत में रह रहे हमारे लोगों से डरता है जो सड़क से लेकर संसद तक में मौजूद हैं. भारत भले हिन्दू बहुल देश है लेकिन सत्ता उसी को मिलेगी जिसे हमारे लोग चाहेंगे. वहाँ की आधी हिन्दू आबादी हमारे साथ है.

बगल में बैठा पत्रकार बोला कि हम तीन जंगें लड़ चुके हैं. अभी-अभी सर्जिकल स्ट्राइक का दंश झेल चुके हैं. हिलाली का तर्क था कि तब हम न्यूक्लीयर देश नहीं थे, सर्जिकल स्ट्राइक जैसी गलती अब मोदी कभी नहीं करेंगे, देखे नहीं मोदी की कितनी थुक्का-फजीहत हुई? आधा हिन्दुस्तान हमारे सुर में सुर मिला रहा था, वहाँ के लोग तो दो कदम आगे जाकर सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांग रहे थे. मानता हूँ कि भारत हमसे शक्तिशाली राष्ट्र है लेकिन वह जाति धर्म क्षेत्र में बिखरा हुआ है.

उपर्युक्त सारी बातों को हम भले बकवास मान लें, लेकिन क्या परिस्थितियाँ वैसी नहीं हैं? ७० साल बीत जाने के बाद जिस लोकतंत्र को सारे जाति धर्म क्षेत्र या सभी प्रकार के विघटनकारी प्रावधानों से ऊपर उठकर विशुद्ध राष्ट्रीय सोच वाली हो जानी चाहिये थी वह आज भी उसी दल-दल में फंसी हुई है. लोकसभा विधान सभा मवालियों गुंडों बेईमानों के अड्डे बन चुके हैं. प्रबुद्ध वर्ग अपने हित के अनुसार समस्याओं की विवेचना कर रहा है. फिर हिलाली के बयान को हल्के में कैसे लिया जा सकता है? जिस लोकतंत्र को हम ढो रहे हैं क्या ७०० सालों में भी उससे देश का कुछ कल्याण हो सकता है? यह यक्ष प्रश्न है!

चुनाव कम्युनिस्ट देशों और कुछ इस्लामी देशों मे भी होते हैं लेकिन उन सबने उसी चुनाव प्रणाली को स्वीकार किया जो उनके देश की परिस्थिति के अनुसार थी, किसी देश की नकल नहीं की. बकवासों को भी यूँ ही नकारा नहीं जा सकता, कुछ बकवासों पर गम्भीर चिंतन करना ही होगा ! ■

कर संगत

मनोज पाण्डेय 'होश'

अपने बजट भाषण के दौरान वित्त मंत्री ने बताया की हमारे देश के लोग कर भुगतान में सबसे पीछे हैं। यह बात शत प्रतिशत सही है। कर न देने के लिये हम क्या क्या जतन नहीं करते और इसमें सरकार की नीतियाँ भी हमें रोकने के बजाय बढ़ावा देती हैं। कर बचाने में हमें रास्ता दिखाती हैं। और शायद यही कारण है कि हम सीना तानकर किसी भी ऐसे काम का विरोध नहीं कर पाते, जिसमें सरकारी पैसे का दुरुपयोग होता है या जो आम हित में नहीं होता।

बचत द्वारा कर की छूट पा लेना हमें देश के विकास में अपना योगदान नहीं करने देता। यह सही है कि बचत पर अर्जित ब्याज पर कर देय है पर यहाँ भी रु. १०००० तक का ब्याज कर मुक्त है। तमाम संस्थाओं को, जिनमें हास्यास्पद तौर पर राजनैतिक दल और धार्मिक मठ भी शामिल हैं, मिलने वाला अनुदान कर मुक्त है। अर्थात् सरकार खुद नहीं चाहती कि हम विकास के भागीदार बनें।

मेरे हिसाब से अब वक्त आ गया है कि कुछ खास संस्थाओं को छोड़कर जैसे प्रधानमंत्री सहायता कोष, आपदा प्रबंधन कोष या सेना कल्याण कोष, हर प्रकार की कर छूट समाप्त कर देनी चाहिये। करमुक्त संस्थाओं में भी सीमित दान की ही मंजूरी होनी चाहिये। मैं मानता हूँ कि अर्थ व्यवस्था में बचत एक आवश्यक अवयव है पर आज के दौर में बचत के बिना जीवन आसान नहीं है और इसके लिए किसी प्रलोभन की आवश्यकता नहीं रह गयी है। लूट का व्यापार बन चली शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा से निपटने के लिए आज बचत करना, बीमा कराना आदि अति आवश्यक हो गया है, अतः बचत करना अनिवार्यता बन चुकी है। फिर आज समाज का बहुत बड़ा हिस्सा बैंक से जुड़ा हुआ है और अपने तमाम आर्थिक लाभ वह बैंक के द्वारा ही पा रहा है जिससे बहुत कुछ बचत तो स्वतः ही हो जाती है। ऐसे में यदि बचत पर मिलने वाली कर छूट को हटा भी लिया जाय तो कुल बचत पर नगण्य अंतर ही पड़ेगा। इस प्रकार करदाता को कर देने के लिये बाध्य किया जा सकता है। यहाँ यह बताता चलूँ कि कराधान का एक मंत्र यह भी है की कर की दर ऐसी हो जिसे देने में करदाता को परेशानी न हो, अन्यथा वह कर चोरी को बाध्य होगा। कर की दर को कम से कम रखकर जहाँ कराधान का दायरा बढ़ेगा, वहीं करदाता को कर चुकाने में असुविधा भी नहीं होगी। इससे कर द्वारा प्राप्तियाँ तो बढ़ेंगी ही करदाता को अपने एक अहम् दायित्व का बोध भी होगा।

मैंने अपने 'काला धन्धा' लेख में आयकर समाप्त करने की बात कही थी और उसकी जगह व्यय कर या ट्रांजैक्शन कर की बात की थी जिसके द्वारा उन लोगों को भी कर क्षेत्र में लाया जा सकता है जो अभी खुद को बचा ले जाते हैं। अगर वह संभव नहीं है तो उपरोक्त पर अमल किया जा सकता है। छोटे कामगारों और उद्योगों पर एक मुश्त कर लागू करके उन्हें भी करक्षेत्र में लाया जा सकता है। रु २५०० सालाना जैसी रकम देने में लोगों को परेशानी नहीं होगी और वे लोग भी विकास में भागीदार हो जाएँगे जो अब तक नहीं थे। ■

(पृष्ठ २८ का शेष)

कलरलेस होली

पीड़ित छात्र पहले तो गुहार लगाते हैं, याचना करते हैं। न्याय न मिलने पर आंदोलन करते हैं। और जब पानी गले से ऊपर होने लगता है, तो आयोग के सचिवस्तरीय अधिकारियों के साथ बिहारी दंगल की नुमाइश करने से गुरेज भी नहीं करते हैं। अभी महज दो चरणों की परीक्षा ही संपन्न हुई थी जिसमें पेपर लीक, एफआईआर, सेटर की गिरफ्तारी, एसआइटी का गठन आयोग के कर्मचारियों एवं छात्रों के बीच 'लत्तम-जूतम', एसएससी सचिव का निलंबन तक हो गया और अंततः परीक्षा स्थगित। इस पूरे प्रकरण में चर्चा व चिंता का विषय मेरिट वाले योग्य छात्र ही रहे। जबकि नोटबंदी के इस विषम परिवेश में भी अरबों रुपये के इस शिक्षा खेल में दाँव लगाने वाले तथाकथित उन हजारों मासूम छात्रों के बारे में सोचने वाला कोई नहीं, जिनका लाखों रुपया सेटर के पास 'भेल्युलेस', उज्ज्वल भविष्य 'ऐमलेस' तथा रंगीन होली 'कलरलेस' हो गयी। ■

कुंडली

चोरी करके चोर ही, करने लगे बवाल
डाँट रहा है लुटेरा, सहमा कोतवाल
सहमा कोतवाल, सड़क के गड्ढे रोएं
हरिश्चंद्र के लाल, देखिए आपा खोएं
कह 'सुरेश भाऊ' पापों से भरी कमोरी
धंधा संकट में, अब कहाँ करेंगे चोरी?

-- सुरेश मिश्र

(पहली किस्त)

अन्ततः

ज्योत्सना सिंह

मृणाल जल्दी-जल्दी काम निबटा रही थी। बेटी के खराब स्वास्थ्य को देखकर उसका मन बहुत अशांत था। अवनि की छुट्टियाँ समाप्त हो रही थीं, चार दिन बाद उसे वापस पुणे लौटना था। वहाँ चली जाएगी तो कौन उसका ध्यान रखेगा। इन दिनों शहर में डेंगू का प्रकोप था और पूरी सावधानी के बाद भी अवनि उसकी चपेट में आ गई थी। कभी उसे काढ़ा बनाकर देती, कभी जूस, तो कभी कुछ और पथ्य। ये चीजें खिलाने का जिम्मा भी मृणाल का था। पापा की बिगाड़ी, बचपन की नखरीली अवनि, बहुत मान मनौव्वल के बाद ही कुछ खाने को तैयार होती। पुणे जाते ही उसे एमबीए की पढ़ाई में जुट जाना होगा। द्वितीय सत्र समाप्त होने वाला था। पढ़ाई का तनाव था, ऐसे में ये बीमारी ! वहाँ कौन उसकी फिक्र करेगा? कौन उसे पथ्य देगा?

हे भगवान, मेरी बच्ची को जल्दी अच्छा कर दे, वरना उसके रिजल्ट पर बहुत फर्क पड़ जाएगा। उसकी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। बदले में मुझे बीमार कर दे। मृणाल सोच रही थी। इधर कई दिनों से उसका खुद का स्वास्थ्य भी अच्छी हालत में नहीं था। भूख खत्म हो चुकी थी, जरा सा कुछ खाते ही पेट में दर्द महसूस होने लगता था। कमजोरी इतनी लगने लगी थी कि जरा सा काम करते ही लेट जाने का मन करता। कई दिनों से सोच रही थी कि डॉक्टर के पास जाए, पर गृहस्थी की चक्की में बंधी वह अपने लिए समय नहीं निकाल पा रही थी।

अरुण को तो जैसे घर से कोई मतलब ही नहीं था। सुघड़ गृहणी के जिम्मे गृहस्थी की जिम्मेदारी सौंपकर वे बिलकुल निश्चिन्त थे। मृणाल ने घर इस तरह सम्हाला था कि उन्हें किसी बात की फिक्र नहीं थी। अरुण की एकाउंटेंसी की फर्म अच्छी खासी चलती थी। हर वक्त उसमें व्यस्त, उससे जो समय बचता वो क्रिकेट मैच के हवाले कर देते। बच्चे क्या कर रहे हैं, घर में क्या है क्या नहीं, कौन आया कौन गया, राशन, बिजली का बिल, मैडिकल, बैंक हर जिम्मेदारी मृणाल के सर। कभी कभी मृणाल खीज जाती पर कहे किससे? कोई हो भी तो सुनने वाला। धीर गम्भीर पति से कुछ कहना आसान नहीं था। वैसे तो शांत ही रहते, पर जब उन्हें क्रोध आता तो रौद्र रूप धारण कर लेता।

उनसे कभी मन की बात वह नहीं कह सकी। बल्कि थोड़ा डरती ही थी। सुन्दर, विदुषी, मीठे स्वर की स्वामिनी मृणाल को जीवन में एक अभाव हमेशा खलता था। पति में कोई ऐसी बुरी आदत नहीं थी जिससे उसे शिकायत होती। पर उनका रूखा-सूखा नीरस स्वभाव उसे असंख्य बार रुला चुका था। बच्चे अब बड़े हो चुके थे तो जीवन में और भी खालीपन आ चुका था। बेटा अमन मुम्बई में फैशन डिजाइनिंग का काम करता था।

आजकल मृणाल का तन और मन हमेशा थका सा रहने लगा था। जीवन से अरुचि हो गई थी। शरीर इतना निढाल रहने लगा था कि बिस्तर से उठने का मन नही करता, पर बहुत ही साहस समेटकर वह उठती और गृहकार्य निबटाती। आजकल तो खाना बनाना भी भारी लगने लगा था। पर अगर कुछ न बनाओ तो अरुण भूखे ही रहते थे, बाहर खाना उन्हें जरा भी पसन्द नहीं था, और बना हुआ भी सिर्फ मृणाल के हाथ का चाहिए होता था। कोई और बनाता तो एक दो कौर खाकर ही उठ जाते। झख मारकर उसे उठना होता था। फिर जबसे बेटी आयी हुई थी, तो उसके मनपसन्द पकवान भी खिलाने थे। ले जाने के लिए भी कितना कुछ बनाना था, लड्डू, मठरी, गाजर का हलवा।

अवनि को गाजर चुकन्दर का जूस देना था, जिसे पीने के लिए वह ढेर सारे नखरे करने वाली थी। आज तो मृणाल को खड़े रहना भी मुश्किल लग रहा था। कदमों को घसीटते हुए वह पुत्री के कक्ष की ओर चल दी। दरवाजे तक ही पहुँची थी कि कक्ष गोल-गोल घूमता नजर आने लगा। खुद को सम्हालना मुश्किल लगने लगा। गिलास हाथ से छूटा और जूस बिखर गया। उसका सर दरवाजे से टकराया। आवाज सुनकर अवनि दौड़कर आयी और माँ को सम्हाला- 'माँ क्या हो गया आपको? पापा... पापा...' वह तेजी से चीखी।

'क्या हुआ?' अरुण ने आकर पूछा।

'देखिये न माँ को कितना तेज बुखार है, यहाँ आयीं तो चक्कर आ गया इन्हें'

'ओह, बहुत ही लापरवाह है तेरी माँ, ऐसा कर तू क्रोसिन दे दे अवनि, बुखार उतर जाएगा।' उन्होंने अभी भी बात को गम्भीरता से नहीं लिया।

'आप कितनी गैर जिम्मेदारी की बात कर रहे हैं पापा, माँ को डॉक्टर की जरूरत है।' अवनि पिता के रवैये से हतप्रभ रह गई।

'अरे तेरी माँ को कुछ नहीं होगा, देखना अभी थोड़ी देर में तेरे लिए जूस बनाती नजर आएगी।'

'आप भी कमाल कर रहे हैं पापा, चेहरा देखा है आपने माँ का, कैसा पीला पड़ा हुआ है, गाड़ी निकालिये और डॉक्टर के पास चलिये।' जवाब में मृणाल ने कुछ कहना चाहा। 'आप तो चुप ही रहिये माँ, क्या हालत कर ली है आपने अपनी।' उसने झिड़की दी।

'ठीक है मैं डॉक्टर के पास लेकर जाता हूँ, तू अपने जाने की तैयारी कर।'

'आपने सोच भी कैसे लिया पापा कि मैं माँ को इस हालत में छोड़कर जाऊँगी।'

'पर बेटा, तेरा रिजल्ट खराब हो सकता है, माँ को तो जरा सा बुखार है, ठीक हो जाएगी।'

'दिक्कत यही है कि मैं आपके जैसी पत्थरदिल नहीं बन सकती, जब तक मेरी माँ ठीक नहीं हो जाती, मैं कुछ और सोच भी नहीं सकती।'

आखिर अरुण को गाड़ी निकालकर डॉक्टर के पास ले जाना ही पड़ा। मृणाल तब तक अर्ध बेहोशी की हालत में ही थी। अस्पताल में पहुँचे तो मुआयने के समय डॉक्टर के चेहरे पर गम्भीरता के चिह्न दिख रहे थे। परेशानी भरे स्वर में डॉक्टर ने पूछा- 'इनकी कबसे ये हालत है?' 'ये हालत ! मतलब? क्या हुआ है?'

'देखिये अभी तो मैं कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हूँ। कुछ टैस्ट लिखे हैं, पहले ये करवाने होंगे, तभी कुछ कहा जा सकता है। वैसे इन्हें फीवर कब से है?'

'आज ही हुआ है।' अरुण ने कहा।

'ये सम्भव नहीं है, एक दिन के फीवर में ये हालत नहीं हो सकती। इससे पहले से रहा होगा।'

'वैसे अब कुछ थकी सी तो दिखती है।'

'कुछ नहीं, इन्होंने अपने शरीर के साथ खूब अत्याचार किया है। हैरानी की बात कि आपको खबर ही नहीं है।'

'मैं कुछ समझा नहीं, डॉक्टर!'

'ये बहुत क्रिटिकल कंडीशन में हैं, इन्हें एडमिट करना होगा'

'एडमिट?' अरुण के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। 'जी' सुनकर वह सकते में आ गए, तुरन्त एडमिट करवाया गया। मृणाल बेहोशी की हालत में ही थी। उन्होंने पानी पिलाना चाहा, तो देखकर सिहर उठे, उसके गाल भी पिचके हुए थे। मुँह में उँगली डालकर स्थान बनाया और पानी डाला पर जल की बूँदें अंदर न जा सकीं और बाहर निकल पड़ी। अब पहली बार उन्होंने ध्यान से पत्नी के चेहरे को देखा। एकदम निस्तेज पीला चेहरा, आँखों के नीचे काले घेरे, क्षीण शरीर, जैसे किसी ने सारी शक्ति निचोड़ ली हो। ये क्या हो गया मृणाल को ! पहली बार उन्हें अहसास हुआ कि स्थिति कितनी विकट है।

रिपोर्ट आने के बाद डॉक्टर ने बताया कि उसे पीलिया, टाइफाइड और भी न जाने क्या क्या कॉम्प्लीकेशंस हो गई हैं। बहुत दिनों से उपेक्षा के कारण ये सभी रोग गम्भीर रूप धारण कर चुके हैं।

'आज की रात बहुत भारी है इन पर, दुआ कीजिये कि सही सलामत निकल जाए 'डॉक्टर का गम्भीर स्वर गूंजा। अरुण को लगा जैसे उनके पैरों तले जमीन निकल गई हो।

'नहीं, ऐसा मत कहिये डॉक्टर, मृणाल को कुछ नहीं हो सकता, उसे कैसे कुछ हो सकता है?'

'आप अच्छे खासे पढ़े लिखे हैं पांडे जी, फिर भी इनकी बीमारी को इस हद तक नेगलेक्ट किया आपने?'

'मुझे पता ही नहीं चला कि कब हो गया ये सब।' वे अपना सर पकड़कर बैठ गए।

'पापा आप बहुत खुदगर्ज हैं, आपने माँ की कभी देखभाल नहीं की। और मैंने भी अपनी उलझन में ध्यान ही नहीं दिया कि माँ ठीक नहीं।' अवनि का स्वर अवरुद्ध हो गया।

(अगले अंक में समाप्त)

मेरा कहा मान लिया

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

जसवंत और उसकी पत्नी एक शादी में गए। जसवंत खाने-पीने का शौकीन था। हालांकि दो पेग से ही उसकी संतुष्टि हो जाती थी लेकिन उसको खाने का बहुत शौक था और ये दो पेग उसकी भूख को चमका देते थे। जसवंत खूब तगड़ा और सौ किलो वजन का शख्स था। उसका पेट बहुत बढ़ा हुआ था। डाक्टर ने उसको बहुत हदायतें दे रखी थीं लेकिन वोह हंसकर दोस्तों को कह देता था, 'भई, एक गोली और खा लेंगे लेकिन खाना तो मजे से खाना चाहिए!' जसवंत ने कुछ देर दोस्तों के साथ बैठकर विस्की का मजा लिया और फिर उठकर खाने की लाइन में हो लिया। उसने तरह तरह के मीट से प्लेट भर ली और एक तरफ बैठकर खाने लगा। मीट की प्लेट खतम करके पकौड़े, समोसे, चने और दूसरे स्वादिष्ट पदार्थ लेकर जसवंत फिर बैठ कर खाने लगा। खाते खाते उस को अपने भीतर से अजीब-सी बातें सुनाई दीं। जसवंत ने खाना छोड़ दिया और अपने भीतर से आती आवाजें सुनने में लग गया।

'अरी मेरी ननी सी जीभ बहन ! अब तो मुझ पर रहम कर, मैं बहुत भर गया हूँ, तू हैं कि स्वाद सवाद में सब कुछ मिक्स कर के नीचे फैंक रही हो!' पेट बोल रहा था। जीभ हंस कर बोली, 'भाई ! अब तू मुझको यहां लाया है तो अब मुझे स्वाद तो लेने दे ! जब तू विस्की पी रहा था तो मैं पानी से भीगी हुई थी और चाहती थी, खानों पर टूट पड़ूँ।'

'देख बहन! अब तू मुझ पे तरस कर, तुम तो फावड़े की तरह सब कुछ नीचे फैंक रही हो, लेकिन मुझ को अब इतना कुछ मिक्स करके आगे धकेलना मुश्किल हो रहा है, जिसके कारण तरह-तरह की गैस उत्पन्न हो रही हैं, जिनके कारण मैं फूलकर आगे बढ़ता जाता हूँ, लोग मुझ पर ही हंसकर कह देते हैं- देखो ! कितनी बड़ी तोंद है। एक और समस्या हो रही है, लिवर, पैंक्रियास, धमनियां और दूसरे साथी प्रभावित हो रहे हैं और वो सब मुझको ही दोष दे रहे हैं।' आंसुओं के साथ पेट बोल रहा था, जैसे अभी रोया कि अभी रोया।

जीभ ने ऊपर की तरफ देखा और दिमाग को बोली, 'भाई ! तू जागता है?'

'बस मजे में हूँ, व्हिस्की से झूम रहा हूँ और ऊपर से तुम इतने स्वादिष्ट खाने चुन-चुनकर पेट भाई को भेज रही हो। बस देख-देखकर आनंदित हो रहा हूँ।' दिमाग बोल रहा था।

अब पेट तो जैसे रो ही पड़ा हो, बोला, 'तुम दोनों मुझे बर्बाद करने पर तुले हुए हो। एक तो मैं खुद परेशान हूँ, ऊपर से लीवर, गुर्दे और दिल मुझ को घूर-घूरकर देखते हैं, घुटने हर वक्त मुझे कोसते हैं। पता है, कल जसवंत डाक्टर के पास भी गया था और डाक्टर ने इतना कुछ कहा कि मैं तो डर ही गया था। और घुटने तो बराबर मुझे घूर रहे हैं, क्योंकि उनको डर सता रहा है ऑपरेशन का। जसवंत हर वक्त कहता रहता है- इन कमबख्त घुटनों ने बहुत दुखी किया हुआ है। उसको मैं क्या समझाऊं कि कसूर घुटनों का नहीं बल्कि तेरा है। तू हमारी सबकी लाड़ली बहन है, तुझे कुछ कह भी नहीं सकते और तू है कि इस लाड़ प्यार का नाजायज फायदा उठा रही है और चटखारे ले-लेकर खा रही है और साथ में दांत भाइयों को भी ओवरटाइम करने पर मजबूर कर रही है।'

अब जीभ कुछ संजीदा हो गई और बोली, 'पेट भाई ! आज पहली दफा मुझे महसूस हुआ है कि मैं कुछ गलती कर रही हूँ, मैंने मर्यादा का उल्लंघन किया है और सबको नुक्सान पहुंचाया है, अब तुम जो कहो मैं करने को तैयार हूँ। मैं छोटी बहन हूँ, अब भाई बताओ मुझे क्या करना है?'

पेट बोला, 'बहन! मैं इतना बुरा भाई भी नहीं हूँ कि तुमको जिन्दगी के मजे लेने से भी वंचित कर दूँ, बस इतना करो कि थोड़ा अपने आप पे कंट्रोल कर लो और कुछ कम खुराक खाकर ही संतुष्ट रहना सीख लो। मैं मानता हूँ कि कुछ दिन तुम को तकलीफ होगी लेकिन मेरा मानना है कि कुछ दिनों के बाद तुम थोड़ी खुराक से ही संतुष्टि महसूस करने लगोगी। बाकी अपने दिमाग भाई से पूछ लो।'

जीभ ने दिमाग की तरफ देखा और बोली, 'दिमाग भाई ! इसके बारे में तुम क्या कहते हो?'

दिमाग बोला, 'बहन! मैं आप दोनों के साथ हूँ, जैसे तुम करो, मुझे कोई इतराज नहीं है।'

पेट बोला, 'तो अब ऐसा करते हैं, एक साल का वक्त लेते हैं और एक साल बाद देखेंगे कि हमारे शेष साथी कैसा महसूस करते हैं।'

सभी ने 'हाँ' बोल दी और खामोश हो गए।

जसवंत ने ये सभी बातें सुनी। हैरान हुआ वह सोचने लगा कि वह लोगों से तो हंस-हंसकर बातें कर लेता है लेकिन अपने आपको धोखा दे रहा है। क्या वह शीशे के सामने खड़े होने की जुर्रत कर सकता है? नहीं! वह खुश रहने का नाटक कर रहा है। काफी देर वह बैठा रहा।

माँ की आवाज आई, 'जसवंत बेटे पराठे तैयार हैं, आ के खा ले!'

पैर घसीटता हुआ जसवंत रसोई घर में आ गया और बोला, 'माँ ! आज से एक पराठा ही खाया करूँगा, दुपहर और रात का खाना भी कम कर दूंगा।'

'बेटा! तेरी तबीअत तो ठीक है, कम खाने से तो तू कमजोर हो जाएगा।' माँ बोली।

'माँ! डाक्टर ने वजन कम करने को बोला है, और कुछ नहीं है।' जसवंत संजीदा आवाज में बोला।

'अच्छा! जैसी तुम्हारी मर्जी।' कहकर माँ पराठे पकाने लगी।

जसवंत ने खाना कम कर दिया था और उसने हर रोज दो दफा सुबह शाम तेज चलना शुरू कर दिया। उसकी पत्नी इस अचानक तब्दीली से खुश हो गई थी और तरह-तरह के ताजा फल, सब्जियां और मेवे लाने लगी। पत्नी ने कुछ नहीं पूछा, बस हर तरह से जसवंत का साथ देने लगी। कुछ ही महीनों में जसवंत ने एक जिम क्लब जॉएन कर ली। दिन पर दिन वजन कम होने लगा और साथ ही कपड़ों का साइज भी। जसवंत हर चीज सोच-समझकर खाने लगा। इस पर एक खुशी जसवंत को और मिल गई, डाक्टर ने बहुत सी गोलियां बन्द कर दीं। अब जसवंत खुशी से फूला नहीं समाता था और उसने तेज दौड़ना शुरू कर दिया। वह अपने आप में एक नया इंसान महसूस करने लगा। अब वह दोस्तों के साथ हंस-हंसकर बातें करता और उसके दोस्त भी उसको देखकर हैरान होते। ऐसे ही एक साल हो गया और उसका वजन नॉर्मल हो गया और उसके डाक्टर ने भी शाबाशी दी। उसकी पत्नी, बच्चे और माँ तो बहुत प्रसन्न थी। एक दिन वह कोई सेहत संबंधी पुस्तक पढ़ रहा था और अचानक फिर उसके भीतर से आवाजे आने लगीं और वह ध्यान से सुनने लगा।

'बड़े भैया! अब तो तुम बहुत सुन्दर लगते हो।' जीभ बोली।

खुश होकर पेट बोला, 'मेरी छोटी सी, नन्हीं सी, बहन! तुमने मेरा कहा मान लिया और मेरी बहुत मदद कर दी और मुझे तुम पर गर्व है। तेरे इतना करने से देख! हमारे सभी साथी खुश दिखाई दे रहे हैं और हमें दुआएं दे रहे हैं। अब तो दिमाग भाई भी प्रसन्न दिखाई दे रहा है, क्यों भाई?' पेट ने दिमाग की तरफ मुस्करा के बोला। 'हां हां, मुझसे ज्यादा कौन खुश होगा क्योंकि जब सभी लोग जसवंत को देखते हैं तो मैं खुशी से फूला नहीं समाता।', दिमाग बोला।

अब जीभ जोर से हंस पड़ी और बोली, 'आप सब को एक भेद भरी बात सुनाऊँ?' 'क्या?' सभी एक दम बोल पड़े।

'जो बातें हम कर रहे थे, जसवंत ने सब सुन ली थीं और अभी भी सुन रहा है।' जीभ ने जवाब दिया।

कुछ पल के लिए सब चुप हो गए, फिर अचानक सभी जोर-जोर से हंसने लगे और अब जसवंत ने भी पेट पर हाथ फेरा और खुशी से हंसने लगा और साथ ही उसके भीतर के साथी भी हंसने लगे। ■

क्षणिका

जमीं से आसमान पर चढ़कर
कोहरे की फितरत भी
आदमी सी हो गई
कल जिस सूरज ने
फलक तक था पहुँचाया
आज उसी को आंखें दिखाता है

-- अमित कु.अम्बष्ट 'आमिली'

नीली पगड़ी

मनमोहन भाटिया

टीवी पर न्यूज देखते हुए अचानक बचपन की यादें ताजा हो गई। समाचार पत्र में भी वोही न्यूज कुछ दिनों से सुर्खियों में चल रही थी। ऑफिस की भागादोडी में सुबह घर से जल्दी निकल कर रात को देर से आना रूटीन बन गया था। यह मार्च का महीना बहुत ही जालिम होता है, अकांउन्टेंटों के लिए। दम भर की फुरसत नही मिलती, सच कहा जाता है, कान खुजाने का भी समय नही होता। ३१ मार्च को वितीय वर्ष समाप्त होता है, सारा पेंडिंग काम पूरा करना है. मैनेजमेंट को प्रॉफिट लॉस अकाउन्ट और बैलेंस शीट बना कर देनी है। मैनेजमेंट ने तो कह दिया- कंप्यूटर है, देर किस बात की। कौन समझाए कि काम तो आदमियों ने करना है। कम स्टाफ में इधर उधर के काम भी करने हैं, और अकाउन्टस का भी। समय पर कैसे हो काम।

खैर छोड़िए, हर ऑफिस की यही कहानी। एक अप्रैल को काम समाप्त कर बैलेंस शीट मैनेजमेंट को दी। शाबासी तो कौन सुसरा देता है, बातें सुननी पड़ी, एक दिन लेट हो गए, पूरी रात काम करते, तो ३१ मार्च को तुम बैलेंस शीट बना सकते थे, लेकिन रात को सोना जरूरी भी है न। एक दिन घर नहीं जाते तो क्या हो जाता। जान तो नहीं चली जाती। तुम अकाउन्टेटों को यही बीमारी है, काम समय पर खत्म नहीं करते। लटका कर रखने की बीमारी है। कौन जानता है अकाउन्टेटों का दर्द। पिछले दस दिनों से घर नहीं गए, ऑफिस में ही कुर्सी पर पसर कर आधा एक घंटा आराम किया न किया, एक बराबर। बाईस-बाईस घंटे काम किया, जिसका परिणाम सिर्फ डांट।

खैर बैलेंस शीट सौंपकर दो टूक कह दिया, अब तीन दिन की छुट्टी चाहिए, शरीर ने जवाब दे दिया है। चाहे मैनेजमेंट छुट्टी ही कर दे, लेकिन शरीर को भी आराम चाहिए। चौबीस घंटों मशीन, कंप्यूटर भी चले, तो वो सुसरे भी हैंग हो जाते हैं। आदमी इस बात को नहीं समझता। उसका बस चले तो दिन के चौबीस घंटों में अडतालीस घंटे काम करवाए।

घर आकर जो बिस्तर पर लेटा, तो चौबीस घंटे बाद भी नींद नहीं खुली। आंखें थोड़ी खुलतीं, लेकिन शरीर जवाब नहीं देता। पूरे छत्तीस घंटों बाद अलसाई सी हालात में उठा, टूथब्रश लेकर बाथरूम गया। दांतों को साफ करने के बाद सोचा नहा लिया जाए, तभी फ्रेश हुआ जा सकता है, वरना तीन दिन की छुट्टी तो नींद में ही गुजर जाएगी। वाकई नहाने के बाद एकदम तरोताजा होकर कमरे में आया, जहां श्रीमती जी पहले से ही विद्यमान थी। चाय का कप एक हाथ में था और दूसरे हाथ में एक बिस्कुट। चाय की धीमी सी चुस्की लेकर मन्द मुस्कुराहट के साथ कुछ व्यंग्यात्मक अंदाज में बोली, 'नींद से जाग ही गए, कुंभकरण के खानदान से ताल्लुक रखने वाले।'

'भारतीय पत्नियों की मानसिकता कभी बदल नहीं सकती।' मैंने कुर्सी खींचकर बैठते हुए कहा।

'इसमें भारतीय पत्नियों की बात कहां से आ गई। दो दिन खर्राटे मारते हुए कुंभकरण की नींद सोए, मैंने न तो आपको जगाया, न ही तंग किया।'

'ताना मारकर भारतीय पत्नी की मानसिकता तो दर्शा ही दी। यह न सोचा, बीस दिन-रात की थकान कम से कम दो दिन आराम के बाद ही तो खुलेगी।'

'ऐसी नौकरी का क्या फायदा, जो घर की शक्ल ही भुला दे। जीनत अमान ने 'रोटी कपडा और मकान' में बिल्कुल सही गाया था 'तेरी दो टकियां दी नौकरी, मेरा लाखों का सावन जाए।' छोड़ दो ऐसी नौकरी, ढूंढ लो कोई दूसरी नौकरी। चाहे कम पैसे मिले, चैन तो हो, जब हम तुम दो पल सुकून से बैठकर बातें कर सकें।

'कार लोन की किस्त अगले साल खत्म हो जाऐगी, तब दूसरी ढूँढूंगा। सर पर बोझ नहीं होगा।'

'अभी से ढूंढ़ना शुरू करो, तब अगले साल तक मिल जाएगी, वरना मेरा अकेले इस मकान में दम घुट जाएगा। ये तो भारतीय पत्नियों का शुक्र करो, जो ऐसे पतियों के साथ जन्म-जन्म का साथ निभाती हैं। अगर अमेरिका या यूरोप में रह रहे होते तो कब का तलाक हो गया होता।' पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा।

मैं थोडा खीझ सा गया- 'अब इस बात में अमेरिका, यूरोप किधर से आ गए।'

'बस आ ही जाते हैं, जब पत्नियां चारों तरफ से हताश हो जाती हैं, और कुछ भी नजर नहीं आता है। तब सोचना ही पड़ता है और अमेरिका, यूरोप की पत्नियों की याद आ जाती है।'

मैंने इस टॉपिक को बंद करना ही बेहतर समझा और बात घुमाते हुए पूछा 'चाय मिलेगी या उसके लिए अमेरिका, यूरोप जाना पड़ेगा।'

'क्या हसीन सपने आ रहे थे, अमेरिका, यूरोप के, सारे तोड़ दिये। चलो भारतीय पत्नी धर्म निभाते हैं।' कहते हुए पत्नी रसोई की तरफ चल पडी।

पत्नी के रसोई जाने पर मैंने अखबार उठाया और टीवी पर न्यूज चैनल लगाया। मुख्य पृष्ठ पर कुछ पाकिस्तान से आए सिख परिवारों की न्यूज थी, जो स्वात घाटी से तालिबान के कहर से बचने के लिए अमृतसर आ गए और भारत सरकार से भारत में बसने के लिए अनुरोध कर रहे हैं। टीवी न्यूज चैनल पर भी यही खबर दिखाई जा रही थी। अपना घर छोड़कर विस्थापितों की दशा मैं अच्छी तरह समझ सकता था। अपना घर, अपना व्यापार छोड़कर दूसरी जगह बसना कोई आसान काम नही है, फिर भी हालात ऐसे हो जाते हैं कि मजबूरी में घर छोड़कर कहीं दूर अनजान जगह पर बसना पडता है।

विस्थापित परिवार गुरूद्वारे में शरणार्थित बने रह रहे थे। खबर सुन और पढ़कर अपना बचपन याद आ गया। उम्र उस समय लगभग पांच या छः वर्ष रही होगी, लेकिन घटना अभी भी मस्तिष्क पटल पर अंकित है। वजह, कि माता-पिता से बचपन में अनगिनत बार उस घटना को सुन चुका हूं। यह घटना मस्तिष्क के किसी कोने से बार-बार निकल आती है। जब भी ऐसी कोई खबर सुनता हूं, तो वह घटना खुद ही ताजा हो जाती है।

पिताजी किसान थे। भारत पाकिस्तान सीमा के नजदीक गांव था। १९७१ की जंग से पहले माहौल बहुत गर्म था, हालांकि सर्दियां शुरू हो चुकी थी। धम्म-धम्म धम्म धम्म की चारों तरफ से आवाजें आने लगी। साथ ही अड़ोस-पड़ोस से आवाजें आईं कि भागो, बम गिर रहे हैं। रात का समय था, लगभग आठ बजे का समय रहा होगा। रात का भोजन समाप्त कर चुके थे। घर के बरामदे में मैं खाट पर बैठा हुआ आसमान में तारे निहार रहा था और माता-पिता का इन्तजार कर रहा था, कि वे भी घर का काम निबटाकर आ जाए तभी सोने के लिए खाट पर लेटूंगा। अकेले सोने पर डर लगता था। नींद तो आ रही थी, लेकिन सो नहीं रहा था। पांच साल की उम्र में घबरा गया, लेकिन आवाज नहीं निकल पा रही थी। धम्म-धम्म की आवाज के साथ ही बहुत धुंआ उठा, शायद आस-पास ही बम गिरा था। बिना किसी देरी के फटाफट मम्मी पापा तेजी से घर से निकलकर मेरा हाथ पकड़कर खाई की तरफ भागे और बिना किसी देरी के पास की खाई में छुप गये।

'गोलू डर मत' मम्मी ने मेरा हाथ पकड़कर कहा। तभी हमारे पड़ोसी भी खाई में आ गए। सात-आठ बंदों को देखकर कुछ हिम्मत हुई। 'कोई बात नहीं, मम्मी, आप साथ हैं तो डर नहीं लगता है।' मैंने कहा।

युद्ध के बादल मंडरा रहे थे, इसीलिए गांव में कई स्थानों पर खाईयां बनाई गईं कि संकट के समय खाईयों में सुरक्षा के लिए छुप जाएँ। तभी मशीनगनों से लगातार गोलियों की धन-धना-धन आवाजें आने लगी.

पड़ोसी को संबोधित करते हुए पापा ने कहा 'कुलजीत लगता है कि हमारे जवानों ने फायरिंग शुरू कर दी है, अब जल्दी ही बमबारी खत्म होगी।'

'खांमखा हम निहत्थों पर बम फेंकते हैं, हमारे जवानों के जवाबी हमले पर डर के मारे भाग जाते हैं।' कुलजीत ने गुस्से से जवाब दिया।

लेकिन उस रात फायरिंग खत्म नहीं हुई। पूरी रात जबरदस्त फायरिंग होती रही। बीच-बीच में दोनों तरफ से तोपों से बम वर्षा भी होती रही। पूरी रात कोई नहीं सो सका। लगता था जैसे कान के परदे फट जाएगें। हमने और पड़ोसी कुलजीत के परिवार ने खाई में छुपकर रात गुजारी। सुबह के समय फायरिंग बंद हुई। लेकिन काफी देर बाद ही हम लोग खाई से बाहर निकले।

(शेष अगले अंक में)

कलरलेस होली

विनोद कुमार विक्की

बिहार में फागुन की उमंग पर जैसे शनि की कुदृष्टि पड़ चुकी है। एक समय था जब होली में यहां के प्राणी पौवा-अद्धा की झोंक मे बौराए फिरते थे। मत मारी गई जनाब की जो उन्होंने होली के मुख्य पेय पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया। अब बिना मदिरा के होली की स्थिति तो वैसी ही होगी जैसे रेनकोट पहनकर बाथरूम में स्नान किया जाय। एक तो नोटबंदी उस पर वाइनलेस होली, स्थिति काफी सोचनीय है बिहार की। केन्द्र सरकार की 'लेस' योजना पर यदि कोई राज्य यदि गंभीर है तो वो बिहार ही है। अर्थव्यवस्था क्षेत्र में कैशलेस हो या सामाजिक क्षेत्र में वाइनलेस व्यवस्था। इसके साथ-साथ हर क्षेत्र में 'लेस' योजना को मानक बना लिया गया है बिहार में। मसलन 'मेरिट लेस डिग्री', 'नॉलेज लेस सरकारी नौकरी' आदि-आदि।

माननीय मोदी जी द्वारा 'मन की बात' के तहत कही गई सूक्ति 'स्माइल मोर, स्कोर मोर' का व्यवहारिक प्रयोग गत दिनों बिहार में जोरों पर रहा। सनद रहे कि वर्तमान में परीक्षा का सीजन चल रहा है और पीएम साहब ने परीक्षार्थियों के उत्साह वर्धन हेतु 'स्माइल मोर, स्कोर मोर' पंक्तियों का प्रयोग एवं परीक्षा को उत्सव की तरह समझने की चर्चा 'मन की बात' के तहत की थी। कुछ दिनों पूर्व बिहार में इंटरस्तरीय पदों पर कर्मचारियों की बहाली हेतु चार चरणों में प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन भी किया गया था। इसमें दो चरण की परीक्षाएं संपन्न हो चुकी थीं, जिसमें बिहार कर्मचारी चयन आयोग ने उक्त पंक्तियों को चरितार्थ करने में एड़ी चोटी का जोर लगा दिया। हाईटेक युग मे बिहार की शिक्षा व्यवस्था का कोई सानी नहीं है। परीक्षाहाल में प्रश्न पत्र आने से बारह घंटे पहले यहां मार्केट में हलसहित प्रश्नपत्र उपलब्ध हो गया। प्रश्नपत्र की कीमत भी मल्टीप्लेक्स सिनेमा हाल के टिकट से लेकर पापकॉर्न के बीयरेबल रेट पर उपलब्ध थी।

इस दौरान कुछ डिजिटल मुन्ना भाई वायरल प्रश्नपत्रों के साथ पकड़े गए तो कुछ शिक्षा माफिया गैंग के गुर्गे भी पुलिस के हत्थे चढ़े। बावजूद इसके परीक्षा से पूर्व प्रश्नपत्र छोले भटूरे की तरह बाजारों मे बिकने लगे। अब जिन्हें परीक्षा पूर्व हल सहित पेपर मिला उनके लिए तो परीक्षा उत्सव की तरह थी और दाल-भात-चोखा खाकर दिन रात मेहनत करने वाले छात्र के लिए यह किसी मातम से कम न था। रोजगार व शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े बिहार में सरकारी नौकरी की स्थिति एक अनार सौ बीमार वाली होती है। यहां कोई भी सरकारी नियोजन की प्रक्रिया किसी पंचवर्षीय योजना या पंचवर्षीय चुनाव की स्थिति से कम नहीं होती है।

यद्यपि राज्य कर्मचारी चयन आयोग द्वारा प्रतियोगिता परीक्षा के संचालन में चाकचौबंद तो ऐसा होता है कि परिंदा भी पर ना मार सकें। मसलन परीक्षा के दौरान विडियोग्राफी, जैमर का प्रयोग, बायोमेट्रिक जांच, पोस्टकार्ड साइज फोटो आदि कई सुरक्षात्मक उपाय अपनाये जाते हैं। बावजूद इसके ४जी स्पीड से पेपर का लीक हो जाना शिक्षा माफिया की पैरवी, पहुँच व योग्यता तथा आयोग की विश्वसनीयता व उत्कृष्टता को रेखांकित करता है। जी हां बुद्ध, महावीर, कौटिल्य, आर्यभट्ट की ज्ञानभूमि यह वही बिहार है जहाँ कभी फाहियान ह्वेनसांग सदृश विदेशी शिक्षार्थी व छात्र शिक्षा ग्रहण करने पाटलीपुत्र आया करते थे। शिक्षार्थियों का आगमन तो वर्तमान डिजिटल युग में भी होता है लेकिन बिना पढ़ाई के डिग्री व नौकरी लेने के लिए।

समय-समय आलाकमान की छत्रछाया में रंजीत डान, लालकेश्वर बाबू, परमेश्वर बाबू जैसे महापुरुष इन इच्छुक जरूरतमंदों की आवश्यकता को पूरा करने मे भरपूर मदद करते हैं। उदाहरण स्वरूप, पिछले वर्ष बिहार में गोबर गणेश टाइप ऐसे छात्र-छात्रा राज्य टापर बन गए, जिन्होंने कभी पाठशाला का मुंह भी नहीं देखा था। बिहार में पैसे पर डिग्री व नौकरी का विश्वसनीय बिजनेस काफी दिनों से फल-फूल रहा है। जाहिर सी बात है पैसेवाले को डिग्री-नौकरी चाहिए और नियोजन-कर्ता को पैसे। सो दोनों एक दूसरे की जरूरत को पूरा कर यहां सामाजिक-शैक्षणिक-आर्थिक संतुलन बनाए रखते हैं। रही बात मेधावी व मेहनती छात्रों की तो उनके पास मेधा है उन्हें बिहार के बाहर अन्य राज्यों या रेलवे, बैंकिंग आदि क्षेत्रों में भाग्य आजमाइश कर नौकरी हासिल करने का पूरा-पूरा मौका देते हैं ये जरूरतमंद।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

(पृष्ठ २२ की शेष)

कहानी : कर्तव्य

मेरी चिंता का कारण है। डॉक्टर साहब को जानते थे तो मरीज को ले आते।' राधा ने कहा।

'यही तो तुम्हारी नादानी की पहचान है राधा! डॉक्टर का अपना कोई जान पहचान का नहीं होता, हर मरीज नया मेहमान होता है। रोगी और डॉक्टर के बीच विश्वास की अदृश्य डोर होती है, जिससे जान पहचान स्वतः बन जाती है। डॉक्टर का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक मरीज की सेवा समान रूप से करे, चाहे वह अपना बच्चा हो या फिर पराया। अच्छा राधा मैं चला!'

डॉक्टर ने झोला उठाया और स्वयं मोटर साइकिल पर लटकाकर युवक के बताये मार्ग पर चल दिए कुछ ही क्षणों में वे मरीज के मकान के सामने उपस्थित थे।

घर के अंदर पहुंचकर डॉक्टर ने देखा एक अस्सी बरस का बूढ़ा मस्तक पर तिलक, चेहरे पर बीमारी की हालत में भी रौनक, उस पर मूंछे कुछ अजीब आभा प्रकट कर रही थीं। रोगी बेहोश था। डॉक्टर ने पास जाकर हाथ की नसों का हाथ से तथा सीने की धड़कन का परीक्षण पास में लाये कुछ विशेष यंत्रों द्वारा किया। परीक्षण के बाद मस्तक पर हाथ लगाकर बैठ गए। जैसे शायद कुछ याद कर रहे हों, परिवार के सभी सदस्य आपस में कानाफूसी कर रहे थे कि एकाएक डॉक्टर कहने लगे- 'क्या ये अध्यापक गोविन्द दास जी हैं।'

सभी सदस्य डॉक्टर की हरकतों को एकाग्रचित देख रहे थे कि अचानक इस प्रश्न ने सबको चकित कर दिया। झट कृतज्ञतापूर्ण स्वर में एक युवक बोल पड़ा- 'हां हां हां डॉक्टर साब ये वही हैं।'

डॉक्टर ने खुशी से ईश्वर का स्मरण किया और अपने गुरु के चरण स्पर्श किया। दवा से भरा इंजेक्शन उठाकर बोले- 'आज गुरु की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ' और अपना कार्य समाप्त किया। उपस्थित सभी लोग डॉक्टर को बड़ी आतुरता भरी निगाहों से देख रहे थे। वे सब लोग शायद समझ भी गए थे कि डॉक्टर और कोई नहीं, वह मरीज का शिष्य है। डॉक्टर ने दवा बनायी। एक घण्टे बैठने के बाद इंजेक्शन के प्रभाव से प्रभावित मरीज को होश आ गया।

मरीज ने आंखें खोलीं और चारों तरफ देखने लगा। तभी डॉक्टर ने पूछा- 'गुरु जी तबियत कैसी है? मुझे पहचाना?' मरीज ने दबे स्वर में कहा- 'ठीक हूँ बेटा रमेश!' इतना कहने के साथ ही मरीज की आँखों से आंसू बह निकले। ये आंसू खुशी के थे। डॉक्टर ने चरण स्पर्श कर आशीर्वाद मांगा। मरीज ने अपने शिष्य की सफलता की कामना ईश्वर से करते हुए कहा- 'बेटा जीवनभर सतत सफलता को प्राप्त करो। आज मुझे अपार प्रसन्नता है कि मेरा एक शिष्य ऐसा भी है जो मरते हुए को जीवन दे सकता है। मैंने क्या किया, जीते को जीना सिखाया, पर मेरा शिष्य ऐसा है जो मरते को जिला सकता है।'

डॉक्टर गुरु के वचनों को शिरोधार्य कर कमरे के चारों तरफ देख रहे थे। उनके मुखमुद्रा पर बेचैनी स्पष्ट झलक रही थी। अचानक उनकी नजर फोन पर पड़ी। पास जाकर रिसीवर उठाया और अपने घर पर नम्बर मिलाया। बच्चे की हालात मालूम करने पर पता चला कि उसे अभी होश नहीं आया है। डॉक्टर रमेश ने रिसीवर क्रेडिल पर टिका दिया और कुछ सोचने लगे। घर के सभी सदस्यों की नजरें डॉक्टर को ही देख रही थीं। वे सब जान चुके थे कि डॉक्टर साहब के बच्चे की भी तबियत ज्यादा खराब है और वे उसे छोड़कर दूसरे मरीज को बचाकर कर्तव्य पूरा करने आये हैं, जो डाक्टर का परम कर्तव्य है। वे सभी सोच रहे थे कि जो अपने अबोध बालक को छोड़कर दूसरे को बचाने दौड़ा आया है, ऐसे पुरुष धन्य हैं, ईश्वर हैं।

गुरु जी से न रहा गया, उनका मन और गदगद हो गया कि उनका शिष्य एक साधारण डॉक्टर नहीं, अपितु ऐसा डॉक्टर है जो अपने को बाद में पहले दूसरों को बचाता है। वे बोल पड़े- 'बेटा रमेश! जाओ अपने उस मासूम बच्चे को देखो। मैं अब ठीक हूँ, बिल्कुल ठीक! जाओ, डॉक्टर जाओ, जाओ, मैं ठीक हूँ।'

जय विजय, वर्ष-३, अंक-६, मार्च २०१७

निकाय चुनावों में भाजपा की जीत के निहितार्थ

मृत्युंजय दीक्षित

पांच राज्यों में चल रहे चुनावों के बीच ओडिशा और महाराष्ट्र के निकाय चुनावों के जो परिणाम सामने आये हैं, वे भाजपा के राहत देने वाले तथा कांग्रेस के लिए बैचेनी पैदा करने वाले हैं। इन चुनाव परिणामों के बाद भाजपा अब यह कहने की स्थिति में आ गयी है कि नोटबंदी के खिलाफ विपक्ष जो सुनियोजित साजिश करके उसका विरोध कर रहा था और पूरी योजना को नाकाम बता रहा था उसकी हवा निकल गयी है। ओडिशा में त्रिस्तरीय निकाय और पंचायत चुनाव संपन्न हुए हैं। वहां पर बीजू जनता दल पहले नंबर पर तो है, लेकिन अब भाजपा आगे चलकर उसे सीधे चुनौती देने के लिए तैयार हो गयी है।

ओडिशा के अति गरीब व पिछड़े इलाकों में जहां कभी भाजपा का नामोनिशान नहीं दिखायी पड़ता था, अब वहां पर भाजपा है, जबकि कांग्रेस तीसरे नंबर पर भी दयनीय हालत में पहुंच गयी है। ओडिशा भाजपा का एक ऐसा राज्य था जहां पर संगठनात्मक हालात भी दयनीय थे, पार्टी कार्यालय भी बड़ी कठिनाई से खुल पाते थे। अब यहां पर भाजपा की छवि गरीबों के बीच में चमकी है तथा पीएम मोदी गरीबों के नये मसीहा बनकर उभरे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब नोटबंदी का लाभ पूरे देशभर में भाजपा को मिल रहा है तथा विरोधी दलों की ओर से जो झूठा प्रचार किया जा रहा था, उसके कारण उसकी हालत पूरे देश में पतली होती जा रही है। नोटबंदी के बाद पीएम मोदी ने अपनी सरकार को गरीबों पिछड़ों की सरकार बताया था, जिसका असर ओडिशा के पंचायत चुनावों में देखने को मिल रहा है। ओडिशा के पंचायत चुनावों के जो परिणाम आये हैं, उससे कांग्रेस की जमीन हिल गयी है। इतना ही नहीं वहां पर सत्तारूढ़ बीजद सरकार के लिए भी भाजपा का बढ़ता ग्राफ अब खतरे की घंटी बन गया है।

ओडिशा में पांच चरणों में हो रहे जिला पंचायत चुनावों में से तीन चरणों के नतीजे आ गये हैं। इनमें ५३६ सीटों में से २८६ सीटों पर बीजद को सफलता मिली है जबकि भाजपा ने १६७ सीटें जीतकर इतिहास रच दिया है। पिछली बार भाजपा ने यहां पर केवल १५ सीटें ही जीती थीं। १८२ सीटों की बढ़त भाजपा की जीत को ऐतिहासिक बना रही है। वहीं बीजद को १३० सीटों के नुकसान से उसके लिए खतरे की घंटी बज गयी है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन चुनावों में कालाहांडी, बलांगीर, कोरापुट जैसे अति गरीब व पिछड़े इलाकों में भाजपा को भारी जनसमर्थन मिला है। अभी तक भाजपा को ब्राह्मणों व बनियों की पार्टी कहा जाता था, लेकिन अब वह बात नहीं है, अपितु पीएम मोदी के विकास मंत्र के बल पर भाजपा गरीबों के बीच अपनी छवि को चमकने में काफी सफल रही है। उप्र में सपा के साथ सत्ता के नजदीक पहुँचने का सपना देख रही कांग्रेस के लिए यह एक बुरी खबर तो है ही।

नगर निगम चुनावों में भाजपा के लिए सबसे बड़ी राहत व सफलता का संदेश महाराष्ट्र से आया है। यहां पर शिवसेना की नाटकबाजी व राजनैतिक महत्वाकांक्षा के कारण गठबंधन टूट गया था और भाजपा व शिवसेना ने पूरे राज्य में अलग-अलग चुनाव लड़ा। पूरे देश की निगाहें इन परिणामों पर लगी थीं, लेकिन यहां पर भाजपा व पीएम मोदी की लहर का जादू चल गया और जनता ने पहली बार दस बड़े शहरों में से ८ शहरों उल्हासनगर, पुणे, नासिक, नागपुर, पिंपरी चिंचवाड़, अमरावती, अकोला और सोलापुर में कमल खिला दिया है और वह भी पूर्ण बहुमत के साथ। महाराष्ट्र के नगर निगम चुनाव वहां के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के लिए खतरे की घंटी माने जा रहे थे, साथ ही भाजपा सरकार के लिए भी, लेकिन अब ये सभी खतरे फिलहाल टलते दिखायी पड़ रहे हैं। हालांकि बीएमसी में दो सीटों के चक्कर में मामला खटायी में पड़ गया है। वहां पर शिवसेना को ८४ तथा भाजपा को ८२ सीटें मिली हैं।

महाराष्ट्र में भाजपा की जीत से कई बड़े व अच्छे संकेत गये हैं। मई २०१४ के लोकसभा चुनाव परिणाम भाजपा के लिए ऐतिहासिक गौरव का क्षण लेकर आया था। उन चुनावों के पहले और उसके बाद अभी तक भाजपा को देश के अधिकांश राज्यों में अपने सहयोगी दलों के दबाव में झुकना पड़ता था, लेकिन अब स्थिति उसके विपरीत हो गयी है। अब भाजपा अपने सहयोगी दलों के बीच झुकने की स्थिति में नहीं हैं, अपितु झुकाने की स्थिति में आ गयी है यानी कि बड़ा भाई बनने की स्थिति में। साथ ही यह भी साफ दिखायी पड़ रहा है कि अब भाजपा पूरे देशभर में अकेले चुनाव लड़ने और जीतने की स्थिति में आ रही है। लोकसभा चुनावों के बाद चुनाव दर चुनाव भाजपा का वोट प्रतिशत भी बढ़ गया है। सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि अब भाजपा अखिल भारतीय स्तर की पार्टी बन गयी है। हर राज्य व जिले में भाजपा कार्यकर्ताओं का विस्तार हो गया है।

वहीं कांग्रेस मुकाबले से बाहर होती जा रही है और भाजपा का जनाधार बढ़ता जा रहा है। भाजपा के बड़े नेताओं का मानना है कि भाजपा अब कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में भी पहली बार काफी मजबूत होकर निकलेगी और आगे बढ़ेगी। महाराष्ट्र में भाजपा की जो लहर चली, उसके कारण एनसीपी नेता शरद पवार और पूर्व गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे के गढ़ में कांग्रेस को भारी पराजय का सामना करना पड़ा है। राज ठाकरे की एमएनएस का भी सफाया हो गया है। मराठा आरक्षण का मुददा हावी नहीं हो पाया है। हां भाजपा के दिवंगत नेता गोपीनाथ मुंडे के गढ़ में भाजपा का पिछड़ना कुछ हद तक चिंता का विषय बन गया है, जिसकी जिम्मेदारी लेते हुए उनकी बेटी व राज्य सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे ने अपने इस्तीफे की पेशकश भी कर दी है। लेकिन वह अभी तक स्वीकार नही किया गया है।

महाराष्ट्र की जनता ने इस बार यदि सबसे अधिक निराशा किसी को दी है तो वह है राज ठाकरे। राज ठाकरे की अति मराठावाद की राजनीति की हवा निकल गयी है। वहीं एक और कांग्रेसी सूरमा नारायण राणे की राजनति भी अब अस्ताचल की ओर हो गयी है। मुंबई में कांग्रेस अध्यक्ष संजय निरुपम को इस्तीफा देना पड़ गया। अब महाराष्ट्र की राजनीति में कांग्रेस संभवतः शिवसेना के सहारे अपनी राजनैतिक जमीन को सुधारने का प्रयास करेगी, लेकिन अभी उसके लिए सभी दलों की रणनीतियों का इंतजार करना पड़ेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि अब कांग्रेस अपने युवराज के नेतृत्व में फिलहाल कोई चुनाव जीतने के लायक नहीं रह गयी है। यही कारण है कि अब उसके अंदर बैचेनी बढ़ने लगी है। अगर राहुल के नेतृत्व में अब कुछ और राज्यों में भी कांग्रेस की हार होती है, जिसकी पूरी संभावना है, तो कांग्रेस को कुछ सोचना ही पड़ेगा। ■

(पृष्ठ ४ का शेष) **कम खाइए, स्वस्थ रहिए**

जितनी हम सरलता से पचा सकें। अधिक खाना ही बीमारियों का सबसे बड़ा कारण है।

अब प्रश्न उठता है कि हमें कैसे पता चले कि कितना भोजन करना हमारे लिए सुरक्षित है? इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया जा सकता, क्योंकि हर व्यक्ति की पाचन शक्ति अलग-अलग होती है। इसलिए भोजन करते हुए जैसे ही हमें ऐसा लगे कि हमारा पेट भर गया है, हमें वहीं रुक जाना चाहिए। इसकी एक पहचान यह है कि भोजन करते हुए जब हमें पहली बार डकार आ जाये, तो हमें समझ लेना चाहिए कि रुक जाने का ठीक यही समय है। यदि पहली डकार के बाद आप खाते चले जायेंगे, तो शीघ्र ही आपको दूसरी डकार आयेगी। यह दूसरी चेतावनी है कि रुक जाइए। उसके बाद भी खाते चले जाना मुसीबत बुलाने के समान है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि थाली में आपको उतना ही भोजन लेना चाहिए जितना आप सरलता से खा सकें और थाली में जूठन न छोड़नी पड़े। जूठन छोड़ना एक सामाजिक अपराध भी है, भले ही इसके लिए हमारी दंड संहिता में कोई दंड तय नहीं है।

अगर परिस्थितिवश या अज्ञानवश किसी समय आप अधिक मात्रा में भोजन कर जाते हैं, तो अगली बार मात्रा उतनी ही कम करके या एक बार का भोजन त्याग कर आप उस भूल का परिमार्जन कर सकते हैं। अपने पाचन तंत्र से अधिक कार्य लेने का दुष्परिणाम आगे चलकर आपको ही भुगतना पड़ता है। इसलिए अपने भोजन की मात्रा और गुणवत्ता पर हमेशा नियंत्रण रखें। यही अच्छे स्वास्थ्य का रहस्य है। ■

भारत ने किया इंटरसेप्टर मिसाइल का सफलतापूर्वक प्रायोगिक परीक्षण

नई दिल्ली। भारत ने १० फरवरी को ओडिशा के तट से अपनी इंटरसेप्टर मिसाइल का सफल प्रायोगिक परीक्षण किया और द्विस्तरीय बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणाली विकसित करने की दिशा में एक अहम उपलब्धि प्राप्त की. इस इंटरसेप्टर को आईटीआर के अब्दुल कलाम द्वीप (व्हीलर द्वीप) से प्रक्षेपित किया गया. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंटरसेप्टर मिसाइल के सफल परीक्षण की प्रशंसा की.

रक्षा अनुसंधान विकास संगठन के एक अधिकारी ने कहा कि पीडीवी नामक यह अभियान पृथ्वी के वायुमंडल से ५० किमी ऊपर बाहरी वायुमंडल में स्थित लक्ष्यों के लिए है. उन्होंने कहा कि पीडीवी इंटरसेप्टर और दो चरणों वाली लक्ष्य मिसाइल का सफल परीक्षण हुआ. लक्ष्य को दरअसल २००० कि.मी से अधिक दूरी से आती शत्रु बैलिस्टिक मिसाइल के तौर पर विकसित किया. इसे बंगाल की खाड़ी में एक पोत से दागा गया.

एक स्वचालित अभियान में रडार आधारित प्रणाली ने शत्रु की बैलिस्टिक मिसाइल की पहचान कर ली. रडार से मिले आंकड़ों की मदद से कंप्यूटर नेटवर्क ने आ रही बैलिस्टिक मिसाइल का मार्ग पता लगा लिया. पीडीवी को पूरी तरह तैयार रखा गया था. कंप्यूटर सिस्टम से जरूरी निर्देश मिलते ही इसे छोड़ दिया गया.

यह अहम दिशासूचक प्रणालियों की मदद से अवरोधन बिंदु तक पहुंच गई.

इस सफल परीक्षण से भारत ने अपने रक्षा बेड़े को और मजबूत बनाया है। इस तकनीक से भारत दुश्मन के मिसाइल अटैक को आसानी से काउंटर कर सकेगा। यह ऑटोमेटिड ऑपरेशन, रडार आधारित ट्रैकिंग सिस्टम तकनीक से युक्त है, जो कंप्यूटर नेटवर्क की मदद से गणना करके बैलेस्टिक मिसाइल हमले का पता लगाकर उस पर जवाबी हमला करने में सक्षम है।

राशन का अनाज पाने के लिए आधार कार्ड अनिवार्य

नई दिल्ली। सरकार ने राशन दुकानों से सस्ता अनाज प्राप्त करने के लिए अब आधार को अनिवार्य कर दिया है। रसोई गैस पर सब्सिडी के लिए सरकार आधार को पहले ही अनिवार्य कर चुकी है। इस कदम का मकसद भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के साथ ही सब्सिडी का लाभ सही लाभार्थी तक पहुंचाना है।

सरकार ने कहा है कि जिन लोगों ने अब तक आधार हासिल नहीं किया है, वे ३० जून तक आधार कार्ड बनवाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि जिन लोगों के पास आधार कार्ड नहीं होगा, ३० जून के बाद उन्हें राशन दुकानों से सस्ता अनाज मिलेगा या नहीं। खाद्य सुरक्षा कानून के अन्तर्गत सरकार देश की ८० करोड़ आबादी को हर माह प्रति व्यक्ति ५ किलो अनाज १ से ३ रुपये किलो की दर पर उपलब्ध कराती है। खाद्य सुरक्षा कानून के तहत सरकार १.४ लाख करोड़ रुपये की सब्सिडी हर साल देती है।

८ फरवरी को जारी अधिसूचना के अनुसार राशन कार्ड धारकों को आधार नंबर देना होगा और सब्सिडी पाने के लिए उन्होंने आधार नंबर के द्वारा सत्यापन कराना होगा। एक अधिकारी ने बताया कि अब तक ७२ फीसदी राशन कार्ड आधार कार्ड से लिंक किए जा चुके हैं। देश भर में करीब २३ करोड़ राशन कार्ड हैं, जिनमें से १६.६२ करोड़ आधार कार्ड से लिंक हो चुके हैं। देश में ५.२७ लाख राशन दुकानें हैं। ■

(पृष्ठ १७ का शेष)

...बगर्‍यौ बसन्त है

हां, अब वैलेंटाइन डे आता है, पूरे गाजे-बाजे के साथ। बाजार के चक्कर में वसंत मात खा गया। वैलेंनटाइन डे के साथ बाजार है, क्रेता हैं, विक्रेता हैं, उन्मुक्तता है, विलासिता है, मादकता है। वसंत के नाम पर मुरझाए हुए चेहरों को वैलेंटाइन डे के नाम पर किस तरह चहकना है, यह बाजार ने सिखा दिया है। वैलेंटाइन डे ने प्रतिबद्धता तो जैसे खत्म ही कर दी है। इसको प्रपोज करो, उसको किस करो, फलां को टेडी बियर दो और वैलेंटाइन डे किसी और के साथ मनाओ। अगले साल वैलेंटाइन डे पर किसी दूसरे, तीसरे, चौथे को अपना वैलेंटाइन चुनने की अबाध स्वतंत्रता तो है ही। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

(पृष्ठ ३ का शेष)

धर्म पालन की वस्तु है

धर्म का उद्देश्य है आपके अहंकार का नाश करना ताकि मनुष्य स्वयं को उस परमसत्ता का एक अंश मान सके। उसके कर्ता भाव का नाश हो एवं समर्पण भाव का उदय हो। परंतु यदि वो किसी भी धार्मिक कृत्य को केवल प्रदर्शन के लिए करता है तो इससे उसका अहंकार और मजबूत होता है और जो भी कार्य आपके अहंकार को सुदृढ़ बनाता है वो धार्मिक कार्य तो कतई नहीं हो सकता। आवश्यकता मंदिर जाने की या मंदिर बनाने की नहीं है, आवश्यकता है अपने जीवन को मंदिर बनाने की। आप निराहार रहकर उपवास भले ही न करें, ईश्वर का उपवास (निकट वास) करें तो अधिक फलदायी होगा।

आप कितनी भी भगवत्कथा सुन लें परंतु यदि आप उसे अपने जीवन में गुनेंगे नहीं तो वह उसी प्रकार व्यर्थ हो जाएगी जैसे उल्टे घड़े पर वर्षा का जल। कितनी भी मूसलाधार वर्षा हो यदि घड़ा ही उल्टा रखा है तो वह बाहर से तो गीला हो जाएगा लेकिन उसके भीतर जल की एक बूंद भी प्रवेश नहीं करेगी एवं वह थोड़ी सी धूप निकलते ही सूख जाएगा। इसी प्रकार यदि आपने धर्म को केवल सुना, अपने जीवन में गुना नहीं, तो वह परिस्थितियों की एक किरण से ही हवा हो जाएगा।

इसलिए धर्म को चर्चा से हटाकर चर्या में लाइए। धर्म को केवल एक कृत्य न बनाकर अपनी जीवनशैली बनाइए। तभी आपके जीवन से अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह आदि अवगुणों का नाश होगा एवं दया, करूणा, त्याग इत्यादि गुणों का उदय होगा। जिस दिन धर्म इस संसार की जीवनशैली बन जाएगा उस दिन संसार वैसा ही हो जाएगा जैसा इसे होना चाहिए था। ■

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय मासिक

कार्यालय– १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)

मोबाइल : 09919997596; **ई-मेल** : jayvijaymail@gmail.com

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।